आज़ादी का अमृत महोत्सव

डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर

राजभाषा गृह पत्रिका

मंथन

अंक-5

जुलाई-दिसंबर,2021

डीएफसीसीआईएल कॉर्पोरेट कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विजेता प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते प्रबंध निदेशक

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विजेता प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते प्रबंध निदेशक

हिंदी पखवाड़ा के समापन पर अध्यक्षता करते प्रबंध निदेशक महोदय व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विजेता प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते निदेशक अवसंरचना

हरिवंश राय बच्चन जयंती कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. कुमुद शर्मा को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित करते कार्यकारी निदेशक

हरिवंश राय बच्चन जयंती कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. कुमुद शर्मा, कार्यकारी निदेशक श्री अजय कुमार व उप मुराधि श्री लवशुक्ला

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को शालीनता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

राजभाषा गृह पत्रिका 'मंथन' अंक - 5

प्रधान संरक्षक
श्री रविन्द्र कुमार जैन
प्रबंध निदेशक

मुख्य संरक्षक
श्री हरिमोहन गुप्ता
निदेशक अवसंरचना

संरक्षक
श्री सचिन्द्र मोहन शर्मा
मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
श्री लव शुक्ला
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
श्री के.पी.सत्यानंदन
सलाहकार/राजभाषा

संपादकीय सहयोग

- सुश्री अपर्णा त्रिपाठी
  महाप्रबंधक/वित्त
- श्री जगत सिंह नगरकोटी
  वरिष्ठ कार्यकारी /राजभाषा

(संपादक मंडल का लेखकों के विचारों / रचनाओं से सहमत होना आवश्यक नहीं है / प्रकाशित रचनाओं का पूर्णत: उत्तरदायित्व लेखक का होगा)

डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

पांचवा तल, सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन भवन परिसर, नई दिल्ली - 110001

फोन नं. 011-23454717,

फैक्स नं. 011-23454700

ई-मेल: jsnagarkoti@dfcc.co.in

क्र.सं.	विषय सूची	पृ.सं.
1	प्रबंध निदेशक का संदेश	4
2	निदेशक अवसंरचना का संदेश	5
3	संरक्षक का संदेश	6
4	प्रधान संपादक की कलम से	7
5	संपादकीय	8
6	अभियंता ही एक सपना	12-14
7	मैं मजदूर हूँ!	15
8	हिंदी मेरी शान- अंतर्मन	16
9	संरक्षा और सुरक्षा	17
10	अगर मैं आसमान होता	18
11	डिजीटल दुनिया	19-20
12	जिंदगी से यारी न तोड़ना कभी	21
13	सत्यनिष्ठा	22
14	आप हाथी नहीं इंसान हैं	23
15	मैं कौन हूँ -	24
16	मैं हवा हूँ	24
17	फौलादी इरादों वाली भारतीय वीरांगनाएं	25-28
18	दीपों का महत्व	29
19	जी हुज़ूरी! अंदाज ए बयां	30
20	डीएफसीसी में भूमि अधिग्रहण के प्रमुख बिंदु	31-32
21	कल - प्रेरणा	33
22	जीवन कर्म परिणाम	34-35
23	भारतीय रेल में राजभाषा कार्यान्वयन	36-37
24	विलुप्तप्राय प्रजाति...!!!	38
25	नारी शिक्षा	39
26	कोविड-19 से लड़े योग से	40-41
27	डीएफसीसीआईएल में राजभाषा से संबंधित लागू मूल प्रोत्साहन योजनाएं	42-43
28	हिंदी पखवाड़ा-2021 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं का परिणाम	44
29	सराहनीय एवं उल्लेखनीय कार्य करने वाले पुरस्कृत कर्मचारी	45
30	यदि इच्छा शक्ति प्रबल हो तो कोई बुरी आदत छोड़ सकते हैं।	48
31	ज्योतिष विज्ञान या फिर विश्वास ?	49-50

क्र.सं.	विषय सूची	पृ.सं.
32	पिता – देवेंद्र तंवर	51
33	मेरा गांव मेरा विकास	52
34	समय की सीख- क्यों न ऐसा होता	53
35	राष्ट्र निर्माण में युवाओ का योगदान	54-55
36	मेरी मां	56-57
37	व्यापार मेला	58
38	जिंदगी की कीमत - छोटी सी जिंदगी है	59
39	हिंदी डीएफसीसीआईएल और हम	60-61
40	धरती पर खतरे में है जीवन	62
41	परोपकार से किसी की जिंदगी बदलना	63-64
42	पिता- राहुल	64
43	मां और बेटी	65-66
44	प्रेम और सच्चाई की ताकत	67-68
45	आधिकारिक भाषा हिंदी के सफर पर एक नजर	69-70
46	प्रदूषण	71
47	कोराना काल में ऑनलाइन शिक्षा	72
48	जल है तो जीवन है	73
49	विश्व पटल पर हिंदी	74
50	पुस्तकालय का महत्व	75
51	दूषित पर्यावरण	76-77
52	मायके से ससुराल तक	78
53	एक कदम प्रोत्साहन की ओर	79
54	आत्मविश्वास	80
55	कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है	81
56	साहित्य समाज का दर्पण है	82
57	डीएफसीसीआईएल भारत के परिवहन का भविष्य	83-84
58	प्रकृति	85
59	शिष्टाचार- बातें दशानन की	86
60	सरल भाषा	87-88
61	नववर्ष का जश्न मनाएं आओ जीवन को खूबसूरत बनाएं	89-90
62	स्वयं पर आत्मविशवस की जीत	91
63	देश की अर्थव्ययवस्था में डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर की भूमिका	92-93

प्रबंध निदेशक का संदेश

मुझे यह जानकर अपार खुशी की अनुभूति हो रही है कि डीएफसीसीआईएल की राजभाषा गृह पत्रिका **'मंथन'** के पांचवें अंक का प्रकाशन यथा-समय किया जा रहा है। मेरा मानना है कि पत्रिका प्रकाशन से न केवल नई-नई प्रतिभाओं को अपनी रचनात्मकता सामने लाने का सुअवसर मिलता है बल्कि प्रकाशन से हिंदी का एक अनुकूल वातावरण भी सृजन करता है।

भारत का संविधान हमें हिंदी में कार्य करने के लिए संकल्पित करता है जिसे ध्यान में रखते हुए डीएफसीसी हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। प्रत्येक भारतीय का यह दायित्व है कि संविधान की अपेक्षाओं के अनुरूप वह इस भाषा के उत्तरोत्तर विकास और संवर्धन में अपना योगदान दे।

आशा करता हूँ कि यह पत्रिका डीएफसीसी की विभिन्न गतिविधियों एवं राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में निरंतर सफलता हासिल कर नया मुकाम स्थापित करेगी तथा इसमें प्रकाशित सामग्री अनेक महत्वपूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होगी। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इसके संपादक मंडल तथा अन्य लेखकों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं आपको और आपके परिवार को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ। मेरी कामना है कि वर्ष 2022 आपके व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ आपके कार्य क्षेत्र में भी उपलब्धियों से भरपूर रहे।

(आर.के.जैन)

निदेशक अवसंरचना का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि डीएफसीसीआईएल की राजभाषा गृह पत्रिका का 5वाँ अंक शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग बढ़ाने तथा कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। हम सभी जानते हैं कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान है, हमारी सांस्कृतिक समृद्धि की प्रतीक है। इसलिए हमें विश्व में अपनी संस्कृति की पहचान सुदृढ़ करने के लिए हिंदी भाषा के विकास के लिए कृतसंकल्प होना पड़ेगा। मेरा मानना है कि अपनी भाषा के प्रति प्रेम राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत करता है।

राजभाषा हिंदी को समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए आप सबका सक्रिय सहयोग वांछनीय है। मुझे विश्वास है कि गृह पत्रिका 'मंथन' का यह अंक हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित करेगा।

मैं **'मंथन'** पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ,

हरिमोहन

(हरिमोहन गुप्ता)

संरक्षक का संदेश

'मंथन' गृह पत्रिका के सह्रदय पाठकों, लेखकों और सभी हिंदी प्रेमियों को मेरा हार्दिक अभिनंदन !

किसी भी देश का गौरव उस देश की भाषा, साहित्य और संस्कृति होता है। कोई भाषा तभी समृद्ध बनती है जब वह साहित्यिक भाषा, सरोकार की भाषा बनती है और अधिक से अधिक लोग उसका निस्संकोच भाव से प्रयोग-व्यवहार करते हैं।

हमारे प्रबंध निदेशक महोदय के अत्यंत कुशल मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग, डीएफसीसी ने राजभाषा की गति को आगे बढ़ाया। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के कार्य को प्रोत्साहित करने एवं लेखन के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से विभागीय पत्रिकाओं के प्रकाशन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। निश्चित रूप से इन पत्रिकाओं में विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यकलापों की एक स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। विभिन्न विषयों पर हिंदी भाषा में लेखन को बढ़ाने के लिए विभागीय पत्रिकाओं का योगदान होता है। इससे संगठन के कार्मिकों की लेखन क्षमता में निखार आता है और उनके लेखन के प्रति आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

मुझे खुशी है कि 'मंथन' का प्रकाशन जब से शुरू हुआ है, सभी के सहयोग से इस पत्रिका के अंक के छमाही आधार पर नियमित रूप से निकल रहे हैं। हमारा उद्देश्य यही है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक कर्मचारी हिंदी से जुड़ें। राजभाषा हिंदी को समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए आप सबका सहयोक वांछनीय है।

डीएफसीसीआईएल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा आग्रह है कि वे अपने अनुभव एवं कार्यक्षेत्र के अनुसार पत्रिका के लिए भी अपना भरपूर योगदान दें ताकि इसमें अनेक विषयों को समाहित किया जा सके और यह पत्रिका अपना गौरवशाली स्थान बनाए रखने में सक्षम हो सकें।

'मंथन' पत्रिका के सभी सहृदय पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ,

(सचिंद्र मोहन शर्मा)

प्रधान संपादक की कलम से

डीएफसीसीआईएल राजभाषा पत्रिका **'मंथन'** का 5वाँ अंक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मानव संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण तथा इसकी विशिष्टता के संदर्भ में भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भाषा के माध्यम से साहित्य का निर्माण किया जाता है, जो सांस्कृतिक विकास का आधार है। जहाँ व्यक्ति का मानसिक विकास साहित्य से होता है, वहाँ उसके सांस्कृतिक विकास की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से प्रकट होती है। हम चाहे जितनी प्रगति कर लें, चाहे जितनी ऊँचाइयां नाप लें, तमाम सुखों की सामग्री जुटा लें, पर सामाजिक शांति, आत्मिक संतोष और सुखी जीवन के लिए हमें अच्छे साहित्य की आवश्यकता हमेशा ही रहेगी।

'मंथन' के इस अंक को अपने पाठकों के लिए रोचक, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक बनाने का हर संभव प्रयास किया गया है। हमारा उद्देश्य यही है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक लोग हिंदी से जुड़ें। सहृदय पाठकों से अनुरोध है कि इसमें प्रकाशित रचनाओं, लेखों, कहानियों तथा कविताओं के बारे में अपनी टिप्पणी और प्रतिक्रियाएँ हमें अवश्य भिजवाएँ। आपके उपयोगी सुझाव पत्रिका की गुणवत्ता सुधारने में कारगर साबित होंगे।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित,

लव शुक्ला

(लव शुक्ला)

संपादकीय

डीएफसीसीआईएल कार्पोरेट कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका **'मंथन'** का पाँचवाँ अंक आपको सौंपते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है।

किसी भी संस्था में पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पत्रिका प्रकाशन से सभी कार्मिकों को अपनी रचनात्मक क्षमता प्रकट करने का सशक्त मंच प्राप्त होता है।

साहित्य का शाब्दिक अर्थ होता है -**'हि-सहितम-साहित्यम्'** अर्थात् जो मानव जाति के लिए हितकर,सुखकर और श्रेयष्कर हो, उसे हम साहित्य की संज्ञा से विभूषित करते हैं। साहित्य वह उपहार है, जो जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शक का काम करता है। इसीलिए साहित्य को **'समाज का दर्पण'** कहा गया है। साहित्य की तेजस्विता हमारे निष्प्राण जीवन में बिजली की शक्ति संचालित कर कल्याण करती है। भाषा का समर्थ रूप वास्तविक प्रयोग में आने के बाद ही होता है। हिंदी भाषा के पास शब्दों का तो बहुत बड़ा खजाना है, किंतु यह खजाना उपयोगी तभी होगा जब शब्दकोशों में बंद न रहे और उसका प्रयोग प्रतिदिन के जीवन में हो।

'मंथन' के इस अंक में सम्मिलित अधिकांश रचनाएँ अवश्य ही आपके कोमल मन को स्पंदित करेगी। इस अंक में 'फौलादी इरादों वाली भारतीय वीरांगणाएँ' नामक लेख में रेल इंजनों के नामकरण की रोचक जानकारी, योग, ज्योतिष, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, नारी शिक्षा, राजभाषा, प्रदूषण, नववर्ष इत्यादि विषयों को शामिल कर इसे रोचक,ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक बनाने का हर संभव प्रयास किया गया है।

सहृदय पाठकों से अनुरोध है कि इसमें प्रकाशित रचनाओं, लेखों, कहानियों तथा कविताओं के बारे में अपनी टिप्पणी और प्रतिक्रियाएँ हमें अवश्य भिजवाएँ। आप सभी से आशा है कि भविष्य में भी इस पत्रिका को उच्चस्तरीय बनाने में अपने बहुमूल्य सुझाव देते रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

(के.पी.सत्यानंदन)

जुलाई 2021 से दिसबंर, 2021 छमाही में डीएफसीसीआईएल की प्रमुख गतिविधियां

दिनांक 26.12.2021 को माननीय रेल मंत्री श्री अश्वनी वैष्णव ने पूर्वी डीएफसी के प्रयागराज स्थित ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर (ओसीसी) का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने वहां मौजूद वरिष्ठ अधिकारियों से ट्रेनों के संचालन व अन्य गतिविधियों के संबंध में जानकारियां हासिल की।

न्यू डाबला यार्ड का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्वनी वैष्णव

संसदीय स्थायी समिति द्वारा दिनांक 07.09.2021 को पूर्वी डीएफसी की समीक्षा की गई

श्री राधा मोहन सिंह की अध्यक्षता में रेलवे की स्थायी समिति ने 07.09.2021 को प्रबंध निदेशक, डीएफसीसीआईएल और महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेलवे की उपस्थिति में वैशाली, बिहार में पूर्वी डीएफसी की प्रगति की समीक्षा की। डीएफसीसीआईएल द्वारा रेलवे अस्पताल कानपुर में प्रेशर स्विंग एब्जॉर्प्शन (पीएसए) सिस्टम पर आधारित 250 एलपीएम क्षमता का ऑक्सीजन प्लांट लगाया गया। इसे जीएमआर इंफ्रास्ट्रक्चर के सीएसआर फंड के तहत लगाया गया। इसका उद्घाटन महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे ने मुख्य महाप्रबंधक/प्रयागराज, डीएफसी और उत्तर मध्य रेलवे के अधिकारियों की उपस्थिति में 11.09.2021 को किया।

भाऊपर-डीडीयू खंड में चार्ज ट्रैक्शन सब स्टेशन

डीएफसीसीआईएल ने 14.10.2021 को 10 बिलियन सकल टन किमी. (जीटीकेए) का माल भाड़ा संचलन किया। डीएफसीसीआईएल ने यह उपलब्धि 10 महीने की अल्प अवधि में प्राप्त की। भाऊपुर – डीडीयू खंड में रसूलाबाद ट्रैक्शन सब- स्टेशन को ओपन एक्सेस के माध्यम से चार्ज किया जा रहा था, अब यह ओएचई को पॉवर सप्लाई करने के लिए तैयार हो गया है।

ट्रक ऑन ट्रेन (टीओटी) का ट्रायल रन

न्यू रेवाड़ी-न्यू पालनपुर के बीच ट्रक ऑन ट्रेन (टीओटी) सेवा का ट्रायल रन प्रारंभ किया गया। इससे समय, ईंधन और लागत की बचत होगी और ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन भी कम होगा।

रेवाड़ी-दादरी खंड पर वायडक्ट-92 पर गर्डर लांचिंग का कार्य प्रगति पर

प्रयागराज यमुना ब्रिज पर गर्डर लांचिग कार्य

अभियंता ही एक सपना

आकाश कुमार,
कार्यकारी सिविल,
मेरठ

यह कहानी एक गरीब परिवार से संबंधित विद्यार्थी (काल्पनिक नाम हर्ष) से जुड़ी है। हर्ष हमेशा से शिक्षा व ज्ञान से प्रभावित रहा है और उसका सपना भारतीय रेल में अभियंता बनने का होता है जिसे हर्ष कठिन परिश्रम व लगन के साथ पूरा करता है।

यह कहानी काल्पनिक सोच व कुछ सत्य आधारित तथ्यों का समायोजन है। लेखक द्वारा कहानी को रोमांचक बनाने हेतु मुख्यतः काल्पनिक सोच के साथ लिखा गया है। हर्ष गांव के सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय में कक्षा 10 का विद्यार्थी है। हर्ष के पारिवारिक हालात तंग होने के कारण उसके पास पढ़ाई का कोई विशेष साधन नहीं है और वह शिक्षा व ज्ञान के लिए पूर्णतः विद्यालय के शिक्षकों पर ही निर्भर रहता है। हर्ष एक होनहार विद्यार्थी है और वह शिक्षा का विशेष ध्यान रखता है। एक बार वह अपने पिता को साइकिल से रेलवे स्टेशन से लेने जाता है उस रोज काफी मौसम खराब रहता है। जैसे-तैसे वह रेलवे स्टेशन पहुंचता है और उस रेलगागाड़ी की जानकारी करता है जिससे उसके पिता लौट रहे होते हैं। स्टेशन पर क्लर्क हर्ष को बताता है कि वह रेलगाडी दो घंटे देरी से पहुंचेगी क्योंकि बारिश में अक्सर रेल गाड़ी को सिग्नल मिलने में दिक्कत होती है। गाड़ी दो घंटे देरी से पहुंचेगी। यह सुनकर हर्ष थोड़ा मायूस हो जाता है और वह रेलवे स्टेशन पर ही रेलगाड़ी का इंतजार करने के लिए स्टेशन मास्टर और अभियंता के कमरे के सामने बाहर सीट पर बैठ जाता है। इंतजार करते वक्त उसकी नजर अभियंता के कमरे पर पड़ती है और वह देखता है कि एक चपरासी तो बाहर खड़ा है तथा 4 -5 रेलकर्मी अभियंता की कुर्सी के सामने बैठकर काम कर रहे हैं लेकिन मुख्य कुर्सी खाली है। यह सब देखने के बाद हर्ष के मन में जिज्ञासा होती है कि मुख्य कुर्सी खाली क्यों है? इसके लिए हर्ष वहाँ खड़े चपरासी से बड़ी विनम्रता के साथ पूछता है श्रीमान, आप खड़े क्यों हैं? कमरे में एक कुर्सी खाली है आप उसे क्यों नहीं ले लेते? यह सुनकर चपरासी हंसता है और हर्ष को बताता है कि वह कुर्सी बड़े साहब (अभियंता) की है और उस पर बड़े साहब ही बैठते हैं। मैं बाहर खड़े होकर बड़े साहब (अभियंता) का इंतजार कर रहा हूँ जैसे ही बड़े साहब (अभियंता) आएंगे , मैं उनका सामान व बैग लेकर अलमारी में रखूँगा। चपरासी आगे कहता है कि कुर्सी पर बैठे रेलकर्मी साहब के नीचे काम करते हैं और बड़े साहब (अभियंता) ही यहाँ पर रेल मार्ग का निर्माण, रखरखाव तथा मरम्मत आदि काम का आदेश देते हैं। हर्ष, बड़े साहब (अभियंता) के बारे में सुनकर काफी प्रभावित होता है और भारतीय रेल में अभियंता बनने का सपना संजोता है और अपने मन में सोचता है कि अगर वह अभियंता बन सका तो वह अपने परिवार का आर्थिक रूप से सुधार अवश्य कर सकेगा। तभी कुछ समय बाद बड़े साहब (अभियंता) कार्यालय पहुँच जाते हैं, साहब को देखते ही जब चपरासी सलाम करता है और उनका सामान लेकर कमरे में लगी अलमारी

में रख देता है। हर्ष देखता है कि काम कर रहे सभी लोग अपनी कुर्सी से खड़े होकर बड़े साहब को नमस्ते करते हैं और बड़े साहब के बैठने के बाद बैठते हैं। यह सब देख के हर्ष इतना तो समझ जाता है कि अभियंता (बड़े साहब) एक बड़े अधिकारी है इसलिए सभी अभियंता को इतना सम्मान दे रहे हैं। यह सब देखने के बाद हर्ष का हृदय जिज्ञासा से भर जाता है और वह चपरासी के पास जाकर कहता है की उसे बड़े साहब से मिलना है और जानकारी लेनी है कि अभियंता कैसे बनते हैं , किंतु काम की व्यस्तता के कारण चपरासी साहब से मिलाने के लिए मना कर देता है । हर्ष चपरासी से पुनः अनुरोध करता है कि उसे बड़े साहब से मिलना है , इस पर चपरासी कहता है कि तुम कल आना। हर्ष मायूस होकर फिर वहीं बाहर बैठ जाता है और गाड़ी का इंतजार करने लगता है लेकिन हर्ष के मन में भारतीय रेल में अभियंता बनने का सपना घर कर चुका होता है। लगभग 2 घंटे बाद हर्ष को एक तेज रेलगाड़ी के हॉर्न की आवाज सुनाई देती है और वह समझ जाता है कि पिताजी स्टेशन पहुँच गए हैं। जैसे ही गाड़ी पहुंचती है, वह दूर से ही अपने पिता को देख लेता है और उनके पास जाकर प्रणाम करता है। दोनों साइकिल से घर की तरफ निकल जाते हैं। अब हर्ष के लिए रेलवे में अभियंता बनना एक सिर्फ सपना नहीं होता , वह उसकी सोच का केंद्र बन जाता है। यह सोचकर कि कल उसे बड़े साहब से मिलना है, वह बहुत उत्सुक रहता है। हौसला रख वो मंजर भी आएगा, आज सब बेरंग है लेकिन कल तू रंग से नहायेगा। हार कर न बैठ ओ मंजिल के साहिल, मंजिल भी खुद आएगी अगर तू निश्चय , परिश्रम और लगन को दिल में बैठ आएगा।। हर्ष अगली सुबह स्कूल के लिए निकलता है लेकिन वह स्कूल न जाकर बड़े साहब के कार्यालय में पहुँच जाता है और निश्चय करता है कि वह आज बड़े साहब से अपने सभी सवालों के जवाब पूछेगा। वह चपरासी से कहता है जैसा कि आपने कल आने के लिए कहा था, मैं आ गया हूँ अब मुझे बड़े साहब से मिलवाइए। इस बार चपरासी हर्ष से प्रभावित हो जाता है और बड़े साहब को जाकर सारी बातें बताता है। अभियंता (बड़े साहब) बड़े ही विनम्र

स्वभाव के व्यक्ति होते हैं तो वह चपरासी से हर्ष को अपने कमरे में बुला लेते हैं। हर्ष अभियंता को प्रणाम करता है तभी बड़े साहब हर्ष को कुर्सी पर बैठने के लिए कहते हैं। उत्साहित हर्ष अभियंता से एक- एक करके अपने सभी प्रश्न पूछता है और बड़े साहब भी उसके प्रश्नों का सरलता से जवाब देते हैं। अब अपने सभी सवालों के जवाब मिलने के बाद हर्ष को अभियंता बनने का मार्ग साफ दिखाई देने लगता है । चुकी अभियंता ने हर्ष को बताया था कि उसे अभियंता बनने के लिए एक तकनीकी डिग्री हासिल करनी होगी उसके पश्चात ही वह अभियंता बन सकता है। तकनीकी शिक्षा को लेकर वह थोड़ा असमंजस में पड़ जाता है क्योंकि वह जानता है कि उसकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है। हर्ष निर्णय लेता है कि आज शाम को वह अपने सपने के बारे में अपने पिता से बताएगा। शाम होते ही वह अपने पिता के पास जाता है और सब कुछ बता देता है। यह सुनने के बाद उसके पिता असमंजस में पड़ जाते हैं क्योंकि उनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति कमजोर हैं और वह कैसे अपने हर्ष को तकनीकी

शिक्षा दिला पाएगा? लेकिन कुछ देर सोचने के बाद हर्ष के पिता उसके अभियंता बनने के सपने को उड़ान दे देते हैं और कहते हैं कि तुम अपनी पढ़ाई अच्छे से करो मैं तुम्हारी तकनीकी शिक्षा के लिए आज से ही धन अर्जित व संचित करूँगा। यह सुनकर हर्ष बहुत खुश होता है और वह अपनी पढ़ाई बहुत मन से करने लगता है। हर्ष अपनी 10 वीं और 12 वीं की परीक्षा बहुत अच्छे अंक से उत्तीर्ण करता है और हर्ष की सफलता को देखकर उसके पिता को विश्वास हो जाता है कि एक दिन उसका बेटा अभियंता जरूर बनेगा। दो वर्ष के पश्चात् हर्ष के पिता उसकी तकनीकी शिक्षा के लिए पर्याप्त धन संचित कर लेते हैं और हर्ष अपनी तकनीकी शिक्षा के लिए शहर चला जाता है। चार वर्ष के पश्चात हर्ष अपनी तकनीकी शिक्षा पूर्ण करके अपने गांव को लौट आता है, उसकी इस कामयाबी को लेकर उसके परिवार में बहुत खुशी का माहौल रहता है। हर्ष अपने परिवार में बताता है कि वह अब अभियंता बनने की योग्यता हासिल कर चुका है और उसे अभियंता बनने के लिए सरकार द्वारा आयोजित परीक्षा पास करनी होगी।

पिता द्वारा संचित धन अब लगभग खत्म हो चुका होता है। लेकिन अचानक कुछ दिन बाद उसकी तबीयत बिगड़ जाती है अब परिवार को हर्ष के स्वास्थ्य की बहुत ज्यादा चिंता होने लगती है। हर्ष को अस्वस्थ देख उसके पिता अपने मित्र से कर्ज लेते हैं और हर्ष को एक शहर के अच्छे अस्पताल में भर्ती करा देते हैं जहाँ हर्ष के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाता है और वह कुछ ही दिन में स्वस्थ्य हो जाता है। स्वस्थ्य होने के पश्चात हर्ष पुनः अभियंता परीक्षा की तैयारी में लग जाता है और वह पूरे वर्ष कठिन मेहनत करता है परंतु अभियंता परीक्षा के पहले प्रयास में असफल हो जाता है। हर्ष के परिवार द्वारा कर्ज के पैसे नहीं चुकाए जाने के कारण अब तो कर्ज देने वाले लोग भी उन्हें बुरा भला कहने लगते हैं और अपने पैसे वापस मांगते हैं परंतु उनके परिवार में अभी वैसे ही हालात हैं और वह कर्ज चुकाने में असफल रहते हैं।

यह सब देख हर्ष बहुत दुखी होता है। इन सबसे ऊपर उठकर, हर्ष पुनः: अभियंता परीक्षा की तैयारी में लग जाता है और इस बार ठानता है कि अगर वह इस बार परीक्षा में असफल हुआ तो वह अपने परिवार का भरण - पोषण करेगा और उसके साथ - साथ ही अपनी अभियंता परीक्षा की तैयारी करेगा। लेकिन इस बार हर्ष अपनी मेहनत व लगन से हर कठिनाइयों को पार करते हुए अभियंता की परीक्षा देता है और इस बार वह सफल हो जाता है। परीक्षा में सफल होने का परिणाम देखकर हर्ष प्रसन्नता से झूम उठता है क्योंकि आज भारतीय रेल में उसका अभियंता बनने का सपना पूर्ण हो चुका है इसीलिए वह अपनी सफलता की खुशी सबसे पहले अपनी माँ के साथ बांटता है और यह सुनकर हर्ष की माँ की आंख भर आती है। मन ही मन बहुत मुस्कुराते हुए हर्ष की माँ यह खुशखबरी अपने परिवार के सभी सदस्यों में बांटती है। अब सब लोग हर्ष को बधाइयां देना शुरू करते हैं और जैसे ही हर्ष के पिता घर पहुंचते हैं तो हर्ष व पत्नी का चेहरा देखकर ही समझ जाते हैं कि हर्ष इस बार अभियंता की परीक्षा में सफल हो चुका है। हर्ष के पिता उसके लिए मिठाइयां लेकर आते हैं और सभी लोगों का मुँह मीठा कराते हैं और गर्व करते हैं अपने पुत्र और अपने उस निर्णय पर जो उन्होंने कठिन समय में लिया था। जिंदगी नहीं है आसान यहाँ , हर किसी की अपनी कुछ मंजिलें है। साहब सभी घिरे है एक तूफाँ में, छोटी - छोटी खुशियां और बेहिसाब मुश्किलें हैं।।

मैं मजदूर हूँ

विकास कलावत,
वरिष्ठ कार्यकारी,
सिगनल एवं दूरसंचार
न्यू इकदिल
टूंडला

मैं मजदूर हूँ।
शायद आप मुझे जानकर भी अनजान रखते होंगे, आपके जीवन की भागदौड़ में मेरी रुकी हुई गाड़ी आपको नजर नहीं आती होगी! पर मैं आपको बताना चाहता हूँ राष्ट्र निर्माण में जो नीव की ईट है वह मेरी ही रखी हुई है, फिर चाहे वो संसद हो या न्यायालय या वह हर एक इमारत जिसमें बैठकर आप तरक्की के बड़े-बड़े फैसले लेते हैं, वो बात अलग है कि मेरी तरक्की की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता ! देश का विकास जिस पटरी पर दौड़ रहा है फिर चाहे वो रेल हो या मेट्रो या चमचमाती सड़कें कहीं ना कहीं मैं भी इनमें भागीदार हूँ, यूं कहो तो मेरे भी इसमें शेयर हैं परंतु इनकी कीमत सबकी नजरों में कम हैं फिर भी मैं थकता नहीं हूँ क्योंकि मेरे परिवार की आशाएं मुझे बैठने नहीं देती।

सोचो यदि में थक जाऊं तो शायद मेरे विकास को बैठना पड़ जाए"

आपके सपनों के महल, घर की दीवारों मेरे पसीने से सींच कर मजबूत हुई हैं, चाहे बरसात हो या आंधी तूफान आपकी छत आपको हो सकता मेरे जीवन के कोहराम को याद न आने दे, फिर भी मैं फुटपाथ को ही अपना घर समझ कर खुश हो लेता हूँ लेकिन थक कर बैठता नहीं।

"मैडम छमा चाहता हूँ जो हीरा आपके गले में चमचमा रहा है ना उसकी खदानों में मेरे अंधकार की कहानी आपको शायद इस चमक मैं दिखाई ना दे।

" सोचा आपको बता दूँ कि जिंदगी के शतरंज में प्यादे ना हो तो राजा का कोई बजूद नहीं"

(धन्यवाद) एक मजदूर की कलम से....

" मजदूर दिवस या मजबूर दिवस"

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल ये भाषा विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी आ सकती है। -***मैथिलीशरण***

संतोष कुमार झा,
उप परियोजना
प्रबंधक, डीडीयू

हिंदी मेरी शान

भारत माँ की आन है हिन्दी, हम सबका पहचान है हिन्दी
तभी बढ़ेगा हिन्दुस्तान, जब हिन्दी का होगा सम्मान।
तुलसी की पवित्र माला सी, सबका साथ निभाती हिन्दी
अपने भाई -बहन सी भाषा को, अपने गले लगाती हिन्दी।
पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, सबका मेल करती हिन्दी
भारत माँ के स्वाभिमान को, जग में है फहराती हिन्दी।
माँ की ममता रही लुटाती, माँ का दूजा रूप है हिन्दी
भारत माँ का कीर्ति पताका, जग में है फहराती हिन्दी।
पठन-पाठन से बोल चाल तक, भूल चले हम उन्नत भाषा
पश्चिम के अनुरूप चलें हम, निज मन को देते झूठी दिलासा।
कर्त्तव्य जो भूले हैं हम, भूल हमें सुधारना होगा
पग-पग ठोकर खाती हिन्दी को, सम्मान सहित जिलाना होगा।

अंतर्मन

नैना तरसे, सावन बरसे।
चैन न मिले मुझे कहीं
हर घाव पर मरहम लगा
पर दिल का घाव भरा नहीं।।

तन और धन तो खूब मिला
पर मन की पीड़ा गई नहीं
विरह मिलन के इस चक्कर से
मैं अभी तक निकला नहीं ।।

कुछ सोया हुआ सा मुझ में
पर क्या है ये तो पता नहीं
मन की जंजीरों से जकड़ा ये
ना जाने कब से जगा नहीं

ये सोया हुआ कभी करवट भी लेता है।
तो खुद का होश रहता नहीं।।
झर-झर से बहते हैं आंसु
प्रायश्चित का कोई अवसर नहीं ।।

जितेंद्र अग्रवाल
उपमुख्य परियोजना प्रबंधक
/ वित्त, जयपुर

प्रदीप कुमार सिंह विष्ट ,
वरिष्ठ कार्यकारी,
संकेत एवं दूरसंचार , अंबाला

संरक्षा और सुरक्षा

छुक छुक करती अब रेल नहीं, धड़ धड़ भागती यह रेलगाड़ी है।
बढ़ानी सिर्फ रफ्तार नहीं, संरक्षा भी अब जिम्मेदारी है।

लगती जटिल, किन्तु सरल है ये संरक्षा,कितनी सुरक्षित ? कितनी संगठित ?
है अपनी संचालन व्यवस्था।

दिल से करो तो जटिल लगती ये संरक्षा, दिमाग का करो उपयोग तो बन जाती है,
सरल ये संरक्षा।

उच्च तकनीक और उचित मरम्मत का हो ज्ञान, हो सुरक्षा और संरक्षा की गहरी पहचान।
सुरक्षा और संरक्षा का नित रहे ध्यान, सुरक्षा और संरक्षा का करो निरंतर सम्मान।

इस बढ़ती रफ्तार में, संरक्षा जरूरत भी और जिम्मेदारी भी।
बढ़ती रफ्तार गाड़ी की, आवश्यकता एक जिम्मेवारी की।

लक्ष्य रफ्तार का मिला,संरक्षा का करो सम्मान,रफ्तार का रखो ध्यान,निज सुरक्षा का भी रहे संज्ञान।
अधूरा है हर वो ज्ञान, जो संरक्षा से अनजान, जो कर नही सकता संरक्षा और सुरक्षा का सम्मान।

काम में एकाग्रचित्त और सतर्कता की नसीहत, दिमागी संतुलन की अनिवार्यता, संरक्षा की जरूरत।
ध्यान की कमी बन सकती मुसीबत, स्वस्थ मन से करो संचालन और मरम्मत।

जान-माल सुरक्षित पहुंचे अपने घर, हर रेल संरक्षित पहुंचे लक्ष्य पर।
यही रहे कर्म हमारा, यही कहो लक्ष्य हमारा।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसे देश का बहुमत समझता है,
अत: यही भारत की राष्ट्रभाषा है-***डॉ. राजेन्द्र प्रसाद***

अगर मैं आसमान होता

सान्या सिंह, पुत्री
वीरेंद्र सिंह चौहान,
डीजीएम ट्रैफिक
टूंडला

अगर मैं आसमान होता,
भोर से सांझ तक
मेरे अनेकों रंग बदलते।
मैं जैसा भी हूँ, दुनिया वाले
मुझे वैसे ही गले लगाते।
सांसारिकता से ढलने की बातें न होती,
जब पूरी दुनिया मेरी ही होती।
रात के खामोंश लम्हों में मैं अकेला न होता,
चमचमाते सितारे मेरे संग आंख मिचोली खेलते।

अगर मैं आसमान होता,
फासलों से मेरी यूं बैरी न होती।
मेरे सभी मेध प्यार बरसाते,
बारिश की बूंदों से तुम्हारा नाम पुकारते।
मैं जैसा भी हूँ तुम मुझे
वैसे ही गले लगा लेते।
मेरी तस्वीर को अपने सुंदर रंगों से रंगोगे ना ?
इन अनेक बदलते रंगों का एक टुकड़ा
अपने दिल में रखोगे ना ?

अगर मैं आसमान होता,
अनंतकाल तक जीतित रहता।
भोर से सांझ तक
मेरे अनेकों रंग बदलते।
मैं जैसा भी हूँ, दुनिया वाले
मुझे वैसे ही गले लगाते।
मैं जैसा भी हूँ तुम मुझे
अपने मन में जगह दे देते,
मैं जैसा भी हूँ तुम मुझे
अपने दिल में जगह दे देते।

अंग्रेजी में स्वतंत्र भारत की गाड़ी चले, इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? - ***महात्मा गांधी***

डिजिटल दुनिया

विपुल एम दबे,
उप परियोजना प्रबंधक,
संकेत एवं दूरसंचार,
वडोदरा

विगत कई वर्षों से हमारी दुनिया नित्य नई तकनीक के साथ कायाकल्पित होती जा रही है। हमारे दैनिक जीवनशैली के वृहत हिस्से को डिजिटल तकनीकों ने अधिगृहित कर लिया है। वैश्विक जानकारों के अनुसार इंसानों की तकनीकी निर्भरता में दिलचस्पी इस डिजिटल स्पेस को और अधिक प्रसार देंगी।

मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे .. मैं तो तेरे पास में कबीरदास के इसी दोहे के तर्ज पर फ़र्ज़ कीजिये कि हमें किसी चीज़ की आवश्यकता हो और ऑटोमैटिक तरीके से वो पूरी हो जाए, तो जीवन कितना सुगम हो जाएगा ! उदाहरण के लिए, मान लो आपने आउटिंग का प्लान बनाया हो और नियत दिन व समय पर आपको पिक-अप करने रेंटल टैक्सी आपके दरवाजे पर आ खड़ी हो! कोई व्यक्ति अपने घर पहुंचने से पहले चाहता हो कि उसके लिविंग रूम का एयर कंडीशन ऑन हो जाए और घर पहुंचते ही उसे अपना कमरा एकदम कूल-कूल मिले, या फिर घर से बाहर निकल जाने पर याद आए कि ए.सी तो ऑन ही छुट गया है और वो रिमोटली ऑफ हो जाए तो सोचिये ऐसे में दिल को कितना सुकून मिलेगा ! अगर मैं कहूँ कि ये सभी अब कल्पनाएँ नहीं रहीं अपितु हकीक़त में ये संभव हैं तो आप आश्चर्यचकित न हों। 'आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है', इसी धारणा को मूर्त रूप देते हुए हमारे वैज्ञानिकों ने एक ऐसी अनोखी तकनीक का ईज़ाद किया है जिसका नाम है "इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IOT)"। **आई.ओ.टी की प्रासंगिकता** : रोजमर्रा की सरपट भागती जिंदगी में इंटरनेट, कंप्यूटर, स्मार्टफोन या अन्य स्मार्ट गैजेट्स के प्रभाव से शायद ही कोई मानव अछूता है। वर्ष 2011 में इंटरनेट से जुड़े उपकरणों की संख्या लगभग 12.5 बिलियन थी, जो 2021 तक बढ़कर 45 बिलियन होने की संभावना है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स तकनीक का आधार स्तंभ इंटरनेट है, जिसने पूरी दुनिया को एक छत के नीचे ला खड़ा किया है। नेटवर्किंग के विकास की सबसे बड़ी सफलता है यह इंटरनेट ऑफ थिंग्स। इसके जरिए अनेक प्रकार के प्रौद्योगिकियों और उपकरणों को एक साथ जोड़ा जा सकता है। इस तकनीक का इस्तेमाल कर सभी स्मार्ट गैजेट्स और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को इंटरनेट के माध्यम से आपस में कनेक्ट किया जाता है, जिससे एक दूसरे को डाटा भेज एवं प्राप्त किया जा सके। उन्हीं डाटा निर्देशों के आधार पर ये उपकरण कार्य करते हैं। इस टेक्नोलॉजी के द्वारा हमारे जीवन में काफी परिवर्तन हो सकते हैं, क्योंकि किसी भी एक डिवाइस या उपकरण को इंटरनेट के साथ लिंकअप करके अन्य उपकरणों से अपने स्वेच्छानुरूप कोई कार्य करवाया जा सकता है। जैसे कोई कार चालक यदि किसी प्राकृतिक आपदा वाले एरिया की तरफ बढ़ रहा हो तो कार में लगे सेंसर द्वारा पर्यावरण से एकत्रित आकड़ों के जरिए संबंधित मौसम विभाग उसे पहले ही चेतावनी जारी कर सकता है या उधर जाने से मना कर सकता है।अर्थात् इसके जरिए लोगों के रहन-सहन और जीवन स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी। इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स इंसानों की भौतिक दुनिया और डाटा की डिजिटल दुनिया के बीच का कनेक्शन है।

कोरोनाकाल में आई.ओ.टी का योगदान : कोविड -19 जैसी वैश्विक महामारी ने वर्तमान परिस्थिति को नरकीय बना दिया है। जीवन जीने की कला से लेकर जीवनयापन के परंपरागत तरीकों को इसने काफी हद तक बदल दिया है। ऐसे में जब चौतरफा अव्यवस्था का मंजर है, आई.ओ.टी तकनीक ने मझधार में किसी पतवार की तरह दुनिया को एक विकल्प दिया है। यदि हेल्थकेयर सेक्टर की चर्चा करें तो इस दौरान भारत में हेल्थकेयर 4.0 प्रोटोकॉल के 'कवच' प्रोग्राम के तहत दर्जनों स्टार्ट-अप कंपनी और इंस्टिट्यूट 'आत्म-निर्भर भारत' के सितारे बनें जिन्होंने इंटरनेट ऑफ़ मेडिकल थिंग्स/इंटरनेट ऑफ़ हेल्थकेयर थिंग्स तकनीक पर आधारित स्मार्ट स्टेथोस्कोप, थर्मल सेंसिंग डिवाइसेस, ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर, वेंटीलेटर सिस्टम, पोर्टेबल रेस्पिरेटरी एड्स, ICU मोनिटरिंग और अन्य जीवनरक्षी मेडिकल अप्लायेंस को न सिर्फ विकसित किया, अपितु उनका रियल टाइम यूज़ भी किया। ड्रोन सर्विलांस, टेली हेल्थ कंसल्टेशन, टेलीमेडिसिन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वर्चुअल हेल्थकेयर मैनेजमेंट ने कोविड 19 के दौरान हमारे मेडिकल सुविधाओं को घर-घर तक पहुँचाने का काम किया, अन्यथा इतनी विशाल जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना लगभग असंभव ही था। वर्ल्डवाइड रियल टाइम पेशेंट मेडिकल डाटा और रिसर्च एनालिसिस से संबंधित वैश्विक मेडिकल डाटा की साझेदारी में IOT ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया है। इस तरह रोबोट द्वारा सर्जरी का कार्य हो या चेन्नई के एक रेस्तरां में खाना परोसने वाली रोबोट वेट्रेस का आईडिया, आई.ओ.टी तकनीक ने हर एक क्षेत्र में अपनी संभावनाएं स्पष्ट कर दी हैं। अगर उद्योग जगत की बात करें तो मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट्स कोविड-19के कारण बुरी तरह प्रभावित हुए। ऐसे में टाटा मोटर्स ने सबसे पहले इंडस्ट्री 4.0 प्रोटोकॉल को अपनाते हुए टाटा एलेक्सी के साथ मिलकर आई.ओ.टी क्लाउड आधारित व्हीकल प्लेटफ़ॉर्म पर कार्य प्रारंभ किया और भारत की पहली IoT आधारित इलेक्ट्रिक एसयूवी 'टाटा नेक्सोन इवी' सीरिज को लांच किया। कामगारों की कमी के बावजूद इस तकनीक ने इंडस्ट्री को संजीवनी प्रदान किया और डिमांड-प्रोडक्शन अनुपात को संतुलित बनाए रखा। इस स्लोडाउन में भी आई.ओ.टी ने राजस्व सुधार में अहम योगदान दिया है।

निष्कर्ष : तकनीक ने हमें ब्रम्हांड का सैर कराया है। कई जटिल समस्यायों को पल भर में सुलझाया है। मानव जीवन को और अधिक आरामदेह, सहज और समयपरक बनाने के लिए नित नए आयाम गढ़े जा रहे हैं। ये अच्छा भी है, इंसान को हर दिन कुछ नया करते रहना चाहिए, कुछ नया सीखते रहना चाहिए। परंतु इन सब बातों में एक चीज़ और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि हम इस प्रकृति को, पर्यावरण को, अपनी आने वाली पीढ़ियों को कुछ ऐसा न सौंप जायें जो भविष्य में इंसानी सभ्यता के पतन का कारण बने। तकनीकों पर पूर्ण निर्भरता हमारी प्राकृतिक जीवनशैली को बर्बाद कर सकता है। अतः हमें मशीनों को अपना साथी बनाना है, उनकी गुलामी नहीं !

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' और 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' के मूल मंत्र को समझ के हमें निरंतर बढ़ते रहना है - एक खुशहाल डिजिटल दुनिया की ओर !!

जिदंगी से यारी ना तोड़ना कभी

जयसी जैन,
पुत्री जैनेंद्र कुमार वैध,
मुंबई दक्षिण

क्यों बैठे हो खामोश ?
समय नहीं भरता मन के हर घाव
दिल तोड़ दे भले वो, खुलके दर्द बया कर देना
रो लेना, चीख लेना तभी, पर ये दोस्त,
ज़िंदगी से यारी ना तोड़ना कभी

सच बताके उनकी नजर में कमज़ोर बन जाना तभी,
पर सच छुपाके मन में तनाव को ना जगह देना कभी
हौसले बिखरने लगे जब, तो बुने थे जो ख्वाब याद कर लेना तभी
ज़िंदगी से यारी ना तोड़ना कभी

ना सुने यार अगर तो थप्पड़ मारके सुना देना
पर ऐ दोस्त गम को अपने अंदर छुपाके ना रखना कभी
आशा खोने से पहले निराशा खो देना तभी
पर ये दोस्त, ज़िंदगी की लड़ाई ना हारना कभी

नहीं होता तनाव एक दिन के अंतर पर,
क्या रोया न होगा वो अकेलेपन में महीनों तक?
बंद कमरे में किताबों से दोस्ती की थी,
क्योंकि दोस्त तो थे पर दोस्ती कहा थीं ?

हां! आता है ऐसा समय, जब उजाला नजर नहीं आता है,
पर सुन तो सही, हर सवेरा रात के बाद ही आता है
मत खो हौसला, मत खो हिम्मत
पर ये दोस्त, ज़िंदगी से यारी ना तोड़ना कभी

सत्यनिष्ठा

रागनी कुमारी
पत्नी अरविंद कुमार,
उप परियोजना प्रबंधक,
विद्युत कोलकाता

ऑडिट करने जब निकलते हैं,
यूनिट-यूनिट सब घूम जाते हैं,
दफ्तर-दफ्तर का दौड़ लगाते हैं,
उनके कार्यों में अंतर पाते हैं,
नियम भी एक से कहां होते हैं,
अद्यतन उन्हें भी हम रखवाते हैं।

यूनिट वालों से जब मिलते हैं,
हिल-मिल खूब बातें करते हैं,
बातों से ही मंशा भाप लेते हैं,
पेंसिल से चिन्ह जब लगाते हैं,
और गलती प्रकाश में लाते हैं,
तो ऑडिट से वे तिलमिलाते हैं

दूरियां ऑडिटर से बढ़ाते हैं,
बुलाने पर भी वे मटियाते हैं,
सब कागज फाइल छिपाते हैं,
तब अनुभव अपना लगाते हैं,
उनसे फाइल हम निकलवाते हैं,
तब जाकर ऑडिट कर पाते हैं

डिस्कशन पर साहब बुलाते हैं
पहले देख हमें वो मुस्कराते हैं,
गर्मजोशी से वे हाथ मिलाते हैं
चाय-कॉफी के लिए फरमाते हैं
आपत्तियों को जब वे पढ़ते हैं
चेहरे पर तनाव झलकते हैं

मन में ऑडिट पर झुंझलाते हैं
जवाब देने से भी जी चुराते हैं
गलत स्टाफ को भी वो ठहराते हैं
गोलमोल जवाब देते हैं
प्रतिकूल हालात में हम झेलते हैं
तब ऑडिट संपन्न कर पाते हैं।

आप हाथी नहीं इंसान हैं

मधुलिका मिश्रा
पत्नी आनंद कुमार मिश्रा,
वरि. कार्य., सि. एवं दू.
धनबाद

राहुल अपने पिताजी के साथ जा रहा था। तभी उसने सड़क के किनारे बन्धे हाथियों को देखा और अचानक रुक गया। उसने देखा कि हथियों के अगले पैर में रस्सी बंधी हुई है। उसे इस बात का बड़ा अचरज हुआ कि हाथी जैसे विशालकाय जीव लोहे की जंजीरो की जगह बस एक छोटी सी रस्सी से बंधे हुए है !!! ये स्पष्ट था कि हाथी जब चाहते तब अपने बन्धन तोड़ कर कहीं भी जा सकते थे, पर किसी वजह से वो ऐसा नहीं कर रहे थे। उसने अपने पिताजी से पुछा कि भला ये हाथी किस प्रकार इतनी शान्ति से खड़े हैं। और भागने का प्रयास नहीं कर रहे है। तब पिताजी ने राहुल को समझाया, “इन हाथियों को

छोटे से ही इन रस्सियों से बांधा जाता है, उस समय इनके पास इतनी शक्ति नहीं होती कि इस बंधन को तोड़ सके, बार-बार प्रयास करने पर भी रस्सी ना तोड़ पाने के कारण उन्हें धीरे-धीरे यकीन होता जाता है कि वो इन रस्सियों नहीं तोड़ सकते और बड़े होने पर भी उनका यकीन बना रहता है इसलिए वो कभी इसे तोड़ने का प्रयास ही नहीं करते”।

राहुल आश्चर्य में पड़ गया कि ये ताकतवर जानवर सिर्फ इसलिए अपना बन्धन नहीं तोड़ सकते क्योंकि वो इस बात में यकिन करते है!!

इन हाथियों की तरह ही हममें से कितने लोग सिर्फ पहले मिली असफलता के कारण ये मान बैठते है कि अब हमसे ये काम हो ही नहीं सकता और अपनी ही बनायी हुई मानसिक जंजीरो में जकड़े-जकड़े पूरा जीवन गुजार देते है।

शिक्षा- याद रखिये असफलता जीवन का एक हिस्सा है और निरन्तर प्रयास करते रहने से सफलता मिलती, यदि आप भी ऐसे किसी बन्धन में बन्धे है जो आपको अपने सपने सच करने से रोक रहा था, तो उसे ताड़ डालिए, आप हाथी नहीं इंसान है।

हमारी राष्ट्रभाषा की गंगा में देशी और विदेशी शब्द मिलकर एक हो जाएंगे। *- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद*

नेहा सिंह, कनिष्ठ कार्यकारी
मानव संसाधन, कॉर्पोरेट
कार्यालय

मैं कौन हूँ

किया जब एक दिवस स्वयं की खोज,
मिला अपरिचित असहज संयोग,
एक अनुभूति, कल्पना से अलग
रही सिसक हुई मैं विकल।
जीवन मोह में जकड़ा बुझा सा
समझ रही स्वयं को सौम्य सी
रही उलझ माया की जंजीरों में
व्यथित, दुखित है डूबी अंधकारों में

ये मैं हूं या मैं नहीं हूँ
सोचा गलत नहीं हूँ तो सही भी नहीं हूँ
अक्स है ये दोहरे जीवन का
या प्रतिबिम्ब है मेरे मन का

अनबूझ पहेली हूँ मैं आज भी,
क्या बदल गई है मेरी पहचान भी,
शायद वास्तविक स्वरूप तो प्रतिबिंब ही दिखाता है
और चाहकर भी छूट नहीं पाता है।
मैं किसी भिक्षुक की क्रंदन हूँ
या रुक-रुक कर बरसता सावन हूँ
हर बदली हवा पर भी मैं मौन हूँ
अब भी नहीं समझ सकी कि मैं कौन हूँ।

अपर्णा त्रिपाठी,
महाप्रबंधक
वित्त, कॉर्पोरेट
कार्यालय

मैं हवा हूँ

मैं हवा हूँ
सबकी मित्र

पर किसी एक की नहीं
हूँ सर्वत्र
पर कहीं रुकती नहीं
सीमाएं नहीं देश या समाज की

मैं हल्का सा झोंका भी
झंझावत भी
सुगंध मिश्रित थपकी हूँ
तो कहीं तूफान भी

मैं शक्ति हूँ
मुझसे ऊर्जा बना लो
मैं प्राण हूँ
मुझसे जीवन बना लो

मुझे तुम पकड़ नहीं सकते
अपनी हरकतों से बाज आओ
भरोगे मुझमें धुआं या जहर
खो बैठोगे अपने ही प्राण,
अपनी ही ऊर्जा

हिंदी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि जो काम आज अंग्रेजी में किया जाता है वह आगे चलकर हिंदी से किया जाए - ***सुभाष चंद्र बोस***

फौलादी इरादों वाली भारतीय वीरांगनाएं

सचिंद्र मोहन शर्मा,
समूह महाप्रबंधक यांत्रिक
एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

एक आम रेलयात्री प्राय: गाड़ियों को खींचने वाले रेल इंजनों के नामों के बारे में ज्यादा नहीं सोचता है। उन्हें सरसरी तौर पर ही लेता है। गाड़ियों के नाम ही जुबान पर रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि स्टेशनों पर की जाने वाली उद्घोषणाओं की कोलाहल में और लोगों की आपा-धापी के बीच इन लौह अश्वों के नाम कहीं गुम हो जाते हैं। शेडों और विनिर्माणकर्ता यूनिट के अधिकारियों द्वारा रेल इंजनों के नामकरण में कई बार उनकी व्यक्तिगत पसंदगी, संरचनात्मक तथा प्रणालीगत दृष्टिकोण पर भारी पड़ जाती है। अधिकाशंत: इंजनों के नाम किसी अवसर या घटना के प्रतीक के रूप में रखे जाते हैं। डब्ल्यू डीपी 2 जिसे अब डब्ल्यू डीपीडी 3 कहा जाता है, का नाम पुष्पक रखा गया था। यह नाम इसके एरोडायनमिक प्रोफाइल आधारित स्पीड का प्रतीक था। वस्तुत: यह पहला ट्विन कैब डीजल लोकोमोटिव था।

फौलादी इरादो वाली भारतीय महिलाओं के नाम पर रेल इंजनों का नाम रखना एक नई पहल थी। भारत के स्वतंत्रता के लिए लाखों लोगों ने अपना खून-पसीना बहाया और देश के लिए सहर्ष बलिदान दिया। महिलाएं भी इस महान यज्ञ में अग्रणी पंक्ति पर खड़ी रही। वह भारतीय महिला ही थी जो लड़ाई के मौदान में घोड़े की पीठ पर बैठ, अपने नवजात शिशु को अपनी पीठ पर बांधे, हाथ में तलवार लिए दुश्मन से लौहा ले रही थी। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हैं। भारतीय रेलवे इन महान वीरांगनाओं को श्रद्धा सुमन अर्पित करती है जिन्होंने न केवल युद्ध में अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया बल्कि लोगों के हृदयों में स्वतंत्रता की ज्वाला को जलाए भी रखा। तुगलकाबाद लोको शेड ने रेल इंजनों का नाम इन वीर महिलाओं के नाम पर रखने की पहल की है और उन्होंने इन वीर महिलाओं के सम्मान में 'कलर स्कीम' के साथ उनकी पेंटिंग भी लगाई है।

अपनी मातृ भूमि के सम्मान की रक्षा के लिए उद्यत असाधारण धैर्य और दृढ़ निश्चय वाले ये आम महिला पुरूष कौन थे? खेद की बात है कि इनकी बहादुरी तथा साहस की कहानियों का उल्लेख इतिहास की पुस्तकों में कही नहीं हुआ है। चलो देखते है उनमें से कितने लोगों के बारे में हम जानते है और हम पहचानते हैं।

1. रानी अहिल्याबाई होल्कर: (31 मई, 1725 – 13 अगस्त, 1795) :

मराठा साम्राज्य की महान सरदार थी। इन्होंने अपने पति, ससुर और इकलौते पुत्र की मृत्यु के उपरांत 1767 में अपने राज्य की गद्दी संभाली और इंदौर की शासिका बनी। इन्होंने 1780 में वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण भी कराया।

"बाद के दिनों में ब्रह्मा ने एक महान
नारी की उत्पत्ति की,
वह उदार हृदया थी, सुंदर थी
उसे विधाता ने इस धरा पर शासन करने
के लिए पैदा किया था।"

"In later days from Brahma came,
To rule our land, a noble dame,
Kind was her heart and bright her
fame"

तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40200 डब्ल्यू डीपी4डी का नाम रानी अहिल्याबाई होल्कर रखा गया था। इस लोको को 40201 डब्ल्यू डीपी4डी के साथ जोडा जाता था ये पी4डी लोको के प्रथम मल्टीपल यूनिट थे और उनका उपयोग सुहेल देव एक्सप्रेस के कर्षण के लिए किया जाता था। ये 24 डिब्बों वाली गाड़ी को 120 किमी. प्रति घंटा के तीसरे गति स्तर में चलाने के लिए सक्षम थे। इनका उपयोग एमएयू-एएनवीटी एक्सप्रेस को चलाने में किया जाता था। अलग-अलग इंजनों द्वारा अजमेर शताब्दी, बीकानेर, सियालदाह, दूरन्तो, पदमावत एक्सप्रेस, श्रीगंगानगर इंटरसिटी आदि को भी चलाया गया है।

2.रानी अवंतीबाई : (16 अगस्त 1831- 20 मार्च 1858) :

ये रामगढ़ मध्य प्रदेश की महारानी थी और भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। इन्होंने ब्रिटिश राज के विरूद्ध आस-पास के राज्यों को एक किया तथा उन्हें चुनौती दी और कहा कि "यदि आप में अपने देश के प्रति कोई देशभक्ति या सम्मान का भाव हो तो हथियार उठाओ और लड़ो अन्यथा चूडियां पहनो और घर पर बैठे रहो।" ब्रिटिश राज के खिलाफ उनकी पहली लड़ाई गांव खेड़ी में हुई। उस युद्ध में उन्होंने अपनी बौद्धिक चतुराई, रण कौशल एवं अदम्य साहस का परिचय दिया और दुश्मनों को मात दी। परंतु वह युद्ध करते करते 1858 में मारी गई, अंग्रेज उन्हें जीवित पकड़ नहीं पाए। तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40201 डब्ल्यूडीपी4डी का नाम रानी अंवतीबाई रखा गया था। इस रेल इंजन को 40200 के साथ मल्टीपल यूनिट के रूप में चलाया जाता था।

3. रानी वेलू नचियार (3 जनवरी, 1730 – 25 दिसंबर, 1796):

ये शिवगंगा की महारानी थी और वीरामंगाई नाम से लोकिप्रय थीं। ये भारत की पहली ऐसी महरानी थी जो ईस्ट इंडिया कंपनी से लड़ीं और इन्होंने 1780 में अपने राज्य को उनसे वापस प्राप्त किया। रामनाथपुरम के एकलौती संतान होने के कारण उन्हें एक राज कुमार की तरह पाला गया था और उन्हें युद्ध के विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण दिया गया था। ये अंग्रेजी, फ्रेंच तमिल तथा उर्दू जैसी कई भाषाओं की ज्ञाता भी थी। इन्होंने शिवगंगा किला, जिसे अंग्रेजों ने उनके पति को मार कर अपने कब्जे में ले लिया था, को वापस प्राप्त करने के लिए वेष बदलकर विभिन्न युद्ध-चातुर्यो का इस्तेमाल किया और उसे वापस प्राप्त किया।

तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40050 डब्ल्यू डीपी 4डी का नाम वेलू नचियार रखा गया था।

4.रानी चेन्नम्मा (23 अक्टूबर, 1778 से 21 फरवरी, 1829):

ये कर्नाटक के किट्टूर की शासिका थी। इन्होंने अंग्रेजों की गोद अपहरण नीति के विरोध में अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद इन्होंने अपने दत्तक पुत्र को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। अंग्रेजों को यह स्वीकार नहीं था। यद्यपि पहली लड़ाई में इनकी जीत हुई परंतु अगली लड़ाई में उन्हें उनकी सेना ने धोखा दे दिया और वह पकड़ी गई। ये स्वतंत्रता आंदोलन की प्रतीक थी। जीवन के अंतिम वर्ष उन्होंने जेल में काटे। इनकी याद और सम्मान में प्रत्येक वर्ष 24 अक्टूबर को किट्टूर उत्सव मनाया जाता है। यहां तक कि बेंगलूरू और कोल्हापुर के बीच चलने वाली एक गाड़ी का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है। तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं 40070 डब्ल्यू डी पी 4 डी का नाम रानी चेन्नम रखा गया था।

5. रानी लक्ष्मीबाई (19 नवम्बर, 1828 – 18 जून, 1858) :

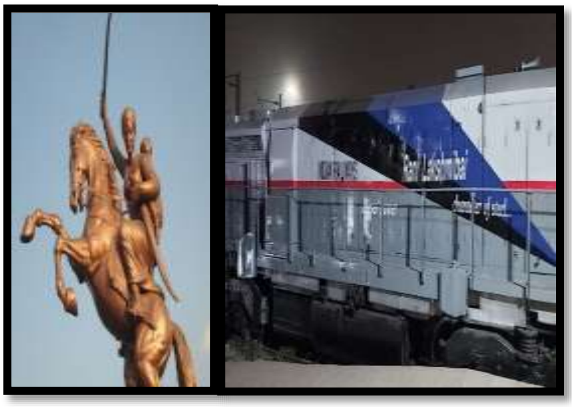

झांसी की रानी के नाम से प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई 1857 को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रतीक थी। इस संग्राम में 18 जून, 1858 को उन्हें वीरगति प्राप्त हुई। इस संग्राम में मारे गए वीर सेनानियों के सम्मान में इनके जन्म दिवस को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। इन्होंने अपने दत्तक पुत्र को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया था परंतु अंग्रेजों ने गोद अपहरण नीति को लागू कर दिया। तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40072 डब्ल्यू डी पी 4 डी का नाम रानी लक्ष्मी बाई रखा गया है।

6. झलकारी बाई (22 नवम्बर 1830 – 14 अप्रैल 1858) :

इन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा रानी लक्ष्मीबाई की सेना में सेवा की। जब यह स्पष्ट हो गया कि झांसी पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो जाएगा तो उन्होंने रानी का वेष धारण कर लिया और रानी को सुरक्षित निकल जाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इनकी बहादुरी के किस्से आम चर्चित है। कहा जाता है कि इन्होंने एक चीते को अपनी कुल्हाडी से मारा था, एक बाघ को भी लाठी से मारा था। तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40076 डब्ल्यू डी पी 4 डी का नाम झलकारी बाई के नाम पर रखा गया है।

7. उदा देवी

उदा देवी को 1857 की स्वतंत्रता संग्राम की "दलित वीरांगना" के रूप में जाना जाता है। इन्होंने 1857 में लखनऊ में सिकन्दरबाग के युद्ध में अवध की सेना की महिला बटालियन का नेतृत्व किया था। घात लगाकर युद्ध करने में उनको महारथ हासिल थी और कहा जाता है कि उन्होंने 30 से अधिक अंग्रेज सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया था। पीलीभीत के पारसी समुदाय उनकी वीरता का वर्णन करते हुए 16 नवंबर को उनकी शहीदी दिवस पर उनके सम्मान में लोक गीत है।

तुगलकाबाद (टीकेडी) डीजल शेड (डीएलएस) के लोको नं. 40080 डब्ल्यूडीपी4 का नाम उदा देवी रखा गया था। लोको नं. 40078 और 40080, जो दोनों मल्टीपल यूनिट के रूप में होटल लोड के लोकोमोटिव हैं, काठगोदाम शताब्दी एक्सप्रेस, अजमेर शताब्दी एक्सप्रेस और सदभावना एक्सप्रेस को कर्षित करनी थी । हमारी युवा पीढ़ी को इन वीरांगनाओं को याद रखना चाहिए जिन्होंने अपनी जान का बलिदान किया। इनके वीरतापूर्ण कार्यों तथा उपलब्धियों की जानकारी रखनी चाहिए। इतिहास की पुस्तकों में इन तपस्विनियों को स्थान दिया जाना चाहिए। जब हम स्वतंत्रता के 75वें वर्ष की ओर अग्रसर है यह वह समय है जब हम हजारों ऐसे अनाम, अनजान भारतीयों के संघर्ष, राष्ट्रभक्ति का स्मरण करें, नमन करे। जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अमूल्य सेवा की और उच्चतम बलिदान दिया वे दूर-दराज के गांवों के गरीब समुदाय के हो सकते हैं परंतु साम्राज्यवादी शासन की जंजीरों को तोड़ने की ललक उनमें किसी से कम न थी। अंग्रेजों के अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। भारतीयों के प्रति उनकी सोच उन लोगों को करारा जबाव है जो सोचते है कि भारत की संकल्पना अंग्रेजों की देन है। साथ ही हमें अपने कार्य क्षेत्र में उन लोगों को याद रखने व सराहने के नए तरीके अपनाने चाहिए जिससे कि हम उनके योगदान को भविष्य में भी याद रख सकें। ऐसे परंपरा सेना में पाई जाती है जहा हर रेजिमेंट अपने सैनिकों के बलिदान को याद रखती है और उनसे प्रेरित होती है।

दीपों का महत्व

संयम सिंघल पुत्र
श्री प्रदीप सिंघल,
सहायक प्रबंधक/मानव
संसाधन

हिंदु धर्म में प्रकाश यानी रोशनी की उपासना हमेशा सूर्य और अग्नि के रुप में होती है। सूर्य के बारे में कहां जाता है कि सभी प्राणियों को प्रकाश और जीवन देने के लिये सूर्य की उत्पति ईश्वर के दक्षिण नेत्र से हुई है। प्रत्येक संप्रदाय में रोशनी और ज्योति का अपना महत्व है लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद जब भगवान राम अयोध्या लौटे तो उस दिन कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि ही थी सभी अयोध्या वासियों ने दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। इसी दिन से दीपावली पर दीप जलाने की परम्परा चली आ रही है। दीपक और इसकी ज्योति जीवन के समान ही ज्वलंत है। पृथ्वी,आकाश, अग्नि, जल, वायु इन सभी पाँचों तत्वों से दीपक बन प्रकाशित होता है। दीपक जलाने से वातावरण शुद्ध होता है। सरसों के तेल से दीपक जलाने से वातावरण में मौजूद विषैले कीटाणुओं का नाश होता है।

दीपावली पर हम अपने घरों को दीपक से सजाते हैं। दीपक का प्रकाश हिंदू परंपरा में प्रार्थना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह पवित्रता अच्छाई - सौभाग्य और शक्ति का प्रतीक है। रोशनी का यह त्योहार अमावस्या की कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन आता है। यह त्योहार प्रकाश की उपस्थिति का अर्थ है अंधेरा और बुरी ताकतें मौजूद नहीं हैं। ऐसा माना जाता है कि बुरी आत्माएं और शक्तियां अपनी शक्ति अंधेरे में प्राप्त करती हैं और प्रकाश न होने पर आक्रामक हो जाती हैं। इसलिए उन बुरी शक्तियों को कमजोर करने के लिए घर के कोने-कोने में दीपक जलाए जाते हैं। ताकि हम उन बुरी आत्माएं और बुरी शक्तियों को कमजोर कर सके दीपक मनुष्य के मन में उत्पन्न हो रही लालच, ईर्ष्या, घृणा, वासना आदि की गंदगी को दूर करता है। दीए में कपास (रुई) मनुष्य की आत्मा का प्रतीक है। यदि आप साफ मन से दीपक में तेल और कपास जलाते हैं तो दीपक प्रकाश प्रदान करता है और मन में उत्पन हो रहे लालची और भौतिकवाद विचारों से छुटकारा मिलता है और यह हमें सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त करता है, ज्ञान के मार्ग पर ले जाता है और ईश्वर से जोड़ता है। बिना शर्त प्यार करना और दूसरों की सेवा करना सीखता है। भारतीय परंपरा के अनुसार, अश्विन पूर्णिमा पर, जो दिवाली से 15 दिन पहले पूर्णिमा का दिन होता है, ऐसा माना जाता है कि इस दिन दीये खरीदने चाहिए। दीयों को तब तक पानी में भिगो दें जब तक कि वे संतृप्त न हो जाएं और फिर उन दीयों को दिवाली पूजा रखना चाहिये तथा जब हम पृथ्वी पर दीप प्रज्वलित करते है तो दीपक से जो प्रकाश निकलता है तो उससे सारे ब्रह्मांड की अलोकिक शक्तियाँ प्रचुर मात्रा में पुरी दुनिया मे उत्पन्न होती है जो समाज में शांति, सद्भाव और भाईचारे को बढ़ावा देने के साथ-साथ हमारे दिलों और दिमागों को भी रोशन करती है।

आधुनिक दुनिया में दीपावली न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में भारतीयों द्वारा समान उत्सव की भावना के साथ मनाई जाती है। यह भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने में मदद करता है क्योंकि यह लोगों को एक साथ आने और उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना त्योहार मनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। तो आइये हम प्रण ले कि हम भी दीपावली के दीपक के समान अपना जीवन दूसरों के जीवन में उजियारा भरने के कार्य में लगा देंगे और राष्ट्र को एक नया आयाम प्रदान करेंगे।

आदित्य सौरभ,
कार्यकारी परि.एवं व्य.वि.,
कॉर्पो. कार्या.

जी हुजूरी!

अगर जीना है तो दिल खोलकर करो जी हुजूरी,
जी हुजूर ! हर कदम पर यह है बेहद जरूरी

दिन रात कहो दिन को रात और रात को दिन,
अब बादलों से पूछना भी हर चाँद की मजबूरी !

निखरती नहीं चाँदनी आजकल खुले आसमां पर,
जी हुजूर ! यहां नजरें मिलाते ही बढ़ रही है दूरी

पलकें उठी रहें या झुकी, अब फर्क ही क्या रहा,
कहाँ दिखाई देती है चेहरे पर किसी की बेकसूरी!

लूट लेते हैं लोग यहाँ तो बुलाकर एक दूसरे को,
जी हुजूर ! मेहनत की कहाँ, किसे मिलती है मजदूरी?

हर किसी को बढ़ना यहाँ है लाठी ही पकड़कर,
जवानी में ही बुढ़ापे की क्या ! गजब सी सुरूरी

सुन, जी ले जवानी अपनी मुस्कराकर मेरी तरह,
जी हुजूर ! दिन रात करना, जी हुजूरी ! जी हुजूरी !

सुशील शैली,
कार्यकारी परि.एवं
व्य.वि. कॉर्पो. कार्या.

अंदाज-ए-बयां

गमों को दिल में छुपाएं तो कैसे
क्या- क्या हम पे गुजरी बताएं तो कैसे..

अदब से सिर झुकाएं तो हो बदगुमानी
आईना अब उन्हें हम दिखाएं तो कैसे..

फर्जों के कर्जों में बीत रहीं जिंदगानी
कोई कीमत हमारी लगाए तो कैसे..

हमने उनको अपना सदा ही खुदा माना
हम हैं बावफा उनको समझाएं तो कैसे..

बज्म ने जब उनकी रूसवा किया था मुझको
लौट कर जाने का हौसला लाएं तो कैसे..

बदतमीजियों की हद से गुजरते गए वो
उनको अब सलीका सिखाएं तो कैसे..

फितरत है गुल की,तो बस महकना
खार से दामन को बचाएं तो कैसे..

हंस के कहना है अंदाज ऐ बयां शैली
हम अब किसी को रुलाएं तो कैसे..

डीएफसीसी में भूमि अधिग्रहण के प्रमुख बिंदु

विजय कुमार तिवारी,
कनिष्ठ प्रबंधक, सेमू,
कॉर्पोरेट कार्यालय

परियोजना के लिए पुनर्वास और पुनः स्थापना (Rehabilitation and Resettlement) के सामान्य सिद्धांत

* परियोजना से प्रभावित व्यक्ति / परिवार (पीएपीज/पीएएफस) को उपाधिकारी, गैर उपाधिकारी, कीओस्क, वेंडर्स आदि में कोटीकृत किया जायेगा।

* विभिन्न श्रेणियों के पीएपीज के लिए मौलिक पात्रता (एंटाइटलमेंट मैट्रिक्स) के अनुसार क्षतिपूर्ति और सहायता दी जाएगी।

* पीएपीज का जीवन स्तर सुधारने के लिए परियोजना लागत पर सहायता दी जाएगी।

* मौलिक पात्रता (एंटाइटलमेंट मैट्रिक्स) के अनुसार असुरक्षित पीएपीज को पुनर्वास और पुनः स्थापना के लिए अतिरिक्त सहायता दी जाएगी।

* पीएपीज अपनी खोई हुई संपत्ति के लिए क्षतिपूर्ति, स्थानापन्न लागत पर प्राप्त करेंगे।

* अंतिम तारीख की समाप्ति के बाद यदि कोई परियोजना क्षेत्र में आता है तो वह सहायता का हकदार नहीं है।

*परियोजना का अलग पुनः स्थापना बजट होगा।

* पुनर्वास और पुनः स्थापना नीति, न्यूनीकरण उपाय, पुनः स्थापना योजना तैयारी और कार्यान्वयन से सम्बंधित समस्त प्रकार की सूचना पीएपीज सहित सभी स्टेक होल्डरों को दी जाएगी।

* अर्थपूर्ण भागीदारी के लिए परियोजना के विभिन्न स्तरों पर स्टेक होल्डरों के साथ लोक परामर्श बैठक आयोजित की जाएगी।

* झगड़ो के शीघ्र निपटान के लिए उपयुक्त शिकायत निपटान तंत्र स्थापित किया जायेगा।

* स्टेक होल्डरों और पीएपीज के साथ हुई बातचीत को दर्ज किया जाएगा। यह सुनिश्चित किया जायेगा कि अर्थपूर्ण पुनर्वास और पुनः स्थापना योजना के दौरान भी जारी रहेगी।

* अंतिम तारीख की समाप्ति के बाद उपाधिधारक/टेनेन्सी की स्थिति में किसी परिवर्तन पर विचार नहीं किया जाएगा।

क्षतिपूर्ति, सहायता और पुनर्वास के लिए पात्रता

* पात्रता के लिए अंतिम तारीख वह तारीख है जिस पर प्रभावित क्षेत्र में वैध मालिकों और गैर उपाधि धारकों के लिए आरएए 2008 की धारा 20 क के अंतर्गत निर्धारित अधिसूचना के अनुसार अधिसूचना जारी की जाती है।

* पीएपीज की विभिन्न श्रेणियों की पात्रता मौलिक पात्रता (एंटाइटलमेंट मैट्रिक्स) के अनुसार होगी।

* पात्रता की इकाई परिवार होगी।

* उपाधिधारक पीएपीज सहायता के साथ-साथ क्षतिपूर्ति के लिए भी पात्र होगा।

* गैर उपाधिधारक पीएपीज उनके द्वारा प्रयोग में लाई जा रही भूमि की क्षतिपूर्ति के लिए पात्र नहीं होगा फिर भी भूमि पर किए गए निवेश जैसे ढांचों और अन्य सम्पत्तियों के स्थानापन्न कीमत

के अनुसार क्षतिपूर्ति मिलेगी । वे पुनः स्थापना नीति और मौलिक पात्रता (एंटाइटलमेंट मैट्रिक्स) के अनुसार आर एवं आर सहायता के लिए भी पात्र होंगे।

* गणना के दौरान न गिने गए पीएपीज के मामले में प्रभावित क्षेत्र में अंतिम तारीख से पहले उसकी उपस्थिति को कोई साक्ष्य सिद्ध करता है तो शिकायत निपटान समिति द्वारा उचित सत्यापन के बाद उसे पीएपीज की सूची में शामिल कर लिया जाएगा।

* असुरक्षित समूहों के पीएपीज मौलिक पात्रता (एंटाइटलमेंट मैट्रिक्स) में निर्दिष्ट अतिरिक्त सहायता के लिए पात्र होंगे।

* पीएपीज ढहाई गई सामग्री के अवशेष को बिना किसी लागत के परियोजना गतिविधियों में बिना किसी देरी के ले जा सकेगा।

* बेदखली के लिए यदि कोई नोटिस किसी व्यक्ति /परिवार को अंतिम तारीख से पहले दिया गया है और मामला न्यायालय में लंबित है तो ऐसी स्थिति में पीएपीज की पात्रता न्यायालय द्वारा निर्धारित क़ानूनी स्थिति के अनुसार की जाएगी और आर आर पी के प्रावधानों के अनुसार पीएपीज क्षतिपूर्ति / सहायता हेतु पात्र होगा।

हिंदी प्रचार का कार्य देश भक्ति का कार्य है। -*गंगा शंकर सिंह*

सचिन बहल, संयुक्त
महाप्रबंधक, वित्त,
कॉर्पोरेट कार्यालय

कल

आज कल का जमाना है,
हर व्यक्ति कल का दिवाना है।
वह भी कल था, जब का मानव
इस कल से अनजान-सा था।
सृष्टि का तब मानव पर,
एक अनोखा राज-सा था।
उसने जो दिया, वही उसने खाया
सृष्टि ने जो पहनाया, उससे ढांकी अपनी काया।।

तब फिर वह कल आया,
मानव ने इस कल को जाया
सृष्टि ने तब राज गंवाया
इस कल ने सब कुछ हथियाया
इस कल ने अपना रंग दिखलाया।
मानव राज आने से पहले
कल ने अपना राज फैलाया।।

आज समय कुछ ऐसा आया
मानव कार्य क्षीण हो बैठा
बुद्धिमान बुद्धि हीन हो बैठा।
काश कि कल कुछ ऐसा आए
कल मानव से हाथ मिलाए।
सृष्टि को उसकी पहचान लौटाए
कल मानव का वरदान बन जाए।।

आसिफ आलम,
कार्यकारी / कॉर्पोरेट समन्वय,
कॉर्पोरेट कार्यालय

प्रेरणा

कदम-कदम संघर्ष है अपना मोह तोड़ता चल
बढ़ कर आगे इस गगन से कहीं तू अपने मधुबन में निकल
ये जो अफसोस है आंखों में उसको धुंए में उड़ाता चल...

कोशिश कर एक बार फिर हवा में लहराता चल
इस निराशा को अपनी आशा की डगर तू बनाकर आगे निकल
कदम-कदम संघर्ष है अपना मोह तोड़ता चल

भूत से लम्हे चुरा कर भविष्य को परे हटा कर
तू अपने वर्तमान में ही कुछ कर गुजर
तुझमें भी बहुत कुछ कर गुजरने का हुनर है..

तू बस अपने संघर्षों की सीढ़ियां बनाकर आगे निकल
तू हर दिन बस एक कदम आगे बढ़ाता चल
अपने समय के साथ कदम से कदम मिलाता चल
तू अपनी धरा को आसमां से मिलाता चल
अपने संघर्षों से भविष्य के अंधियारे में दीपक जलाता चल

हिंदी हमारी राजभाषा है। इसका अध्ययन करने व इसका अनुपालन करने से हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए- ***सरदार बल्लभभाई पटेल***

जीवन कर्म परिणाम

योगेंद्र कुमार त्यागी,
महाप्रबंधक / भूमि एवं जनशिकायत

यह घटना बड़ी दुर्घटना है जो भुलाए नहीं भूलती। यह घटना है लंदन की रहने वाली 15 वर्षीय जूली की। जिसका एक बड़ा भाई 21 वर्षीय ग्राहम थी जो एक सैनिक था। उसने जूलों के पास एक पत्र लिखा कि वह और उसका दोस्त इस बार घर आ रहे हैं तुम अकेले परेशान तो नहीं होती " क्योकि जूली के माता-पिता उससे दूर रहते थे। अंत: निश्चित दिन को ग्राहम वह उसका दोस्त डेविड 21 वर्षीय तीखे नाक, नख्स, नीली आंखों वाला तथा लंबा कद का प्रभावशाली व्यक्ति था। जूली ने खुश होकर तरह-तरह के पकवान बनाए। वह बहुत खुश थी। डेविड को देखकर जूली दोस्त बनाना चाहती थी। शीघ्र ही लगभग एक सप्ताह के बाद डेविड अपने घर चला गया तथा वहां से सैनिक शिक्षा के लिए थाईलैंड चला गया। लगभग छह माह बाद जूली के पास एक पत्र डेविड के पास से आया जिसमें लिखा था कि वह थाईलैंड में सैनिक शिक्षा ग्रहण कर रहा है। इस पर जूली ने भी पत्र का जबाव दिया। इस प्रकार दोनों के मध्य न टूटने वाला पत्रों का क्रम स्थापित हो गया। डेविड जब छुट्टी पर आया तो जूली के पास भी गया तथा जूली को घर चलने का निमत्रंण दिया। जूली तो जैसे मानो उस दिन की राह देख रही थी। अत: वह खुशी-खुशी डेविड के (

साथ चली गई लेकिन वहां जाकर वह अहम उसने देखा कि डेविड एक बड़े रईस घर का इकलौता पुत्र है। घर की गाड़ी नौकर, चाकर, बड़ा सा बँगला सभी कुछ था अत: जूली डेविड के माता-पिता से रुक-रुककर मिल रही थी। लेकिन डेविड की मां ने जूली को काफी देर तक गले से लगाए रखा तथा अच्छे उपहार दिए, गार्डन घुमाया अत: डेविड के माता पिता ने जूली की आंखो पर बिठा दिया।

अगले ही दिन डेविड जूली के पास आया और कहा कि मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ इसलिए मैं तुम्हें मणि (हीरे) की अंगूठी लाया हूँ क्या तुम मेरे से शादी करोगी। जूली ने खुशी-खुशी डेविड से हां कह दी। फिर क्या था अगले ही दिन डेविड के माता-पिता जूली के माता-पिता से बातचीत करने के लिए आ गए। शादी की तैयारियां चलने लगीं। रिस्पेशन कार्ड बंट चुके थे। तैयारियां होने लगी। मात्र 15 दिन बाद शादी थी। अचानक डेविड का पत्र आया कि वह शादी नहीं कर सकता क्योंकि थाईलैंड में जब वह रहता था तो एक औरत से संबंध हो गया था अब उसके पेट में मेरा बच्चा है। हालात शादी न करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। जूली के ऊपर मानो बिजली गिर गई वह उदास रहने लगी। उसकी सारी आशाएं निराशाओं में बदल गई। लगभग छह माह डेविड ने जूली के घर फोन किया लेकिन जूली के मां-बाप ने बताया कि

वह परेशान है वह नहीं मिल सकती अत: तुम फोन मत किया करो। बात सुनकर डेविड सकपकाया तथा वह एक दिन उसके घर के दरवाजे पर पहुंचा। कांपते हाथों से घंटी बजाई, दरवाजा जूली ने खोला। डेविड को खड़ा देखकर उसे सपना सा दिखाई दिया लेकिन जज़्बात कर काबू पाकर जूली ने अंदर आने के लिए कहा। डेविड को कॉफी बनाकर पिलाई तथा दोनों खूब मिलकर रोए। डेविड ने कहा कि मेरी पत्नी व बच्चा डिलीवरी के वक्त ही न बच सके अत: मैं तुमसे शादी करना चाहूता हूँ। डेविड की बात अच्छी तरह सुनकर जूली ने विचार किया कि यह व्यक्ति दोबारा भी छोड़कर जा सकता है कुछ और भी हो सकता है आदि के परिणाम स्वरूप जूली ने कहा अब कुछ नहीं हो सकता खेल खत्म हुए काफी देर हो गई तथा साफ इंकार कर दिया। बेचारा डेविड मायूस होकर जूली के घर से चला तथा शराब की दुकान में घुस गया तथा देर रात तक पीता रहा। रात में जूली के घर फोन आया दूसरी ओर से पुलिस की आवाज थी कि डेविड की एक वाहन दुर्घटना में मौत हो गई। जूली के नाम वह एक पर्ची छोड़ गया जिस पर लिखा था मेरे पापों की सज़ा देने के अधिकार किसी को नहीं हैं यदि है तो तुम्हें हैं मैंने तुमसे प्यार किया है और

आज भी करता हूँ।

हिंदी एक जानदार भाषा है वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा-***जवाहर लाल नेहरू***

भारतीय रेल में राजभाषा कार्यान्वयन

के.पी. सत्यानंदन,
सलाहकार, राजभाषा,
कॉर्पोरेट कार्यालय

राष्ट्र की मुख्य धमनी भारतीय रेल हमारे देश के सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा संगठन है। देश को एक कोने से दूसरे कोने तक जोड़ने का सबसे लोकप्रिय माध्यम भारतीय रेल ही है। व्यापार, वाणिज्य और जन संपर्क की दृष्टि से रेलों पर हिंदी का प्रयोग ईस्ट इण्डिया कंपनी के जमाने में ही शुरू हो गया था जब रोजगार से संबंधित कई नियम पुस्तकें हिंदी में छाप दी गयी थीं और यात्री टिकटों में भी हिंदी का प्रयोग होता था। उन दिनों कोई संवैधानिक बाध्यता नहीं थी जिसके कारण हिंदी का प्रयोग हो रहा था बल्कि इसके पीछे विशुद्ध व्यापार की भावना थी और घनिष्ठ जन संपर्क के लिए हिंदी का प्रयोग आवश्यक था।

भाषा में मानव को बांधने की अपूर्व शक्ति है। हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। बहु भाषा-भाषियों को रेल में सफ़र के दौरान एकसूत्र में पिरोने वाली संपर्क भाषा हिंदी ही है। ये लोग चाहे विशुद्ध हिंदी न जानते हो, व्याकरण की भूलें करते हो, पर बोलते हिंदी ही हैं और उसी में अपना भाव व्यक्त करते और समझते हैं।

भारतीय रेल ने राजभाषा हिंदी का काम बढ़ाने के लिए बहुत-सारे विषयों में पहल की है। चाहे पुरस्कार की नई योजनाएं शुरू करने की बात हो या रेल कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए विभागीय कक्षाएं चलाने की अथवा हिंदी के काम का व्यावहारिक प्रशिक्षण देने की, या राजभाषा में कार्य करने के लिए सहायक साहित्य सुलभ कराने की, हर दिशा में उन संभावनाओं का पता लगाने की कोशिश की है, जिनसे हिंदी को सद्भाव, प्रेरणा,प्रोत्साहन और प्रेम के वातावरण में आगे बढ़ाने में मदद मिले। हिंदी में कार्य करने के लिए अधिकारियों /कर्मचारियों को शब्दकोश, रेल शब्दावली, पॉकट बुक, हिंदी डायरी,पारिभाषिक शब्दावली आदि पर्याप्त मात्रा में मुहैया कराए गए हैं। रेलों के क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों में सभी विषयों पर सामान्यतः हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण दिए जाते हैं और चाहे तकनीकी या गैर तकनीकी, सभी विषयों की पाठ्य सामग्री की उपलब्धता हिंदी में भी सुनिश्चित कराई जाती हैं।

हिंदी दिवस के दिन 14 सितंबर को बड़े-बड़े शहरों के स्टेशन परिसरों में राजभाषा प्रदर्शनी लगाने की परंपरा है जिसका मुंबई जैसे शहरों में लाखों यात्री अवलोकन करते हैं। इस प्रदर्शनी में रेलवे में हिंदी में हो रहे विशेष कार्यों के प्रदर्शन के साथ, हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के जीवनवृत्त के साथ छायाचित्र, सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी, रेल पर बनी हिंदी फिल्मों से संबधित जानकारी, रेल अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लिखित पुस्तकें आदि की प्रदर्शनी लगाई जाती हैं। रेलों द्वारा राजभाषा से संबंधित कई डॉक्युमेंटरी फिल्में भी बनवाई गई हैं जिन्हें 'रेलवे राजभाषा फिल्म' के नाम से सर्च करेगें तो यूट्यूब में देख सकते हैं।

रेल मंत्रालय की ओर से अखिल रेल स्तर पर प्रति वर्ष हिंदी की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। सरकारी कार्य से दौरे पर जाने वाले प्रत्येक रेल अधिकारी को अपने विभागीय निरीक्षण के साथ राजभाषा की प्रगति का भी जायजा लेने के नियम है. महाप्रबंधक/मंडल रेल प्रबंधक अपने वार्षिक निरीक्षण के दौरान संबंधित कार्यालय की हिंदी की प्रगति का निरीक्षण भी अवश्य करते हैं। भारतीय रेल में 1000 से अधिक निशुल्क हिंदी पुस्तकालय हैं तथा अधिकांश पुस्तकालयों के नामकरण भी प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकारों के नाम

पर रखे गए है। पुस्तकालयों में हिंदी की स्तरीय पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाओं की खरीदी के लिए पर्याप्त निधि भी उपलब्ध कराई जाती हैं। नागपुर जैसे कई मंडल कार्यालयों में हिंदी की डिजिटल पुस्तकालय भी हैं। आम जनता का सबसे अधिक संबंध रेल परिसरों में लगे नियम व सूचना फलक, आरक्षण फार्म, आरक्षण चार्ट, आरक्षित एवं अनारक्षित टिकट से होता है। इस दिशा में रेलवे पर जो कार्य हुआ है, वह प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। स्टेशनों के सूचनापट्ट, नामबैज, गाड़ियों के नाम आदि द्विभाषी/त्रिभाषी होते हैं। रेलवे स्टेशनों में सभी उद्घोषणाएं हिंदी में भी अनिवार्य रूप से की जाती हैं। डिजिटल बोर्डों में भी हिंदी सुनिश्चित की जाती है। रेलगाड़ियों के नामकरण अनिवार्य रूप से भारतीय भाषाओं के शब्द रखे जाते हैं, जैसे राजधानी, शताब्दी, तेजस, गतिमान, दुरंतो, महामना, तुलसी, गीतांजलि, पुष्पक आदि। अग्रिम पंक्ति में कार्यरत हिंदीतर भाषी रेलकर्मियों के लिए ग्राहकों के साथ संपर्क हेतु हिंदी वार्तालाप प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है। विभिन्न नगरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्ष रेलवे के महाप्रबंधक या मंडल रेल प्रबंधक है।

रेलवे की तरफ से गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लागू की गई पुरस्कार योजनाओं के अतिरिक्त बहुत सारी आकर्षक पुरस्कार योजनाएँ लागू की गई हैं। 'रेल मंत्री राजभाषा स्वर्ण पदक', जो कि भारत सरकार के सचिव/अपर सचिव स्तर के उच्चाधिकारियों और 'रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक' संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारियों को प्रदान किए जाते हैं। उच्चाधिकारियों को राजभाषा कार्य के लिए सम्मानित करने की इस प्रकार की योजना शायद ही अन्य मंत्रालयों में लागू हो। अन्य पुरस्कार योजनाओं में 'रेलमंत्री राजभाषा शील्ड/ट्राफी योजना',सामूहिक पुरस्कार योजना, रेलकर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा और अभिरुचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी में कथा साहित्य के लिए 'मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार योजना' और काव्य लेखन के लिए 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना', रेलवे के कार्य-संचालन एवं प्रबंधन विषय पर हिंदी में तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन के लिए 'लाल बहादुरशास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना', रेल पर्यटन को बढ़ाने के लिए आम भारतीयों के लिए ' रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार योजना' आदि कुछ प्रमुख पुरस्कार योजनाएं इसमें शामिल हैं।

रेल मंत्रालय द्वारा 'रेलराभाषा' नाम का एक 'एप' भी लॉच किया गया है, जहाँ राजभाषा विषयों से संबंधित तमाम जानकारियाँ एक जगह प्राप्त होती है।

रेल मंत्रालय की मासिक पत्रिका 'भारतीय रेल' की लाख से अधिक प्रतियाँ छपती है। रेलवे बोर्ड की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका ' रेल राजभाषा' भी पाठकों के बीच लोकप्रिय पत्रिका है। क्षेत्रीय रेल एवं मंडल कार्यालयों से हिंदी की गृह पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। राजभाषा के प्रशंसनीय योगदान के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से रेल मंत्रालय को लगातार गौरवपूर्ण 'कीर्ति पुरस्कार'/ 'राजभाषा शील्ड' प्राप्त होना भी कम महत्व की उपलब्धि नहीं है। इस वर्ष भी 14 सितंबर को रेल मंत्रालय को कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस प्रकार भारतीय रेल द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सफलता से निभाई जा रही है जो कि प्रशंसनीय है एवं दूसरे मंत्रालयों/ विभागों के लिए अनुकरणीय है।

विलुप्तप्राय प्रजाति...!!!

आदित्य अवस्थी,
प्रबंधक (सतर्कता),
कॉर्पो. कार्या.

विलुप्त होने वाली प्रजातियों में,
जुड़ने वाला है, एक नया नाम।
सबके 'सहयोग' से,
जल्द होने वाला है, उसका काम तमाम।।

"फुटपाथ", जी हां,
फुटपाथ, जल्द ही 'विलुप्त' होने वालें हैं।
उसके बाद, ये केवल,
किस्से कहानियों में ही दिखने वालें हैं।।

फुटपाथ, फिर कभी,
नहीं हो पाएंगे प्रकट।
इन पर फिर जारी किया जाएगा,
एक स्मृति डाक टिकट।।

कहते है गरीब की जोरू,
होती है, सबकी भाभी।
बेचारे 'फुटपाथ' के साथ भी,
यही है लाचारी।।

मकान, दुकान,
व्यापारी और अधिकारी।
इन सबके सहयोग से
फुटपाथ की दुर्दशा है जारी।।

अवैध कब्जों से,
फुटपाथ का घुट रहा है दम।
इन पर हो रहा अत्याचार,
नहीं हो रहा कम।।

फुटपाथ हैं गायब,
पर मरम्मत व सुंदरता पर करोड़ों का खर्चा।
जनता की कमाई की बंदर बाट,
फिर भी नहीं कोई चर्चा।।

फुटपाथ का दोहन करने वाले तो,
है हीं धूर्त और बेशर्म।
इस पर कार्यवाही करने वाले भी,
बेच चुके हैं, अपना राजधर्म।।

फुटपाथ की दुर्दशा पर,
चारों ओर है, सन्नाटा।
इसकी मलाई को सभी ने,
आपस में थोड़ा थोड़ा है, बांटा।।

सोशल मीडिया पर चोंचलें करने वालें,
क्या, उठायेंगें ये कार्यभार?
फुटपाथ की दुर्दशा दिखाकर,
करवाएंगें इनका पुनरुद्धार?

फुटपाथ, धीरे धीरे,
'श्री' से 'स्वर्गीय' होता जा रहा है।
इसीलिए पैदल यात्रियों का जीना भी,
दिन प्रतिदिन दूभर होता जा रहा है।।

देश की बातों में,
क्या देशवासियों की बात भी होगी?
पैदल चलने वालों की
जान की भी कोई चिंता होगी?

क्या अहिल्या की तरह,
फुटपाथ पर भी श्रीराम की नजरें इनायत होंगी?
आखिर, 'ज़मीन' पर चलने वालों
की भी कुछ कद्र होगी?

याद रखो! फुटपाथ पर चलने वाला निरीह प्राणी,
जिस दिन जाग जाएगा ।
उसके हक़ का शोषण करने वालें,
सभी गिद्धों को पसीना आ जाएगा ।।

नारी शिक्षा

विवेक कुमार,
कार्यकारी / सिविल,
सीसी , कॉर्पोरेट
कार्यालय

शिक्षा किसी भी मनुष्य के विकास का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। परंतु दुर्भाग्य से काफी लंबे समय तक महिलाओं को शिक्षा जैसे मौलिक अधिकार से वंचित रखा गया। आज भी भारत में व अन्य पिछड़े देशों में महिलाओं की शिक्षा पर पर्याप्त कार्य नहीं हो पाया है। हमारी पितृसत्तात्मक समाज इसी बुनियाद पे टिकी है के महिलाएं पढ़-लिख नहीं सकती एवं उनके जीवन के भी मुख्य फैसले घर के पुरूष ही लेते हैं।

भारत में महिलाओं की एक समरूप श्रेणी नहीं है और उनकी शिक्षा यात्रा सामाजिक-धार्मिक संदर्भ से आकर लेती है। भारतीय समाज का सामाजिक – सांस्कृतिक परिवेश एक महिला के जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव डालता है। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन, भारत सरकार के अनुसार महिला साक्षरता दर 70.3% है जबकि पुरुषों में 84.7% है। यदि सिर्फ साक्षर होने में इतनी असमानता है तो माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा अर्जित करना एक लड़की के लिए कितना मुश्किल होगा इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है। लड़कियों की शिक्षा से व्यक्ति और देश दोनों लाभान्वित होते हैं। बेहतर शिक्षित महिलाओं को पोषण और स्वास्थ्य देखभाल के बारे में अधिक जानकारी होती है, कम बच्चे होते है, बाद की उम्र में शादी करते हैं, उनके बच्चे आमतौर पर स्वस्थ्य होते हैं। उनका औपचारिक श्रम बाजार में भाग लेने और उच्च आय अर्जित करने की अधिक संभावना होती है।

हाल के वर्षों में समाज और आम जन की सोच में सकारात्मक परिवर्तन की वजह से, अब बेटियों को भी पढ़ने-लिखने का अवसर अधिक मिलने लगा है। यह बदलाव ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि भारत अपनी आधी आबादी को भी अपने विकास का हकदार बनाए। नारी शिक्षा के लिए हमारी सरकार ने अनेक योजनाएं चलाई हैं, जिनका असर अब हमें अपने समाज में दिखने लगा है। शैक्षणिक एवं वित्तीय सहायता मिलने से एवं समाज के प्रोत्साहन से ही इस दिशा में सुधार की शुरुआत हुई है। इसके अलावा हमें शिक्षण संस्थानों एवं अन्य सभी स्थानों पर लड़कियों के लिए सुरक्षित माहौल प्रदान करना होगा और इसमें पुरुषों को आगे आना होगा।

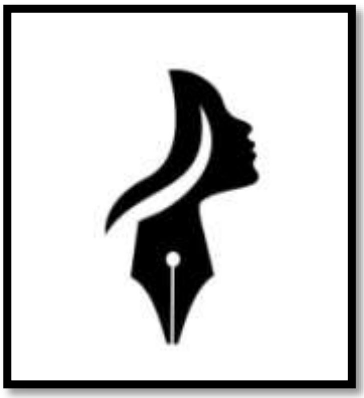

निष्कर्ष के तौर पर हम इतना कह सकते हैं कि आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तब आप एक आदमी को ही शिक्षित करते हैं, लेकिन जब आप एक औरत को शिक्षित करते हैं तब आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।

देश को एक सूत्र में पिरोनेवाली भाषा हिंदी ही हो सकती है। - ***लाल बहादुर शास्त्री***

कोविड-19 से लड़ें योग से

मो. अमीर अहमद,
कॉर्पो. कार्या.

कोविड-19 महामारी ने संक्रमण के लक्षणों को दूर करने के लिए सीमित स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं और सिद्ध चिकित्सा उपचार के मामले में दुनिया भर में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के लिए एक बड़ी चुनौती पेश की है। जब से कोविड-19 महामारी में बदल गया है तब से स्वास्थ्य दुनिया के लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गया है। बड़ी संख्या में लोग कोविड-19 वायरस की चपेट में आ गए हैं और दो साल से भी कम समय में सैकड़ों हजारों लोगों ने दम तोड़ दिया है। इसलिए, अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण और मजबूत प्रतिरक्षा और प्रतिरोध पैदा करने के लिए लोग तरह-तरह के तरीके अपनाते रहे हैं।

योग एक अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित विद्या है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने पर केंद्रित है। यह एक कला है और स्वस्थ जीवन का विज्ञान है। योग एक पूर्ण सामंजस्य की ओर ले जाता है योग का उपयोग सदियों से शरीर को संपूर्ण रूप से फिट और ठीक रखने के लिए किया जाता रहा है। हालांकि, योग के लाभ केवल तनाव से राहत और मानसिक स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं हैं। यदि ठीक से अभ्यास किया जाए, तो योग आपके शरीर को रिचार्ज कर सकता है, विषाक्त पदार्थों, नकारात्मक ऊर्जा से छुटकारा दिला सकता है और आपके महत्वपूर्ण अंगों को अच्छी तरह से काम करने का सामर्थ्य रखता है।

कुछ योग मुद्राएं प्रतिरक्षा प्रणाली को समर्थन, संतुलन और बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं। यह ऑक्सीडेटिव तनाव से लड़ने में भी मदद कर सकता है जो स्वस्थ कोशिकाओं के लिए खतरा पैदा करता है। योग आपके दिमाग और शरीर के लिए बहुत अधिक स्वास्थ्य और समर्थन प्रदान करता है,

- योग शक्ति, संतुलन और लचीलेपन में सुधार करता है।
- योग पीठ दर्द से राहत दिलाने में मदद करता है।
- योग गठिया के लक्षणों को कम कर सकता है।
- योग से दिल की सेहत को फायदा होता है।
- योग आपको आराम देता है, जिससे आपको बेहतर नींद लेने में मदद मिलती है।
- योग आपको तनाव को प्रबंधित करने में मदद करता है।
- योग बेहतर आत्म-देखभाल को बढ़ावा देता है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्वीटर एकाउंट से योग के एनिमेटिड वीडियोज शेयर कर लोगों को लॉकडाउन के बीच फिट रहने के लिए योग करने की सलाह दी थी। मन की बात कार्यक्रम के दौरान जब एक व्यक्ति ने पूछा कि फिटनेस कैसे दुरुस्त रखा जाए तो प्रधानमंत्री ने अपने फिटनेस का राज योग को ही बताया। योग के नियमित अभ्यास से आप कई रोगों से बचे रह सकते हैं। इतना ही नहीं योग कोरोनावायरस के संक्रमण से भी आपको बचाए रख सकता है, क्योंकि योग करने से इम्यूनिटी बूस्ट होती है। एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि योग करने से आप तनाव और अवसाद से बचे रह सकते हैं। यह अध्ययन ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं ने किया है। उनका कहना है कि कोरोनावायरस महामारी में यदि खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखना है, तो नियमित रूप से योग करना चाहिए।

बाबा रामदेव ने ऐसे खास तीन प्राणायाम के नाम बताए हैं जिसे करने से कोरोना वायरस की चपेट में आने से बचा जा सकता है। हमने

इसके बारे में जब डॉक्टरों और वैज्ञानिकों के द्वारा किए गए अध्ययन को पढ़ा तो यह काफी हद तक सही प्रतीत हुआ।

नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन)National Center for Biotechnology Information (NCBI) के द्वारा किए गए एक विस्तृत शोध में यह बताया गया कि प्राणायाम के जरिए इम्यून सिस्टम को मजबूत किया जा सकता है। यही वजह है कि बाबा रामदेव के द्वारा सुझाए गए तीन प्राणायाम आपकी इम्युनिटी को मजबूत बनाकर आपको कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाए रखने में मदद करेंगे।

1. **कपालभाति** कपालभाति एक प्रचलित प्राणायाम है। इस प्राणायाम को करने की प्रक्रिया में सांस लेते हैं और छोड़ते हैं। रोजाना करीब पांच मिनट तक इस प्रणायाम को करने से आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होगी और आप किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचे रहेंगे।
2. **अनुलोम विलोम** अनुलोम विलोम से आपको सामान्य रूप से होने वाली सर्दी खांसी और जुकाम तक नहीं होती है। दरअसल अनुलोम विलोम प्रणायाम को करने से श्वसन क्रिया बेहतर हो जाती है। इसके अलावा डॉक्टरी रिसर्च के मुताबिक यह भी बताया जा चुका है कि इससे आपके शरीर की इम्युनिटी काफी मजबूत होती है।

3. **भस्त्रिका प्राणायाम**

भस्त्रिका प्राणायाम के जरिए भी आप कोरोना वायरस से संक्रमित होने से बचे रहेंगे। भस्त्रिका प्राणायाम को करने से शरीर की कोशिकाएं स्वस्थ बनी रहती हैं और श्वसन क्रिया से जुड़ी कोई भी बीमारी आपको नहीं होगी। साथ ही साथ आपकी इम्युनिटी भी मजबूत रहेगी। इसके कारण आप कोरोना वायरस के संक्रमण से बचे रहेंगे। यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ ऑस्ट्रेलिया और यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स की एक मेडिकल शोधकर्ताओं की टीम ने यह अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि योग करने से मानसिक सेहत बेहतर होती है। खासकर, उन लोगों में जो किसी घटना के कारण तनाव में हों या फिर बेचैनी, सिजोफ्रेनिया, शराब की लत और बाइपोलर डिसऑर्डर के शिकार हैं, उनमें योग के सकारात्मक फायदे देखे गए।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि योग एक चमत्कार है इसको अपनाकर हम स्वयं को स्वस्थ्य रख सकते हैं परंतु योग की एक शर्त है कि यह सही ज्ञान एवं सही तरीके से किया जाना चाहिए तभी योग का पूर्ण लाभ मिल सकताहै।

जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं है, आपका कोई राष्ट्र भी नहीं है। -*प्रेमचंद*

डीएफसीसीआईएल में राजभाषा से संबंधित लागू मूल प्रोत्साहन योजनाएं

क्र.सं.	मद	मासिक / तिमाही / छमाही / वार्षिक	पुरस्कार राशि
1.	हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन योजना	तिमाही (न्यूनतम 30 हिंदी पत्र)	1000/-
2.	हिंदी में सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना	तिमाही (विविध प्रकार के कार्य)	1500/-
3.	हिंदी में सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना	वार्षिक (विविध प्रकार के कार्य)	2000/-
4.	राजभाषा गृह पत्रिका 'मंथन'	छमाही लेख, तकनीकी लेख, कहानी, नाटक	2500/-
		कविता, चुटकुले आदि	1500-
5.	हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कार योजना (क) हिंदी निबंध (ख) हिंदी शब्द ज्ञान एवं टिप्पण (ग) हिंदी टाइपिंग (घ) हिंदी प्रश्न मंच	(प्रत्येक प्रतियोगिता हेतु प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं 02 प्रेरणा पुरस्कार)	4000 / 3000 / 2000 / 1000/ 1000/ (हिंदी प्रश्न मंच के प्रत्येक प्रश्न के सही सही उत्तर हेतु रु 50/-

<u>नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) :</u> भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रत्येक शहर में राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन एवं कार्यान्वयन हेतु एक समिति का गठन किया गया है। उस शहर में कार्यरत सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालय, उपक्रम, बैंक, बीमा कंपनी व अन्य स्वायत्त संस्थान इस समिति के सदस्य होते हैं तथा इस समिति के संचालन की जिम्मेदारी शहर के सबसे बड़े अधिकारी / कार्यालय की होती है, जिसे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संचालन का उत्तरदायित्व दिया जाता है।

नराकास मुख्य रूप से गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा राजभाषा संबंधित जारी दिशा निर्देशों, मार्गदर्शनों के प्रभावी कार्यान्वयन एवं अनुपालन का एक मंच होता है। वर्ष की प्रत्येक छमाही में निर्धारित कलैंडर तिथियों के अनुसार बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संबंधी प्रगति की समीक्षा प्रस्तुत की जाती है तथा सर्वश्रेष्ठ, उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय कार्य करने वाले कार्यालय / संस्था को गृह मंत्रालय के अधिकारियों एवं नराकास के अध्यक्ष तथा सचिव द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता है। इस बैठक में सभी सदस्य

कार्यालयों के मध्य समन्वय स्थापित करते हुए राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए उन्हें क्रियान्वित किया जाता है। नराकास की बैठकों में सभी संस्थाओं / कार्यालयों के प्रशासनिक प्रमुख राजभाषा अधिकारियों के साथ सहभागिता सुनिश्चित करते हैं।

राजभाषा विभाग की प्रमुख उपलब्धियां

- डीएफसीसीआईएल कॉर्पोरेट कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का ऑन-लाइन आयोजन किया गया। त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट रेल मंत्रालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-2) को निर्धारित समय के अनुसार प्रेषित करना सुनिश्चित किया गया।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-2) द्वारा आयोजित अर्द्ध-वार्षिक बैठकों में डीएफसीसीआईएल की भागीदारी सुनिश्चित की गई एवं प्रबंध निदेशक द्वारा बैठकों में ऑन-लाइन माध्यम से सहभागिता की गई ।
- राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 14.09.2021 से 28.09.2021 तक डीएफसीसीआईएल कॉर्पोरेट कार्यालय में "हिंदी पखवाड़े" का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा आयोजन के दौरान डीएफसीसीआईएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रबंध निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया। हिंदी दिवस पर एक हिंदी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसके दौरान हिंदी भाषा के महत्व पर भाषण एवं व्याख्यान दिए गए। प्रबंध निदेशक महादेय की ओर से हिंदी दिवस संदेश भी जारी किया, जिसका वाचन भी किया गया।
- हिंदी के प्रयोग प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कॉर्पोरेट कार्यालय में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। यह अभियान कॉर्पोरेट कार्यालय के साथ फील्ड कार्यालयों में भी किया गया। बड़ी उत्सुकता से अधिकारियों / कर्मचारियों ने सहभागिता की। फील्ड कार्यालयों में हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिताएं भी कराई गईं।
- वित्तीय वर्ष के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय के विभिन्न विभागों एवं परियोजना कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षण देने के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 26 अधिकारियों / कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।
- डीएफसीसीआईएल वेबसाइट (हिंदी-अंग्रेज़ी) के द्विभाषीकरण का कार्य यद्यपि एक सतत प्रक्रिया है, फिर भी इसे एक बेहतर रूप में प्रदर्शित करने के लिए इसमें आवश्यक सुधार करते हुए इसे अद्यतन किया गया।
- राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के शत-प्रतिशत अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए स्थायी प्रकार के कार्यालय आदेश, परिपत्र, सूचनाएं, अधिसूचनाएं, विज्ञापन, निविदाएं आदि द्विभाषी रूप में तैयार कर जारी किए गए।
- हिंदी भाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए डीएफसीसीआईएल में कुछ प्रोत्साहन योजनाएं तैयार कर लागू हैं जिसका लाभ डीएफसीसीआईएल कॉर्पोरेट कार्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा उठाया जा रहा है।
- डीएफसीसीआईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय के पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की खरीद आवंटित बजट के अनुसार सुनिश्चित की गई जिससे अधिकतम कर्मचारी/अधिकारी लाभान्वित हो रहे हैं।

हिंदी पखवाड़ा – 2021 के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं का परिणाम

हिंदी पखवाड़ा-2021 के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, हिंदी शब्द ज्ञान टिप्पण आलेखन एवं हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसका परिणाम निम्नानुसार है:

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम सर्वश्री / सुश्री	पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	विनय कुमार नामा	उप मुख्य सतर्कता अधिकारी	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रथम
2	शंशाक शेखर	वरिष्ठ कार्यकारी/सिविल	कॉर्पोरेट कार्यालय	द्वितीय
3	सौरभ कुमार राय	कनिष्ठ कार्यकारी/सिग.एवं दूर.	कॉर्पोरेट कार्यालय	तृतीय
4	नीरज यादव	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा
5	गौरी शंकर शर्मा	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा

2. हिंदी शब्द ज्ञान एवं टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम सर्वश्री / सुश्री	पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	सौरभ कुमार राय	कार्यकारी / सिग एवं दूर	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रथम
2	जय प्रकाश	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	द्वितीय
3	प्रेमवती शर्मा	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	तृतीय
4	आदित्य अवस्थी	प्रबंधक / सतर्कता	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा
5	शशांक शेखर	वरि.कार्यकारी / सिविल	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा

3. हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम सर्वश्री / सुश्री	पदनाम	कार्यालय का नाम	स्थान
1	पूनम बिरला	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रथम
2	सुरेन्द्र सिंह	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	द्वितीय
3	हरीश प्रसाद	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	तृतीय
4	दिनेश प्रसाद	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा
5	जयप्रकाश चमोली	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रेरणा

वर्ष के दौरान हिंदी में सराहनीय एवं उल्लेखनीय कार्य करने वाले कॉर्पोरेट व फील्ड कार्यालय के पुरस्कृत कर्मचारी

कॉर्पोरेट कार्यालय

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	कार्यालय का नाम
1	विजय कुमार तिवारी	कनिष्ठ प्रबंधक / भूमि अधि. एवं सेमू	कॉर्पोरेट कार्यालय
2	जगदीश पहल	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय
3	सुरेश कुमार	सहायक प्रबंधक / वित्त	कॉर्पोरेट कार्यालय
4	विकास	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय
5	जयपाल	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय
6	हरलीन कौर	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय
7	देवेन्द्र कुमार	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय
8	जयप्रकाश चमोली	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय
9	विजेता	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय
10	चित्रा सिंह	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय
11	सपना	कार्यालय सहायक	कॉर्पोरेट कार्यालय
12	प्रेमवती शर्मा	निजी सचिव	कॉर्पोरेट कार्यालय

फील्ड कार्यालय

क्र.सं.	नाम सर्वश्री	पदनाम	कार्यालय का नाम
1	जनक कुमार सिंह	परियोजना प्रबंधक सिविल /	टूंडला
2	रवि कुमार भार्गव	परियोजना प्रबंधक वित्त /	अहमदाबाद
3	जसवंत गुप्ता	एमटीएस सिविल/	जयपुर
4	संजय काले	उप परियोजना प्रबंधक विद्युत/	मुंबई (उत्तर)
5	कौशिक पाल	कनिष्ठ कार्यकारी सिविल/	मुंबई (दक्षिण)
6	चिट्टे अनिल	कार्यकारीएवं दूर.सिग/	नोएडा
7	चंद्र प्रकाश श्रीवास्तव	कार्यकारी सिविल/	अंबाला
8	अखिलेश कुमार	सहायक प्रबंधक सिविल/	मेरठ
9	अरविंद कुमार पाण्डेय	उप परियोजना प्रबंधक	इलाहबाद (पूर्व)
10	अजीत सिंह	उप परियोजना प्रबंधक	इलाहबाद (पश्चिम)
11	खालिद फैजल	उप परियोजना प्रबंधक सिविल/	कोलकाता
12	हितेश बारोट	कनिष्ठ वित्त अधिकारी	वडोदरा
13	संजय कुमार	कम्प्यूटर ऑपरेटर	अजमेर

कॉर्पोरेट कार्यालय में वर्ष 2021 में राजभाषा विभाग की प्रमुख गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते प्रबंध निदेशक महोदय व उपस्थित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा के समापन के मौके पर प्रतिभागी को पुरस्कृत करते प्रबंध निदेशक महोदय

निबंध प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी को सम्मानित करते प्रबंध निदेशक, निदेशक अवसंरचना व अन्य वरिष्ठ अधिकारी

उप मुराधियों की वर्चुअल समीक्षा बैठक को संबोधित करते मुख्य राजभाषा अधिकारी

हिंदी निबंध प्रतियोगिता में सहभागिता करते अधिकारी / कर्मचारीगण

हरिवंश राय बच्चन जंयती कार्यक्रम में संबोधित करती दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. कुमुद शर्मा

राकास की तिमाही बैठक एवं गृह पत्रिका 'मंथन' के चतुर्थ अंक का विमोचन व अन्य गतिविधियां

कॉर्पोरेट कार्यालय में हरिवंश राय बच्चन की जंयती के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में बच्चन का काव्य पाठ करती कर्मचारी

हरिवंश राय बच्चन की जंयती के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण

चाय पर चर्चा कार्यक्रम में आर्शीवचन देते प्रबंध निदेशक महोदय व मौजूद मुख्य राजभाषा अधिकारी

गृह पत्रिका 'मंथन' के चतुर्थ अंक का विमोचन करते प्रबंध निदेशक व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

चाय पर चर्चा कार्यक्रम में कार्यक्रम का संचालन करते हुए सलाहकार राजभाषा

चाय पर चर्चा कार्यक्रम में मौजूद कर्मचारीगण

यदि इच्छा शक्ति प्रबल हो तो हम कोई भी बुरी आदत छोड़ सकते है

राकेश सुंद्रियाल,
कॉर्पोरेट कार्यालय

एक व्यक्ति को रोज-रोज जुआ खेलने की बुरी आदत पड़ गयी थी। उसकी इस आदत से सभी बड़े परेशान रहते थे। लोग उसे समझाने की भी बहुत कोशिश करते कि वो गन्दी आदत छोड़ दे, लेकिन वो हर किसी को एक ही जवाब देता, "मैंने ये आदत नहीं पकड़ी, इस आदत ने मुझे पकड़ रखा है।" और सचमुच वो इस आदत को छोड़ना चाहता था, पर हजार कोशिशों के बावजूद वो ऐसा नहीं कर पा रहा था। परिवार वालों ने सोचा कि शायद शादी करवा देने से वो ये आदत छोड़ दे, सो उसकी शादी करा दी गयी। पर कुछ दिनों तक सब ठीक चला और फिर से वह जुआ खेलने जाना लगा। उसकी पत्नी भी अब काफी चिंतित रहने लगी, और उसने निश्चय किया कि वह किसी न किसी तरह अपने पति की इस आदत को छुड़वा कर ही दम लेगी। एक दिन पत्नी को किसी सिद्ध साधु – महात्मा के बारे में पता चला, और वो अपने पति को लेकर उनके आश्रम पहुंची । साधु ने पूछा, "बताओ पुत्री तुम्हारी क्या समस्या है?" पत्नी ने दुखपूर्वक सारी बातें साधु-महाराज को बता दी। साधु-महाराज उनकी बातें सुनकर समस्या की जड़ समझ चुके थे, और समाधान देने के लिए उन्होंने पति-पत्नी को अगले दिन आने के लिए कहा। अलने दिन वे आश्रम पहुंचे तो उन्होंने देखा कि साधु-महाराज एक पेड़ को पकड़ के खड़े है।

उन्होंने साधु से पूछा कि आप ये क्या कर रहे हैं और पेड़ को इस तरह क्यों पकडे हुए हैं? साधु ने कहा, "आप लोग जाइये और कल आइयेगा।" फिर तीसरे दिन भी पति-पत्नी पहुंचे तो देखा कि फिर साधु पेड़ पकड़ के खड़े हैं। उन्होंने जिज्ञासा वश पूछा, "महाराज आप ये क्या कर रहे हैं?" साधु बोले, "पेड़ मुझे छोड़ नहीं रहा है। आप लोग कल आना।" पति-पत्नी को साधु जी का व्यवहार कुछ विचित्र लगा, पर वे बिना कुछ कहे वापस लौट गए। अगले दिन जब वे फिर आये तो देखा कि साधु महाराज अभी भी उसी पेड़ को पकडे खड़े है। पति परेशान होते हुए बोला,"बाबा आप ये क्या कर रहे हैं?, आप इस पेड़ को छोड़ क्यों नहीं देते?" साधु बोले, मैं क्या करूँ बालक ये पेड़ मुझे छोड़ ही नहीं रहा है?" पति हँसते हुए बोला, "महाराज आप पेड़ को पकडे हुए हैं, पेड़ आप को नहीं। आप जब चाहें उसे छोड़ सकते हैं।" साधु-महाराज गंभीर होते हुए बोले, "इतने दिनों से मैं तुम्हें क्या समझाने की कोशिश कर रहा हूँ । यही न कि तुम जुआ खेलने की आदत को पकडे हुए हो ये आदत तुम्हें नहीं पकडे हुए है।" पति को अपनी गलती का अहसास हो चुका था, वह समझ गया कि किसी भी आदत के लिए वह खुद जिम्मेदार है, और वह अपनी इच्छा शक्ति के बल पर जब चाहे उसे छोड़ सकता है। डर पर जीत हासिल करने की सीख देती यह कहानी।

ज्योतिष विज्ञान या फिर विश्वास ?

अभिषेक शर्मा,
कॉर्पोरेट कार्यालय

ज्योति और ईष इन्हीं दो शब्दों से ज्योतिष शब्द का निर्माण हुआ है। ज्योति मतलब प्रकाश और ईष मतलब ईश्वरी संकेत अत: ज्योतिष का मतलब है किसी परेशानी तथा कठिनाइयों का स्पष्टीकरण करने वाली पद्धति। उदाहरणार्थ जिस प्रकार सोनोग्राफी, एक्स-रे,सिटी स्किन से हमारे शरीर में रहने वाली कठिनाई या दिक्कत दिखाती है, उसी प्रकार ज्योतिष जातक के जीवन में हो रही कठिनाई का निदान करता है।

ज्योतिष शास्त्र में पाँच प्रकार से उपचार किये जाते है – दान, स्नान, रत्न, जाप, यज्ञ।

ज्योतिष शास्त्र को अधिकतर लोगों ने सदैव गलत ही समझा है एवं उसके वास्तविक उपयोग से अधिकतर लोग अंजान हैं। ज्योतिष शास्त्र का निर्माण मुख्यतः खगोलीय गणना के लिए ही किया गया था एवं जो खोज गैलेलीयो व अन्य कथित खगोल वैज्ञानिक ने 16-20 शताब्दी में की थी वह सब वैदिक खगोल शास्त्र ने हजारों साल पहले ही कर दी थी। जैसे-गैलेलीयो ने 16-वी शताब्दी में नवग्रह सूत्र बताया जबकि ज्योतिष शास्त्र में हम हजारों साल से नवग्रह, 27 नक्षत्रों का सूत्र पढ़ रहे हैं। इसी प्रकार ग्रहण, शनि के चारों और एक छल्ला, सभी ग्रहों के रंग आदि हमें हजारों सालों से पता था जो की "अंग्रेजों की खोज" कह कर हमें आज बताया जा रहा है।

ज्योतिष का नाम आते ही सबसे पहले हमारा हृदय व मस्तिष्क यह विचार करता है की ज्योतिष पर कितना विश्वास किया जाये कितना नहीं? वास्तविकता में अगर देखा जाए तो मनुष्य का जीवन एक अनुपात में चलता है जो की इस प्रकार है – ३३% पिछले जन्म के कर्म ३३% इस जन्म के कर्म ३३% कुंडली में लिखा भविष्य १ % पूजा पाठ एवं इस अनुपात से हमें यह समझने की ज़रूरत है की प्रथम ३३% को आप बदल नहीं सकते क्योंकि यह आपके पिछले जन्म के संचित कर्म हैं अब हमारे हाथ में बचा ६७% जिसमें से दुसरे ३३% हमें ही देखना है क्योंकि यह हमारे कर्म है जो हम इस जीवन में करेंगे एवं जो की हमारी कुंडली में ग्रहों द्वारा भी प्रभावित होते हैं जैसे की अगर शुभ ग्रहों का अधिक प्रभाव है तो जातक शुभ कर्म करेगा यदि पाप ग्रहों से प्रभावित है तो पाप कर्म करेगा, तीसरा ३३% है कुंडली जिसमें ग्रह एवं नक्षत्रों के योग द्वारा हमारा भविष्य निर्धारित है जिसको हम अगले १% पूजा से बदल भी सकते हैं। इस प्रकार हमें यह समझने की ज़रूरत है की वह देवज्ञ (ज्योतिषाचार्य) जिनके पास आप अपना प्रश्न लेकर जायेंगे वह केवल ३३% जो की आपकी कुंडली है एवं आपके कर्म जिनको कुंडली प्रभावित करती है एवं क्या पूजा की जाए जिससे आपको फायदा हो उतना ही बता सकता है जो की अनुपात अनुसार ६७% ही है, जिसमें आपके द्वारा किये जाने वाले कर्म भी हैं। जैसे – एक पिता अपने पुत्र के साथ देवज्ञ के पास गया एवं उनको पूछा की "आचार्य जी क्या मेरा पुत्र डॉक्टर बन पाएगा"? अब यहाँ समझने की बात यह है की आचार्य जी आपको केवल कुंडली अनुसार इतना ही बता सकते हैं की

क्या ग्रहों अनुसार ऐसे स्थिति बन रही है जो बताये की क्या वह जातक डॉक्टर बन सकता है या नहीं उसके पश्चात वे उसे कोई उपचार भी बताएंगे जो उसको अपना लक्ष्य पाने में सहायक होंगे परंतु मेहनत उसको ही करनी होगी जी तोड़ मेहनत करनी होगी। और इस प्रश्न अनुसार यहाँ कई संभावना बनती हैं –

1. जातक जी तोड़ मेहनत करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार कर के डॉक्टर बन जाए
2. जातक जी तोड़ मेहनत करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार न करे एवं डॉक्टर न बन पाए
3. जातक जी तोड़ मेहनत करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार न करे एवं डॉक्टर भी बन जाए
4. जातक जी तोड़ मेहनत न करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार न करे एवं डॉक्टर बन जाए
5. जातक जी तोड़ मेहनत न करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार जी लगा के करे एवं डॉक्टर बन जाए
6. जातक जी तोड़ मेहनत करे एवं आचार्य द्वारा बताये उपचार करने के बाद भी डॉक्टर ना बन जाए

अब यहाँ आप प्रति संभावना का विश्लेषण देखिये:

1. पिछला जन्म बढ़िया, कर्म कर के कठिन परिश्रम, कुंडली भी अच्छी एवं पूजा की
2. पिछला जन्म बढ़िया, कर्म कर के कठिन परिश्रम, कुंडली भी मध्यम एवं पूजा नहीं की
3. पिछला जन्म बढ़िया, कर्म कर के कठिन परिश्रम, कुंडली बहुत अच्छी एवं पूजा नहीं की
4. पिछला जन्म बहुत बढ़िया, कोई कठिन परिश्रम नहीं , कुंडली बहुत अच्छी एवं पूजा नहीं की
5. पिछला जन्म अच्छा नहीं , कोई कठिन परिश्रम नहीं , कुंडली अच्छी नहीं एवं पूजा नहीं की
6. पिछला जन्म अच्छा नहीं , अति कठोर परिश्रम किया , कुंडली अच्छी नहीं एवं पूजा नहीं की अब

आपको उपरोक्त संभावनाओं से यह समझने की ज़रूरत है: कर्म, कुंडली, पूजा आपको इन सभी में ही तालमेल सम्पूर्ण तरह बैठाना होगा। न ही आप केवल कर्म पर विश्वास रख सकते, न ही केवल कुंडली पे, न ही केवल पूजा पर। आप को इन सब में तालमेल बैठना होगा तभी आप अपने लक्ष्य पर पहुँच पाएँगे क्योंकि देखिये संभावना 6 में जातक ने केवल अपने परिश्रम पर विश्वास रखा और असफल रहा।

कुछ लोगों का यह प्रश्न रहेगा जो अन्य धर्म के लोग हैं, जो नास्तिक हैं, जो ज्योतिष नहीं मानते तो वे बिना कुंडली दिखाए या पूजा करे डॉक्टर, आईएएस आदि कैसे बन जाते हैं ? तो आपको यह सोचना होगा ज्योतिष शास्त्र ग्रह नक्षत्र व उसकी चाल का मानव जीवन पर प्रभाव बताता है एवं सनातन धर्म सबसे प्राचीन धर्म है, जिसने हजारों साल पहले ही ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी से सूर्य की दूरी आदि निर्धारित कर लिए थे। तो यहाँ यह समझने की ज़रूरत है अन्य धर्म के लोगों पर भी ग्रहों का प्रभाव उसी प्रकार है जिस प्रकार ज्योतिष को मानने वालों पर है। कई जातक के भविष्य में डॉक्टर बनना प्रबल रूप से लिखा होता, किसी के में लिखा होने पर भी मेहनत नहीं करता और किसी के में न लिखे होने पर भी इतनी मेहनत करता है की डॉक्टर बन जाता है |

अंततः कहने का आशय यही है की मेहनत, कुंडली और पूजा सभी में तालमेल बैठाए जिन ऋषियों ने बिना उपकरण के इतनी बड़ी गणना कर हम उससे आगे कभी नहीं बढ़ सकते पर उसको समझना और उसका उचित उपयोग करना हमारी जिम्मेदारी व हमारा कर्तव्य है।

पिता

देवेन्द्र तंवर
कार्यकारी सहायक/ मानव संसाधन

"जो अपनी आंखें बंद कर भरोसा और प्रेम करे वो प्रेमिका, जो आंखें बंद होने तक प्रेम करे वो माँ होती है और जो आँखों में प्रेम न जताते हुए भी आपसे प्रेम करे वो एक पिता ही होता है।"

जीवन में पिता का होना ही हमारे लिए काफी है क्योंकि पिता ही हमारी पहचान होते है लेकिन हम जीते जी पिता के महत्व को पहचान नहीं पाते। पिता का महत्व उनसे पूछो जिनके सिर पर पिता का हाथ नहीं है पिता का प्यार अनमोल होता है। माता-पिता के आशीर्वाद से हम बड़ी से बड़ी कामयाबी भी हासिल कर सकते हैं।

पिता के बिना हमारी जिंदगी कटी पतंग की तरह होती है जो हमको कहां ले जाएगी ये हमें भी मालूम नहीं होता पिता ही होते है जो हमें सही गलत का बोध कराते हैं। पिता को अपने संतान के प्रति बहुत प्यार होता है लेकिन पिता को माँ की तरह उसे बयां करना नहीं आता। माँ अपने संतान को दुःख में देखकर रो लेगी मगर एक पिता अपने अंदर ही अंदर जूझते रहेंगे मगर वो कहेंगे नहीं वरना ममता और भावुकता में पिता किसी से पीछे नहीं रहते। ना पिता में जज्बात कम होते है और ना ही आस्था। बस वो अपने प्यार को अपनी कमज़ोरी नहीं बनने देते और यही उनकी ताकत होती है। पूरी दुनिया में एक पिता ही वो इंसान हे जो ये चाहता हे की आप उससे भी ज्यादा कामयाब बने। अपने माता पिता की जीते जी कदर करें क्योंकि एक वो ही होते हैं जिन्होंने आपको अपना सब कुछ छोड़कर आपको सब कुछ दिया है। एक बच्चे के संपूर्ण विकास में एक पिता का योगदान माता के योगदान से कम नहीं होता।

पिता वो हैं जो अपना पूरा समय अपनी संतान, पत्नी और परिवार के लिए हर रोज काम करते हैं। वो खुद के लिए कम लेकिन अपनी संतान, परिवार और पत्नी के लिए अपना खून पसीना एक करता है।

पुराणों में कहा गया है कि पिता राज प्रदान नहीं कर सकता लेकिन दुनिया के हर पुत्र का ये फर्ज होता है कि वो अपने पिता को राज प्रदान करने की हर-एक कोशिश करे । जिस तरह से पिता बचपन में पालन पोषण प्यार करते हे वैसे ही हमें भी जब पिता वृद्ध हो जाये तो हम भी उनका उसी प्रकार ख्याल करें। हर एक पिता की यह ख्वाइश होती है कि उनकी संतान उसके पास रहे और उनका ख्याल रखे, इसलिए हमें अपने माता पिता को प्यार और विश्वास देना चाहिए उनके साथ बैठना चाहिए और सुख दुःख की बातें करनी चाहिए ताकि उनको लगे की जो हमने अपने बच्चों को संस्कार दिए थे वो आज हमें नजर आ रहे हे इस दुनिया में सभी कर्जों से बड़ा कर्ज माता-पिता का होता है जिसे हम किसी भी जन्म में चुका नहीं पाएंगे फिर भी हमें माता पिता ने बचपन में जो समय उन्होंने दिया वो हमें माता-पिता के वृद्ध होने पर देना चाहिए।

मेरा गाँव मेरा विकास

जयप्रकाश चमोली,
कॉर्पो. कार्या.

उत्तराखण्ड का एक गाँव जो उत्तराखण्ड की राजधानी से 150किमी लगभग पौडी गढ़वाल के इडवालस्यु पट्टी व पौड़ी शहर से मात्र 10किमी. पर से एक गाँव गौरीकोट गाँव के एक मेहनती युवा जिनका नाम अनिल रावत जी है। उन्होने साल 1999 या 2000 के बीच दिल्ली जैसे जगमगाते व सपनों का शहर छोड़ कर अपने गाँव आने का विचार बनाया। अपनी बहन, माँ व वह स्वयं गाँव मे आए। उनका घर टूट गया था। कारण, क्योंकि उनके पिता जी दिल्ली में किसी विभाग नौकरी करते थे। तो पिता का देहावसान हो गया। पिता कि जगह उनकी माता वहां नौकरी लग गयी।। परन्तु अनिल ने गाँव कि ओर आना पसन्द किया । परन्तु घर टूटा हुआ था। पलायन कि वजह से उसी घर को थोड़ा-थोड़ा करके सही बनाया और खेती को अजीविका का सहारा बनाया। सब्जियां, गोभी, आलू, लौकी, तोरई, बीन, शिमला मिर्च, बैंगन आदि उगाने लगे और धीरे-धीरे वह लोगों की प्रेरणा के स्त्रोत बने। वो वही रुके। गाँव मे एक फल होता है जिस फल को काँफिस नाम से जाना जाता है। वह फल बहुत मीठा होता है । जून-जुलाई मे पेड़ मे फुल व छोटे-छोटे फल उगते है। और मध्य नवम्बर मे वो फल पक जाता है। जब वो फल पेड़ पर हल्का पीला व लाल रंग लिये रहता है। और उसी समय उस पेड़ के सारे हरे पते भी पीले व लाल रंग लिए रहते है । जब पेड़ पर वो फल (काँफिस) पकने लग जाते, तब पेड़ के सारे पत्ते गिरने लग जाते है। और सारे पत्ते जब गिर जाते है। तब उस पड़ पर फल ही फल दिखते एक भी पत्ता नही दिखता। बहुत मनमोहक दिखने लगते है। सच में सिर्फ पेड़ में फल ही फल एक भी पत्ता नहीं। उस फल का बहुत अच्छा मूल्य उनको मिल जाता है। अनिल जी ने बहुत सारी महिलाओ को भी अपने साथ जोड़ा। आज वो सारी महिलाएं अपने उगाये हुये जितनी भी सब्जियाँ व दाले होती हैं। वो सब बाजार में बेचती हैं। जिससे उन लोगो कि एक अच्छी आमदनी बनती है। और सबसे बड़ी बात कि उनके इस प्रयास से बहुत परिवार पलायन होने बचे। क्योकि उन सब की आमदनी होने लगी । वही सभी प्रकार की सुविधाएं उनको प्राप्त होने लगी है। तो भी क्यो कोई अपनी जन्म भूमि और अपने गाँव से पलायन करेगा।

अनिल जी वही नहीं रुके उन्होंने पशु पालन भी आरम्भ किया। मछली-पालन, मुर्गी पालन, गाय, भैस, बकरी पालन करना आरम्भ किया। उनकी धर्मपत्नी जी उनका बहुत साथ देती है। अगर कहें कि वो साथ ना देती तो अनिल जी आज इस मुकाम तक नहीं होते। वो आज भी गाँव में सभी प्रकार कि फसले उगाते हैं। खाद भी वो जो गोबर, राख आदि को जो गाँव मे प्रयोग की जाती है। उसी से वो उगाते है। जिसकी पौडी जैसे शहर में उनके फल व सब्जियों कि बहुत मांग है। यहां तक कि वो आलू, प्याज, मटर, लहसुन, धनिया, मिर्च दूर-दूर तक के गांवों तक बेचते है । और बहुत लोग उनके गाँव मे दूर से लेने आते है। यहाँ तक कि कुछ लोग उस गाँव में धूमने तक आते है। उनका बहुत प्रयास व मेहनत कि वजह से आज उस गाँव कि वो पहचान है। और उनको देख कर लोग बहुत प्रेरित होते है। और उनकी वजह से बहुत पलायन भी रुका है। जिस गाँव में जिस प्रकार खेती व पैदावार होती है। अगर उसको सही तरीके से किया जाये तो कुछ हद तक उत्तराखण्ड का पलायन रुक सकता है।

उत्तराखण्ड कि सबसे बड़ी परेशानी पलायन है। अगर इसी प्रकार सभी युवा कुछ न कुछ नए तरीके अजमाने एवं गाँव में रहकर ही स्वरोजगार करें तो इससे पलायन कम हो सकता है। तो अनिल रावत जी हम सबके लिए प्रेरणा कि स्त्रोत है।

- जय उत्तराखण्ड जय भारत

आशा,
कॉर्पोरेट कार्यालय

समय की सीख

कौन कहता है मुश्किल समय सिर्फ तकलीफ देता है,
समय तो साहस बुद्धि और सीख देता है।
यही वो है, यही वो है
जो सही और गलत के बीच में फर्क समझाता है।

अच्छे समय में वो ताकत कहाँ,
जो बुरा समय समझा जाता है।
अच्छे समय में तो सब खुश रहा करते है,
बुरा समय तो हर माहौल में खुश रहना सीखा जाता है।

शुक्रगुजार हूँ मै अपने उस मुश्किल समय की,
जिसने मुझे सही मार्ग पर चलना सिखाया।
अगर उससे हुई मुझे थोड़ी परेशानियां तो,
उसने मुझे रिश्तों और समय के महत्व को भी सिखाया।

दूसरों से ली हुई सीख तो सिर्फ,
कुछ पलो को सुखद बनाती हैं।
परन्तु अपने मुश्किल समय से ली हुई सीख,
तो सारा जीवन साकार कर जाती है।

श्रुति जैन,
कॉर्पोरेट कार्यालय

क्यों न ऐसा होता

एक गधे ने एक दिन सोचा, क्यों ना ऐसा होता!
चीता मेरे हाथ जोड़ता, शेर सामने रोता

राज मैं करता, फिर जंगल पे,
सब डरते मेरी हलचल पे

रोज़ सुबह जब सोकर उठता, घोड़ा मेरे दाँत मांजता,
बंदर डमरू खूब बजाता, भालू उसके साथ नाचता

हाथी सूंड में पानी लाता,
शावर से मुझको नहलाता

झबरा कुत्ता पूंछ हिलाकर, फिर मेरे पैरों को धोता!
चीता मेरे हाथ जोड़ता, शेर सामने रोता

समझ हक़ीक़त, समझ को अपनी, गधा खुशी से इठलाया,
शेर की गुफा के आगे जाकर, ढैंचू-ढैंचू चिल्लाया

शेर की टूटी, नींद शोर से,
वो गुर्राया, बड़ी ज़ोर से

सुनकर शेर-दहाड़, गधे ने सरपट दौड़ लगाई|
लौट के बुद्धू, घर को आया, अकल ठिकाने आई

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान

संध्या द्विवेदी
कॉर्पोरेट कार्यालय,

<u>युवा वर्ग और उसकी शक्ति</u> – आज का छात्र कल का नागरिक होगा। उसी के सबल कन्धों पर देश के निर्माण और विकास का भार होगा। किसी भी देश के युवक–युवतियाँ उसकी शक्ति का अथाह सागर होते हैं और उनमें उत्साह का अजस्र स्रोत होता है। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी शक्ति का उपयोग सृजनात्मक रूप में किया जाए; अन्यथा वह अपनी शक्ति को तोड़–फोड़ और विध्वंसकारी कार्यों में लगा सकते हैं। प्रतिदिन समाचार–पत्रों में ऐसी घटनाओं के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। आवश्यक और अनावश्यक माँगों को लेकर उनका आक्रोश बढ़ता ही रहता है। यदि छात्रों की इस शक्ति को सृजनात्मक कार्य में लगा दिया जाए तो देश का कायापलट हो सकताहै। वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग क्यों और किसके लिए कर रहे हैं ये कुछ विचारणीय प्रश्न हैं। इसका प्रथम कारण है– बेरोजगारी, परिणामत देश में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। जब छात्र को यह पता ही है कि अन्तत: उसे बेरोजगार ही भटकना है तो वह अपने अध्ययन के प्रति लापरवाही प्रदर्शित करने लगता है। युवाओं पर राजनैतिक दलों के प्रभाव के कारण भी युवा–असन्तोष पनपता है। कुछ स्वार्थी तथा अवसरवादी राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थों के लिए युवाओं का प्रयोग करते हैं। आज का युवाओं आलसी भी हो गया है। वह परिश्रम से कतराता है इसके अतिरिक्त समाज के प्रत्येक वर्ग में फैला हुआ असन्तोष भी युवाओं के असन्तोष को उभारने का मुख्य कारण है। राष्ट्र–निर्माण में छात्रों का योगदान आज का विद्यार्थी कल का नागरिक होगा और पूरे देश का भार उसके कन्धों पर ही होगा। इसलिए आज का विद्यार्थी जितना प्रबुद्ध, कुशल, होगा। इस दृष्टि से विद्यार्थी के कंधों पर अनेक दायित्व जाते हैं, सक्षम और प्रतिभा सम्पन्न होगा उतना ही उज्ज्वल जिनका निर्वाह करते हुए वह राष्ट्र–निर्माण की दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

राष्ट्र–निर्माण में योगदान: (क) अनुसन्धान के क्षेत्र में - आधुनिक युग विज्ञान का युग है। जिस देश का विकास जितनी शीघ्रता से होगा, वह राष्ट्र उतना ही महान् होगा; अत: विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे नवीनतम अनुसन्धानों के द्वार खोलें। चिकित्सा के क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थी औषध और सर्जरी के क्षेत्र में नवीन अनुसन्धान कर सकते हैं। वे मानवजीवन को अधिक सुरक्षित और स्वस्थ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसी प्रकार इंजीनियरिंग में अध्ययनरत विद्यार्थी विविध प्रकार के कल–कारखानों आदि के विकास की दिशा में भी अपना योगदान दे सकते हैं।

(ख) परिपक्व ज्ञान की प्राप्ति एवं विकासोन्मुख कार्यों में उसका प्रयोग: जीवन के लिए परिपक्व ज्ञान परम आवश्यक है। अधकचरे ज्ञान से गम्भीरता नहीं आ सकती, उससे भटकाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने ज्ञान को परिपक्व बनाएँ तथा अपने परिवार के सदस्यों को ज्ञान–सम्पन्न करने, देश की सांस्कृतिक सम्पदा का विकास करने आदि विभिन्न दृष्टियों से अपने इस परिपक्व ज्ञान का सदुपयोग करें।

(ग) स्वयं सचेत रहते हुए सजगता का वातावरण उत्पन्न करना:विद्यार्थी अपने सम–सामयिक परिवेश के प्रति सजग और सचेत रहकर ही राष्ट्र–निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। विश्व तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। इसलिए अब प्रगति के प्रत्येक क्षेत्र में भारी प्रतिस्पर्धाओं का

सामना करना पड़ता है। इन प्रतिस्पर्धाओं में सम्मिलित होने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों के प्रति सचेत रहें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

(घ) नैतिकता पर आधारित गुणों का विकास: मनुष्य का विकास स्वस्थ बुद्धि और चिन्तन के द्वारा ही होता है। इन गुणों का विकास उसके नैतिक विकास पर निर्भर है। इसलिए अपने और राष्ट्र–जीवन को समृद्ध बनाने के लिए विद्यार्थियों को अपना नैतिक बल बढ़ाना चाहिए तथा समाज में नैतिक–जीवन के आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए।

(ङ) कर्तव्यों का निर्वाह: विद्यार्थी समाज में रहकर ही अपनी शिक्षा प्राप्त करता है। पहले की तरह वह गुरुकुल में जाकर नहीं रहता। इसलिए उस पर अपने राष्ट्र, परिवार और समाज आदि के अनेक उत्तरदायित्व आ गए हैं। जो विद्यार्थी अपने इन उत्तरदायित्वों अथवा कर्त्तव्यों का निर्वाह करता है, उसे ही हम सच्चा विद्यार्थी कह सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्र–निर्माण के लिए विद्यार्थियों में कर्त्तव्य–परायणता की भावना का विकास होना परम आवश्यक है।

(च) अनुशासन की भावना को महत्त्व प्रदान करना : अनुशासन के बिना कोई भी कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं हो सकता। राष्ट्र–निर्माण का तो मुख्य आधार ही अनुशासन है। इसलिए विद्यार्थियों का दायित्व है कि वे अनुशासन में रहकर देश के विकास का चिन्तन करें। जिस प्रकार कमजोर नींववाला मकान अधिक दिनों तक स्थायी नहीं रह सकता, उसी प्रकार अनुशासनहीन राष्ट्र अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रह सकता। विद्यार्थियों को अनुशासित सैनिकों के समान अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, तभी वे राष्ट्र–निर्माण में योग दे सकते हैं। कुछ विपरीत परिस्थितियों के फलस्वरूप अनेक छात्र समाज–विरोधी कार्यों में लग जाते हैं। इससे देश और समाज की हानि होती है। भविष्य में देश का उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को ही सँभालना है, इसलिए यह आवश्यक है कि वे राष्ट्रहित के विषय में विचार करें और ऐसे कार्य करें, जिनसे हमारा राष्ट्र प्रगति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता रहे। जब विद्यार्थी समाज सेवा को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ेंगे, तभी वे सच्चे राष्ट्र–निर्माता हो सकेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपनी शक्ति का सही मूल्यांकन करते हुए उसे सृजनात्मक कार्यों में लगाएँ।

"मेरी माँ"

रुचि शर्मा,
कॉर्पोरेट कार्यालय

'माँ' किसी बालक बालिका का संसार से प्रथम परिचय है। कई बड़े बड़े लेखकों की कलम रुक जाती है जब वह माँ के बारे में कुछ भी लिखने की कोशिश की जाती है, क्योंकि माँ एक शब्द या इंसान नही है, बल्कि एक ऐसी भावना है जिसका शब्दों में बखान करना बहुत मुश्किल है। माँ एक रचयिता है जिसकी रचना हम सब है। हम सबको अपने जीवन मे ऐसे काम करने चाहिए कि हमारी रचयिता यानी कि हमारी माँ का सिर हमेशा गर्व से ऊँचा रहे।

माँ को करुणा की मूर्ति कहा जाता है, यह किसी भी हालत में हमेशा सही ही होता है। माँ कभी भी अपने बच्चों को कष्ट में नही देख सकती है। ठीक इसी तरह मेरी माँ भी हैं, वो खुद कष्ट में रह लेंगी लेकिन मुझे कष्टों से दूर रखती है। शायद ही कोई इस बात की व्याख्या कर सकता है कि आखिर माँ के अंदर ऐसी कौन सी शक्ति विराजमान है जो उन्हें इतनी ताकत देती है कि वह बच्चों के खातिर हर कष्ट सह सकें।

सम्पूर्ण संसार जिसमें सिमट जाता है, वो है माँ का आँचल। उम्र के साथ आँचल की पकड़ कमजोर जरूर हो जाती है, पर उसकी छाया में मृत्युपर्यन्त जीवन बिताने की अभिलाषा हर मानव की होती है। हमारे जीवन में यदि कोई सबसे ज्यादा महत्व रखता है तो वह हमारी माँ ही है क्योंकि बिना माँ के तो जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है। यही कारण है कि माँ को पृथ्वी पर ईश्वर का रुप भी माना जाता है। हमारे आदर्श जीवन के निर्माण में हमें हमारे माँ द्वारा दी गयी शिक्षाएं काफी महत्व रखती हैं क्योंकि बचपन से ही एक माँ अपने बच्चे को नेकी, सदाचार तथा हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने जैसी महत्वपूर्ण शिक्षाएं देती है। जब भी हम अपने जीवन में अपना रास्ता भटक जाते हैं तो हमारी माँ हमें सदैव सदमार्ग पर लाने का प्रयास करती है। कोई भी माँ कभी यह नही चाहती है कि उसका बेटा गलत कार्यों में लिप्त रहे। हमारे प्रारंभिक जीवन में हमें अपनी माँ द्वारा कई ऐसी आवश्यक शिक्षाएं दी जाती हैं, जो आजीवन हमारे काम आती है। इसलिए एक आदर्श जीवन के निर्माण में माँ का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है।

जीवन की पहली सीख देने वाला जो इंसान होता है वह माँ ही है। इसलिए माँ को जीवन का प्रथम गुरु का दर्जा दिया गया है। माँ है तो जीवन मे सब कुछ है। माँ के बिना जीवन में सब कुछ होते हुए भी कमी बनी रहती है। जीवन की पहली गुरु की संज्ञा माँ को दी गई है। माँ एक ऐसी गुरु होती है जिनकी सिखाई गई सीख जीवन के हर मोड़ पर काम आती है। ऐसा कभी नही देखने को मिलेगा जब माँ ने कोई गलत दिशा दिखाई हो। जीवन मे मैं चाहे कितनी भी सफलता हासिल कर लूं, लेकिन उसकी खुशी तब तक महसूस नही होती है जब तक माँ के चेहरे पर उस सफलता से खुशी न दिखे। कई बार

ऐसा भी होता है कि कुछ लोग पैसो की चकाचौंध में अपनी माँ को उचित सम्मान नही दे पाते लेकिन माँ को इसका कोई मलाल नही होता है।

हम माँ के कई रूप देखते हैं अपने जीवन मे जैसे कि धरती माँ, भारत माँ आदि। लेकिन इन सब के प्रति हमारे अंदर जिम्मेदारी का भाव तभी आ पाएगा जब हम अपनी माँ का सम्मान करेंगे। जब हम अपनी माँ के त्याग को सही मायने में समझ पाएंगे। हालांकि आजतक माँ त्याग को कोई भी समझ नही पाया है लेकिन उनके त्याग का कुछ प्रतिशत ही समझ जाएं और अपनी माँ को उसके बदले में खुशी देने की ठान ले तो यह दुनियाँ ही स्वर्ग हो जाएगी, फिर चाहें वह अपनी माँ हो, धरती माँ हो या भारत माँ हो। हम इन सब के ऋणी है, और हमें इनके त्याग को समझना चाहिये।

माँ पहले शिक्षा देने के लिए महत्वपूर्ण होती है माँ से ही बच्चा उसे पहले शिक्षा लेता है। माँ अपने जीवन में बहुत सारी भूमिकाएं निभाती आई है कभी माँ शिक्षक बन जाती है तो कभी मित्र बन जाते हैं। हर समस्या का सामना करने के लिए माँ सबसे आगे खड़ी होती है। कहां जाता है ना कि भगवान हर जगह मौजूद नहीं रह सकता इसके लिए उसने माँ को बनाया है। कहां जाता है ना कि बच्चे का पहला स्कूल परिवार होता है और पहले शिक्षा देने वाली मां होती है। हम जन्म से ही मां के आंचल में बड़े होते हैं, मां बच्चे की पहली शिक्षा और पहली शिक्षक है। जो एक शिक्षक नहीं कर सकता वही मां कर देती है । मां भले ही शिक्षा ना दे सके पर जीवन जीने का सही तरीका दे देती है जो शिक्षा से कम नहीं है समाज में किस तरह से व्यवहार करना है वह सिखाती है मां दुखों से लड़ने और तकलीफ हो को निपटने की शक्ति देती है यही कारण है कि मां को एक मित्र और एक अच्छे शिक्षक के रूप में जाना जाता है। हर इंसान किसी ना किसी बात से या किसी ने किसी इंसान से प्रेरणा लेता है परंतु मां सबसे अलग होती है जो जिंदगी में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। जब बच्चा शिक्षक से शिक्षा लेता है। वह सिर्फ शिक्षा लेता है परंतु उसे प्रेरणा मां देती है। यदि बच्चा सफल होता है तो उसके पीछे मां का हाथ होता है। क्योंकि मां उसे सफल होने की प्रेरणा देती है बच्चे ने विश्वास जगाए रखना बच्चे को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सदैव आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा देना मां निभाती है।

मेरी माँ मेरे जीवन में कई सारी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती है, वह मेरी शिक्षक तथा मार्गदर्शक होने के साथ ही मेरी सबसे अच्छी मित्र भी है। माँ हमारा पालन-पोषण करने के साथ ही हमारे जीवन में मार्गदर्शक और शिक्षक की भी भूमिका निभाती है। हम अपने जीवन में जो भी आरंभिक ज्ञान तथा शिक्षाएं पाते है वो हमें हमारे माँ द्वारा ही दी जाती है। यही कारण है कि माँ को प्रथम शिक्षक के रुप में भी जाना जाता है। माँ वह है जो हमें जन्म देने के साथ ही हमारा लालन-पालन भी करती हैं। माँ के इस रिश्तें को दुनियां में सबसे ज्यादा सम्मान दिया जाता है। मां बच्चे को सामाजिक व्यवहार सिखाती है ईमानदार बनाती है और मेहनत जैसी महत्वपूर्ण शिक्षा देती है यही कारण है कि मां को एक अच्छा शिक्षक मित्र और प्रेरित कहा जाता है।

केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है, उतने श्रम में हिंदुस्तान की सभी भाषाएं सीखी जा सकती है। - ***विनोबा भावे***

व्यापार मेला

लक्ष्मी नेगी,
कॉर्पोरेट कार्यालय

मेले और प्रदर्शनियाँ सभ्यता के विकास और संस्कृति की झलक दर्शाते हैं। मेरे देश में हर साल विभिन्न प्रकार के मेले अपने निर्धारित समय और स्थानों पर आयोजित किए जाते हैं। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में हर साल कई मेले आयोजित किए जाते हैं लेकिन मेरा पसंदीदा मेला अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (IITF) है। यह व्यापार मेला नवंबर माह की चौदह तारीख से प्रारंभ होकर अठाईस तारीख तक समाप्त होता है । यह स्थल सुप्रीम कोर्ट के सामने दिल्ली में प्रगति मैदान है।

व्यापार मेला 2021 का विषय "आत्मनिर्भर भारत" था।

छोटे पैमाने की इकाइयों और कुटीर उद्योगों, सहकारी बुनकरों से लेकर कृषि उपकरण और यहां तक कि सैन्य उपकरणों तक, हर वस्तु यहां प्रदर्शित होती है । व्यापार मेला नए उत्पादों को देखने के लिए एक बेहतरीन जगह है।

व्यापार मेले में राज्यवार स्टॉल हमारे देश की विविधता को दर्शाते हैं। ये सभी स्टॉल इस आयोजन को जीवंत और उत्सवपूर्ण बनाने के लिए एक साथ आते हैं विदेशी भागीदारी को छोड़कर, व्यापार मेले में उपलब्ध सभी चीजें भारत में निर्मित होती हैं। इसलिए, यह हम भारतीयों के लिए गर्व का क्षण है और हमारी क्षमताओं की एक झलक है। ये सभी अपनी राज्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे अपने राज्य के उत्पादों को प्रस्तुत करते हैं । यहाँ पर हाथ की कढ़ाई के परिधान, सजावटी उत्पाद, बैग, हाथ से बनी सूखी घास के डिब्बे और हाथ से बने गहने तथा विविध प्रकार के उत्पाद देखने को मिलते हैं । व्यापार मेला 2021 के मंच पर, सांस्कृतिक नृत्य प्रदर्शन ने बहुत सारे आगंतुकों को आकर्षित किया।

एक ही स्थान पर विभिन्न राज्यों के खाद्य पदार्थों को खरीदने के लिए व्यापार मेला एक आदर्श स्थान है। हम व्यापार मेले से उत्तराखंड की बाल मिठाई, कश्मीर के कहवा और केरल के फल हलवा खरीदना पसंद करते हैं।

मेला ऐसी छोटी पहलों को दृश्यता देता है और निवेशकों और खरीदारों से जुड़ने और उन तक पहुंचने का एक आदर्श अवसर है। इस तरह की कई चीजों को एक जगह देखना एक अद्भुत अनुभव है।

जिंदगी की कीमत

ऐश्वर्या बब्बर,
स्टेनोग्राफर,
महाप्रबंधक पश्चिमी डीएफसी-I सिविल
कॉर्पोरेट कार्यालय

घर के पिछवाड़े से
आ रही थी सिसकने की आवाज़
सिसक...सिसक...हिचक...हिचक... घबराई मैं
फिर खुद को संयत कर

चल पड़ी तेज़ कदमों से उस ओर
आख़िर है कौन? प्रत्युत्तर न मिला
साँझ थी मौन तभी दरख़्तों की ओट में
एक आकृति सी दिखी मैंने पूछा- हो कौन तुम?

रोती क्यों हो? दुःख क्या है?
संयम खोती क्यों हो?
बोली वो घुटने से सिर को उठाकर,
क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं हूँ भीतर तुम्हारे

मग़र शायद तुमने मुझे जाना नहीं ज़िन्दगी हूँ मैं।
दुखड़ा क्या कहूँ तंग हूँ मैं वजूद से अपने।
नहीं रहना चाहती तुम इंसानों के जग में।
पशुओं से, पक्षियों से, पेड़ों से, पत्तों से

मुझे कोई शिकायत नहीं, मग़र तुम क्रूरतम इंसानों
ने तो मेरी कोई कीमत ही नहीं।
बस! बहुत हुआ मुझे तुम लोगों के बीच नहीं आना
और अगर आना मज़बूरी है तो बदल दो मेरा नाम
मुझे ज़िन्दगी नहीं कहलाना।

छोटी सी ज़िंदगी है

सपना माहौर,
कार्यालय सहायक, मानव
संसाधन, कॉर्पोरेट कार्यालय

छोटी सी ज़िंदगी है ,
हर बात में खुश रहो।

जो पास में ना हों ,
उनकी आवाज़ में खुश रहो।

कोई रूठा हो तुमसे ,
उसके इस अंदाज़ में खुश रहो।

जो लौट के नहीं आने वाले हैं,
उन लम्हों की याद में खुश रहो।

कल किसने देखा है ,
अपने आज में खुश रहो।

खुशियों का इन्तजार किसलिए ,
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो

क्यूँ तड़पते हो हर पल किसी के साथ को ,
कभी तो अपने आप में खुश रहो।

छोटी सी ज़िंदगी है ,
हर हाल में खुश रहो।

हिंदी - डीएफसीसीआईएल और हम

सुरेश कुमार,
कार्यालय सहायक,
सूचना प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति का है। आज सूचना क्रांति ने संपूर्ण भूमंडल को समेट कर रख दिया है। राष्ट्रभाषा की जगह अब विश्वभाषा की चर्चा हो रही है। राष्ट्रीय स्तर से आगे बढ़कर एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ विविध मामलों में संपर्क कर सांस्कृतिक, वाणिज्यपरक तथा शैक्षणिक संबंधों को आगे बढ़ा रहे हैं।

कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी में भाषा भी एक मौन क्रांति बनकर सामने आई है। अभी तक भाषा को केवल मनुष्य की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता था लेकिन अब भाषा को कंप्यूटर व मशीन की मांगों को भी पूरा करना पड़ रहा है। नई मशीनरी संयंत्रों में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग और महत्व बढ़ा है। चूंकि हिंदी एक सशक्त भाषा है और सदियों से यह भारत के बहुभाषावादी देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा होने के साथ विश्व की तीन सबसे बड़ी भाषाओं के गौरव को भी प्राप्त किए हुए है। ऐसे में इसकी अनदेखी करना न किसी व्यक्ति के हित में है और न संस्थान के हित में। देखा जाए तो बीते पचास बर्षों में जो स्थान व सम्मान हिंदी ने बनाया है वह शायद ही किसी भाषा ने बनाया हो। हिंदी का महत्व इतना बढ़ा है कि विभिन्न राज्यों में स्थापित केंद्रीय हिंदी विश्व विद्यालयों में चाइना, अमेरिका व अन्य देशों से हिंदी सीखने वाले छात्रों के प्रवेश में हर वर्ष इजाफा हो रहा है। आज जब सबकुछ टेक्नोलॉजी के सहारे है तो जरुरत इस बात की भी बढ़ गई है टेक्नोलॉजी की भाषा को आम आदमी की पहुंच तक आसान बनाया जाए। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता लेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी। चूंकि हिंदी भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर बनाया गया है इसलिए देवनागरी लिपि कम्प्यूटर यंत्र की प्रक्रिया के अनुकूल है। कम्प्यूटर में हिंदी की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर डीएफसीसीआईएल ने भी इस ओर व्यापक कदम बढ़ाए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग व राजभाषा के सहयोग से डीएफसीसीआईएल के सभी विभाग में हिंदी में कार्य करना आसान हुआ है, जरुरत है तो बस हिंदी में कार्य करने की इच्छाशक्ति की।

कंप्यूटर में ऐसे करे हिंदी फोंट डाउनलोड: हिंदी टाइपिंग आने की स्थिति में

- http://10.199.6.169/ संबंधित कोड की मदद से गूगल क्रोम पर डीएफसीसीआईएल का इंट्रानेट खोलें।
- इंट्रानेट खुलते ही राजभाषा टैब में जाएं।
- यहां से कंप्यूटर की बिट के अनुसार हिंदी फांट डाउनलोड कर लें
- डाउनलोड करने के बाद इसे आईटी विभाग की मदद से इंस्टाल कर (गेल-की बोर्ड या अपनी सुविधा अनुसार की-बोर्ड सिलेक्ट कर) हिंदी टाइपिंग शुरू करें।

हिंदी टाइपिंग न आने की स्थिति में:

- http://10.199.6.169/ संबंधित कोड की मदद से गूगल क्रोम पर डीएफसीसीआईएल का इंट्रानेट खोलें।
- इंट्रानेट खुलते ही राजभाषा टैब में जाएं।
- यहां से तीसरे नंबर का सॉफ्टवेयर गूगल इनपुट टूल को डाउनलोड करें।
- आईटी विभाग की मदद से इंस्टाल करने के बाद इसे प्रयोग में लाएं।
- अंग्रेजी के शब्द जैसे अंग्रेजी में RAAM लिखने पर इसमें हिंदी में स्वत: ही **'राम'** आएगा।

- ऑनलाइन गूगल पर हिंदी इनपुट टूल सर्च कर ऑनलाइन पर हिंदी टाइपिंग की जा सकती है। यहां अंग्रेजी में टाइप करने पर हिंदी में लिखा जाएगा। जिसको कॉपी कर प्रयोग में लाया जा सकता है।

मोबाइल में ऐसे करें हिंदी टाइप

- प्ले स्टार पर जाएं यहां से गूगल इनपुट टूल डाउन लोड कर इंस्टाल करें।
- इंस्टाल कर यहां कीबोर्ड सिलेक्ट कर हिंदी का प्रयोग करें।
- यहां भी कंप्यूटर की तरह की हम यदि अंग्रेजी में Raam लिखेंगे तो हिंदी में राम आएगा। इस तरह आप भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में अपना सकारात्मक सहयोग दे सकते हैं। आइए मिलजुलकर अपना कर्तव्य निभाएं हिंदी माथे की बिंदी के संकल्प को साकार बनाएं। **जय हिंद, जय हिंदी।**

धरती पर खतरे में है जीवन !

अतुल परमार,
कॉर्पोरेट कार्यालय

पर्यावरण धरती पर रह रहे प्रत्येक जीव के विकास तथा उसके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, परंतु आज संसार में बढ़ रहे प्रदूषण के कारण प्रकृति और पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है। इसी कारण 2021 में 31 अक्टूबर से 12 नवंबर तक सीओपी 26 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन यूनाइटेड किंगडम में आयोजित किया गया है, जिसमें भारत सहित कई देशों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में 10 नवंबर, 2021 को ई-अमृत पोर्टल" नामक इलेट्रिक वाहन जागरुकता वेब पोर्टललांच किया गया। यह पोर्टल भारत सरकार ने यूनाइटेड किंगडम सरकार के सहयोग से विकसित किया है। इस पोर्टल में भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के संबंध में सभी जानकारी शामिल है। सीओपी सम्मेलन में विश्व के 100 से ज्यादा देशों ने वर्ष 2030 तक वन-कटाई समाप्त करने का संकल्प लिया है। वायु प्रदूषण का स्तर विश्व में खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष 7 मिलियन लोगों की घर के अंदर तथा बाहरी प्रदूषण के कारण मृत्यु हो जाती है। आज संसार में अत्यधिक मात्रा में प्रकृति के स्त्रोतों का प्रयोग किया जा रहा है। जिस कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण सुरक्षा के लिए निरंतर उपाय करने होंगे। जैसे वनों का विकास, वाहन प्रदूषण की रोकथाम ऊर्जा के लिए कोयले की जगह सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना आदि। इन सब बातों पर ध्यान देकर हम पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने में बड़ा योगदान दे सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि ग्लेशियर से अरबों टन बर्फ पिघलने से दुनिया का तापमान 0.4 डिग्री और ज्यादा बढ़ जाएगा इसकी वजह से उन्होंने चेताया है कि इससे तापमान वृद्धि का दुष्चक्र बन जाएगा। आर्कटिक इलाके में गर्मी के मौसम में बर्फीला समुद्री स्तर 1970 के दशक से हर दशक में 10 प्रतिशत कम हो रहा है। पश्चिमी अंटार्किटिका और ग्रीनलैंड में वर्फ की चादर तेजी से पिघल रही है। अंटार्किटिका और ग्रीनलैंड में अकेले ही इतनी ज्यादा बर्फ है कि वह महासागरों का जलस्तर 60मी. तक बढ़ाने में सक्षम है।

हमें धरती पर बिगड़ रहे पर्यावरण को रोकने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि धरती केवल मनुष्यों कि नहीं अपितु सभी जीव जंतुओं कि है जिसे जीवित रखने के लिए हर जीव का महत्वपूर्ण योगदान है।

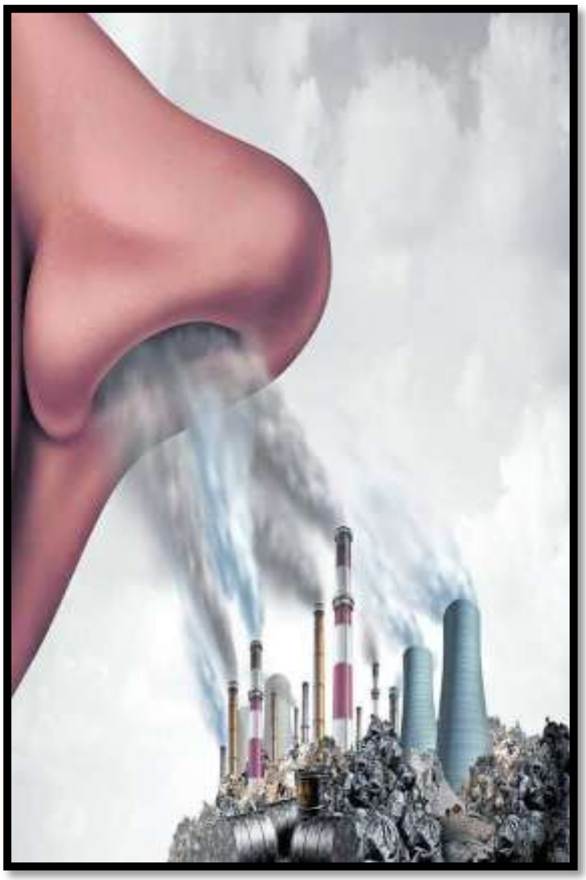

परोपकार से किसी की जिदंगी बदलना

सुरेंद्र कुमार
कार्यालय सहायक,
सतर्कता, कॉर्पो.कार्या.

एक गांव में एक व्यापारी अपने परिवार के साथ रहता था, जिसका नाम रोहित था। उसके पास काफी धन था। उसकी एक लड़की और दो लड़के थे, लेकिन दोनों लड़के अपने ही विचार से चलते थे। रोहित की यह आदत थी की वह किसी को भी परेशानी में नहीं देख सकता था, इसलिए अगर कोई भी उसके पास आता तो वह किसी को भी खाली हाथ नहीं जाने देता था, किसी की कोई भी जरूरत हो वह उसकी जरूरत को जरूर पूरा करता था। एक दिन रोहित के पास गांव के कुछ लोग आये और कहने लगे कि हमें बहुत परेशानी है अगर आप हमारी मदद कर दो तो आपकी अति कृपया होगी, रोहित ने उन्हें धन दे दिया और कहा कि अपनी परेशानी को दूर कर देना। लेकिन जब तुम्हारे पास धन हो तभी मुझे वापस देना, इस बात से परेशान कभी भी नहीं होना की मैं तुम्हे धन के लिए परेशान करूँगा।

रोहित की दुकान गांव में थी वह अक्सर दुकान का सामान लेने के लिए शहर जाया करता था। एक दिन वह अपने लड़के को दुकान पर बैठाकर शहर की ओर चल दिया, क्योंकि उसे कुछ जरूरी सामान दुकान के लिए लाना था। शहर में सामान लेने के बाद अचानक ही मौसम खराब हो गया था। उसे नहीं लग रहा था की वह अपने घर जा भी पायेगा, क्योंकि बारिश अब शुरू हो गयी थी। रोहित बहुत परेशान दिखाई दे रहा था, वह कही जा नहीं सकता था। शहर बाजार भी लगभग बंद हो चुका थे, शाम होने वाली थी, रोहित को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उसने एक छाता भी खरीद लिया था, मगर तेज बारिश में वह कही निकल नहीं पा रहा था। वह गांव जाने के लिए बस स्टेन्ड की ओर चल दिया तभी उसकी नज़र एक ऐसी जगह गयी जहां वह आसानी से खड़ा हो सकता था और बस का इंतज़ार कर सकता था। रोहित उस जगह पर चला गया था, उसने देखा की उस जगह पर कोई भीख मांगने वाला बैठा है। वह आदमी रोहित से कहने लगा की मुझे भूख लगी है, अगर तुम्हारे पास कुछ है तो मुझे दे सकते है। रोहित ने अपने लिए कुछ खाना रखा हुआ था, उसने खाना दे दिया, वह आदमी बहुत तेजी से खाना खाने लगा। रोहित को लगा कि वह बहुत भूखा है, इसलिए जल्दी-जल्दी खा रहा है। उसके बाद बारिश भी हल्की होने लगी थी, इतने में उसकी बस भी आ गयी। रोहित को लगा कि अब मुझे चलना चाहिए वह बस में बैठा और गांव की ओर निकल पड़ा।

अपने गांव के बस स्टेन्ड पर उतरने के बाद वह अपने घर की ओर जा रहा था, अब बारिश भी रुक गयी थी। मगर रोहित के पीछे-पीछे वह आदमी भी आ रहा था उसे लगा की हो सकता है की वह ऐसे ही घूम रहा हो। लेकिन रोहित ने देखा की वह आदमी तो उसी के पीछे ही आ रहा है। रोहित रुक गया और उससे पूछने लगा की तुम कहा जा रहे हो, वह आदमी कहने लगा की मैं आपके साथ ही जा रहा हूँ। मगर रोहित ने पूछा कि मेरे साथ में क्यों, वह आदमी कहने लगा की मैं उस आदमी के साथ जा रहा हूँ, जो बहुत ही अच्छा है, जिसने मुझे खाना खिलाया। इस शहर की दुनिया में तो मांगने पर भी कुछ नहीं मिलता है, मगर आपसे मांगने पर तो मुझे खाना ही मिल गया था, मुझे शहर में काफी दिनों तक भूखा सोना पड़ता है।

रोहित की आँखों में आंसू थे, उसकी बातें सुनकर रोहित को लगा की इसकी मदद करनी चाहिए, इसलिए वह उस आदमी को अपने साथ घर

ले गया। जब रोहित घर आया तो कहने लगा की अब से तुम मेरे साथ में ही रहोगे और यही पर काम भी करोगे अब तुम्हे खाने की चिंता नहीं होगी, रोहित की एक अच्छाई ने एक इंसान की जिंदगी ही बदल दी थी, हमे भी जीवन में सबकी मदद करते हुए ही चलना चाहिए।

अंत में, मुझे यही कहना कि परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है। परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई करना। परोपकार ऐसा कार्य है, जिससे शत्रु भी मित्र बन जाता है। यदि शत्रु पर विपत्ति के समय उपकार किया जाए तो वह भी सच्चा मित्र बन सकता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शुभ कर्म करने वालों का न यहां और न ही परलोक में विनाश होता है। शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है। सच्चा परोपकारी वही व्यक्ति है जो प्रतिफल की भावना न रखते हुए परोपकार करता है।

राहुल कुमार,
कार्यालय सहायक,
कॉर्पोरेट कार्यालय

पिता

झुक जायेगा पर्वत भी
जब सुनेगा पिता के बाहुबल की गाथा
क्योंकि वो दिखते तो दृढ़ हैं
हमें बिना बताये,पार कराते समुद्र,सी बाधा

मरुस्थल से रूखे हैं,ये कहते सभी बार-बार
पर न पहुँचने देते अपने पुष्पों को हानि
जैसे खड़ा रहता नागफनी तपती गर्मी में
अनेकों फूलों को कर खुद पर सवार

कहते इनको पत्थर दिल हैं ये
पर तपती गर्मी में देते आराम
आँधी तूफ़ान या बारिश
बचाए रखते परिवार को बनकर खपरैल- पाषाण

थक कर मन करता इनका भी कि
लोहद्वार लगा चैन से सो जाएं
पर चमकाने उसे घर के सितारे दुनिया में
जो सिर्फ़ काँच के दरवाज़े से नजर आयें

नागफनी से काँटे इनमें,खपरैल से कठोर दिखते
लौह बना खुद को ,काँच से टूट अंदर बिखरते
बाधाओं में पर्वत बन समक्ष खड़े रहते
परिवार की ताक़त,सबके पापा ऐसे होते हैं।

हिंदी वह भाषा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी। - *डॉ. जाकिर हुसैन*

मां और बेटी

संदीप सिंघल,
कार्यालय सहायक, सेमू

आज हमारे समाज मे ना जाने कितनी बेटियों को गरीबी के कारण पढ़ाया नहीं जाता सिर्फ ये कह कर कि पढ़-लिख कर क्या करेगी पैदा होते ही परायी का ठप्पा उसके नामकरण से पहले लग जाता है बचपन से ही हर बात पर टोका जाता है ये कर लो वरना ससुराल वाले क्या कहेंगे लड़की के पैदा होते ही माँ बाप उसकी शादी के लिये पैसे जोड़ना शुरू कर देते हैं। ऐसी ही गरीब लड़कीयो की कहानी है जिनके माता पिता बहुत गरीब थे और बेटे की आस में भगवान ने उनको चार बेटियो का सुख दिया मगर बेटा नही दिया। उनका मानना था कि घर में बेटा होगा तो हमारी गरीबी दूर करेगा माता-पिता बचपन से ही बेटियों की हर इच्छा को पूरी करने की कोशिश करते थे। जैसे-जैसे समय गुजरता गया लड़कियां एक के बाद एक उम्र के पायदान पर चढ़ने लगी और मगर गरीबी के कारण उन्हे वह उच्च शिक्षा नहीं दे सकते थे बस उन्हे समझ आया तो बस पैसा चार बच्चों के पिता की परेशानी माँ के चेहरे पर नजर आती पैसों की कमी ने लड़कीयों को बेहद मिलनसार और समझदार बना दिया चारों बेटियां घर में ही कुछ काम करके अपने परिवार का गुजर-बसर कर रही थीं समय गुजरता गया और उनके माता पिता ने दो लड़कियों की एक ही परिवार के दो लड़को से शादी कर दी। मगर शादी के बाद लड़कियों के परिवार में कर्ज काफी हो गया था जिसको उतारने के लिए लड़कियों के पिता दिन रात मेहनत करने लगे कुछ वर्षो के बाद लड़कियों के पिता का देहांत हो गया और सारी जिम्मेदारी लड़कियों और उनकी माँ पर आ गई उसके बाद उनके परिवार की सबसे छोटी बेटी ने घर से बहार निकल कर काम करने का फैसला लिया और उसे एक फैक्टरी में काम मिल गया जिंदगी को जीने की दौड़ कई कदम आगे निकल गयी जो उम्र सपने देखने की थी वो एक मजदूरी बदल गयी लेकिन बदल गया घर का हिसाब-किताब उसके दम पर घर का खर्चा चल निकला और अपनी बड़ी बहन की शादी भी माध्यम वर्गीय परिवार में कर दी मगर समस्या अभी ख़त्म नहीं हुई थी क्योंकि उसकी माँ को उसकी शादी की चिन्ता सताने लगी थी और यह समस्या धीरे-धीरे करीब आने लगी शादी और शादी का खर्चा उसने मन सोच लिया चाहे जो हो जाए वह शादी नहीं करेगी बिना पैसों के शादी भी मुश्किल जिस घर में रोटी ही उसके दम पर चल रही हो वहाँ शादी का खर्चा तो एक दम भयावह स्वप्न की तरह से लगता एक दिन उच्च घराने से कोई शादी की बात करने उसके घर पहुँच गया लेकिन वह पहले से शादी शुदा था उस लड़के की पत्नी की बीमारी के कारण मृत्यु हो गयी थी वो अपनी ग्यारह साल और सात साल की दो बेटियों को उसके पास छोड़ गई थी एक साल गुजर गया और वह अपनी दोनों बेटियों को लेकर परेशान था जब वह खाना बनाता तो दोनों बेटियाँ उसकी मदद करने की कोशिश करने लग जाती दो बेटियों की ज़िम्मेदारी आसान न थी कोई गरीबी का सौदा कर ले तो बात बन जाये वैसे तो शादी मुश्किल ही थी लड़की की माँ उस दिन जी भर कर रोई लेकिन लड़की का दिल आज पत्थर का बन गया और उसने कुछ दिन का समय माँग लिया बहुत सोच विचार करने के बाद एक बात तो साफ हो चली कि कोई रिश्ता इस टक्कर का उसे मिलने वाला नहीं था अगर उसकी शादी होती तो एक मजदूर या कोई छोटे दुकानदार से हो सकती थी और वह पूरे एक महीने तक हिसाब लगाती रही कि क्या खो सकता है ओर क्या मिल सकता है और खोने - पाने का हिसाब आज भरी पड़ गया माँ ने भाग्य मान लिया बेटी का विवाह हो जाये वही काफी था पिता पहले ही स्वर्ग सिधार गये थे और ने लड़की विवाह के लिये हाँ कर दी और उसका विवाह उस अमीर लड़के के साथ हो गया पहचान बन गयी मन भी अब भावहीन हो चला फिर आने वाले समय वो नहीं था जो लगता था, संघर्ष तो अभी था लेकिन

इसका परिणाम अब उज्वल हो चला आठवीं पास और मजदूर लड़की एक दिन शिक्षा प्राप्त मजदूरों से काम लेने वाले बड़े घर की बहू बन गयी और अपने पति की पहली दो बेटियों की ज़िम्मेदारी को अपनी बेटियों की तरह पालने लगी बेटिया भी अपनी नई माँ के साथ बहुत खुश थी क्योंकि वह पहले वाली माँ से ज्यादा प्यार करती थी उधर उसके पति का एक साल में बिजनेस काफी खराब हो गया था और वह काफी परेशान रहने लगा था सब कहते हैं कि समय बड़ा बलवान होता है एक-एक दिन महीनों में फिर साल में बदल गया एक बात लड़की की समझ मे बहुत तेजी से आई कि व्यापार चल तो बहुत रहा था लेकिन उतना पैसा नहीं आ रहा था उसके पति कि हर किसी की मदद करने की आदत और बहुत ज्यादा प्रयत्न नहीं कर पाना एक गंभीर समस्या बनी हुई थी और लड़की ने मन में ठान ली अगर मजदूरी किसी और की फेक्टरी में की जा सकती थी तो अपनी फेक्टरी में क्यूँ नहीं बस मन ही मन उसने विचार किया की वह भी अपने पति के काम मे हाथ बटाएगी और उसने अपने पति से यह बात की घर में सभी को पैसों की बहुत जरूरत थी। उसकी हिम्मत देखकर हर कोई दंग रह गया तरीके निकाले गए और परिणाम कुछ महीनों में ही नजर आ गया। आगे बढ़ने के सपने जो उस की आँखों में थे वह कोई सोच पाने कि हालत में भी नहीं था। अचानक एक दिन उसको महसूस हुआ की वह माँ बनने वाली है लेकिन इतनी जल्दी ये न सोचा कभी और न जाने कैसे मन को ये भी लग गया कि आने वाली एक बेटी है बेटियाँ तो पहले ही दो-दो घर मे पहले से थीं बस मन ही मन फैसला कर लिया की वह माँ नही बनेगी और अपने पति से बताया तो उसके पति ने समझाया की यह गलत है जो भाग्य को मंजूर बस वही होगा और एक दिन घर में एक और बेटी ने जन्म लिया।

जिस दिन बेटी का जन्म हुआ उसके पति को एक बड़ा ऑर्डर मिला और काम की कमी न रही और अब उसकी दो नही तीन बेटियाँ है। और वह उन तीनों बेटियों का लालन पोषण बड़ी अच्छी तरह से करने लगी। वह लड़की जो पहले बेटी थी अब माँ है उसने फैसला लिया कि अपनी तीनो बेटियों को उच्च शिक्षा दिलाकर बेटियों का जीवन सफल बनाएगी तकि कोई परिवार में या समाज में यह ना कह पाए कि उसने न्याय नही किया आज हम लोगो को अपनी मानसिकता बदलनी होगी क्योकि बेटियाँ किसी पर बोझ नही होती।

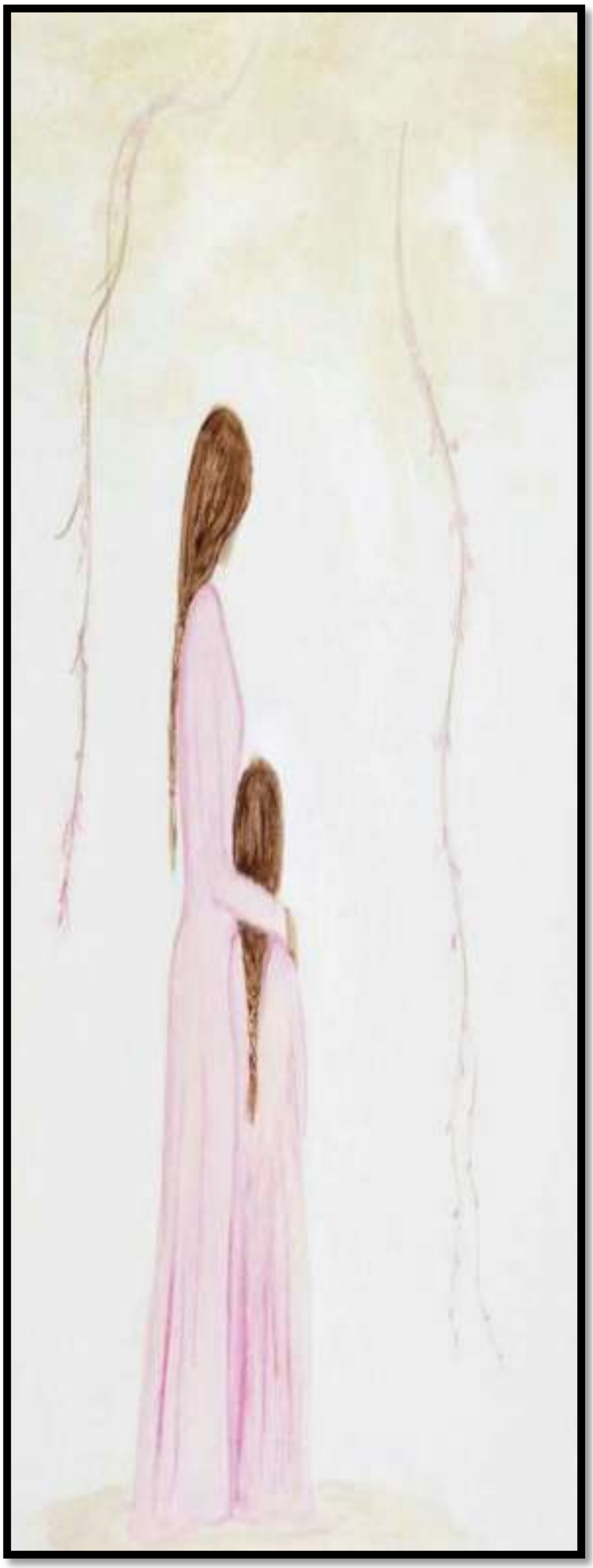

प्रेम और सच्चाई की ताकत

हेमलता,
कार्यालय सहायक,
वित्त

एक राज्य में एक बड़ा ही बलशाली व लोकप्रिय राजा राज्य किया करता था। उसका राज्य व प्रजा बहुत ही समृद्ध व शांतिपूर्ण था। राज्य का विस्तार होने के साथ ही राजा में घमंड आने लगा। राजा के व्यवहार में परिवर्तन के साथ ही प्रजा भी धीरे- धीरे स्वार्थी व ईष्यालु होने लगे। राज भवन में भी ऐसे लोगों की संख्या बढ़ने लगी, परन्तु राजा कुछ भी करने में असमर्थ था।

एक बार राज्य में बहुत भीषण ठण्ड पड़ी। सब काम ठप पड़ गये। ठंड से बचने के लिए लोग दिन-रात कोयला जलाते जिससे पूरे राज्य में कोयले की कमी हो गयी। राज भवन भी इस समस्या से अछूता न रहा। ठण्ड से बचने के लिए कई प्रकार के उपाय सोचे जाने लगे, पर कोई भी उपाय कारगर साबित न हुआ। राजा तक बात पहुँच गयी तो राजा ने सभा बुलवाई। सभी से कोई उपाय बताने को कहा गया। कोई मंत्री कुछ कहता तो कोई कुछ, सब एक दूसरे की काट में लगे रहे, एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहे, खुद के लिए सोचते पर राज्य और प्रजा की भलाई की बात किसी को याद ही नहीं थी। राज्य में एक मंत्री थे जो पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्तव्य का पालन करते थे, उन्होंने कहा, मैं एक महात्मा को जानता हूँ जो हमारी समस्या का समाधान बता सकते है, यदि आपकी स्वीकृति हो तो मैं उन्हें यहाँ ले आऊँ महाराज। राजा को यह बात अच्छी लगी और उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी। अगले दिन मंत्री जी महात्मा को लेकर राज भवन में उपस्थित हो गये। महात्मा में पूरे राज भवन का अवलोकन किया तत्पश्चात राज दरबार में आये व राजा को संबोधित करते हुए कहने लगे , "राजन! समस्त प्रजा और राज भवन के कर्मचारी झूठ बोलते है, एक-दूसरे को नीचा दिखाते है, स्वार्थी है व ईर्ष्या करते है जिस कारण राज भवन में यह परेशानी है और तो और पूरे राज्य को ऐसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।" सभी लोग एक दूसरे को देखने लगे और महात्मा से इस समस्या का निवारण करने की प्रार्थना करने लगे। महात्मा बोले इस समस्या का एक ही निदान है, आप पूरे राज्य में एक ऐसे घर, जिसमें सभी निस्वार्थ हो और झूठ ना बोलते हो, वहां से एक जलता हुआ कोयला लाकर राज भवन की चिमनी में रख दे तो राज भवन के साथ राज्य पर से भी ठण्ड का प्रकोप दूर हो जाएगा। पर कोयला लाते समय यह ध्यान रखे की कोयला देने वाला अपनी स्वीकृति से बिना मूल्य के ही कोयला दे तो ही राज भवन के साथ-साथ पूरे राज्य में ये समस्या समाप्त हो पाएगी। ऐसा कहकर महात्मा ने प्रस्थान किया। अब राजा ने सभी राजकर्मियों को आदेश देते हुए कहा की अति शीघ्र ही ये कार्य आरम्भ किया जाए। सब राज कर्मी एक घर से दूसरे घर कोयला मांगने निकल पड़े। यह देख की राजा ने ऐसा आदेश दिया है तो जरूर ही कोई बात होगी, लोग कोयले के बदले पुरस्कार, उपहार व पद की मांग करने लगे। जो यह कहता उस घर से कोयला नहीं लेना था। सो राजकर्मियों को ज्यादा ही मेहनत करनी पड़ रही थी। कई दिन हो गये पर राजकर्मियों को ऐसा घर नहीं मिला जैसा महात्मा ने बताया था। धीरे-धीरे सब निराश होने लगे पर एक दरबान, जो की आशावादी था, रात को नींद न आने के कारण पहरा दे रहा था की उसे दूर एक छोटा सा घर दिखाई पड़ा। घर से तेज रोशनी निकल रही थी। दरबान जिज्ञासा शांत करने के लिए उस घर की तरफ निकल गया। घर के दरवाजे पर पहुंचकर दरवाजा खटखटाया तो एक छोटी सी लड़की बाहर आई व दरबान से इतनी रात को आने का कारण पूछने लगी। दरबान के कहने से पहले ही वह कहती है, "आप ठण्ड में बहुत देर से खड़े है कृपा पहले अंदर आ जाए।" दरबान अंदर आकर घर की हालत

देखता है तो बड़ा दुःखी होता है, घर में वह अकेली रहती थी, व बहुत गरीबी में अपने दिन काट रही थी घर में कोयला भी खत्म होने को ही था। साथ ही साथ दरबान चकित भी था कि पूरे राज्य में सिर्फ यही लड़की है जिसने मुझे अंदर आने को कहा। वह अंदर आकर अपनी बात शुरू करता ही है की छोटी लड़की उसके लिए काढ़ा बना लाती है जिससे दरबान बड़ा ही खुश हो जाता है। अब वह अपनी बात पूरी करता है और बताता है की क्यूँ राज्य की हालत ऐसी है और उसका उपाय क्या है | छोटी लड़की बोलती है, बस इतनी सी बात है, यदि मेरे घर के कोयले से राज्य की समस्या का समाधान होता है तो आप मेरे घर में रखा सारा कोयला ले जाए, मैं स्वेच्छा से अपने घर का जलता हुआ कोयला आपको दान में देती हूँ।

यह सुनकर दरबान की आंखे नम हो गयी, वह कुछ समय और वहां रहना चाहता था पर समय की कमी और राजाज्ञा के आगे बेबस था। उसने तुरंत ही अपनी चिमनी में उस घर का जलता हुआ कोयला रखा। उसे डर था की यह जलता हुआ छोटा सा कोयला कहीं रस्ते में ही बुझ न जाए इसलिए बिना देरी किये वह तेजी से राज भवन की तरफ निकल पड़ा।

जितना वह राज भवन के निकट आता जाता वह कोयला उतना ही तीव्र जलता और उसका प्रकाश चारों और फैल जाता जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश दरबान चकित होने के साथ ही खुश भी होता है। काफी देर चलने के बाद वह राज भवन पहुँच जाता है और जाते ही वह राजा को सूचित करता है, राजा भवन की चिमनी में वह कोयला रखते है और पूरा भवन प्रकाशमान हो जाता है। भवन के वातावरण में अचानक परिवर्तन होने लगता है और अगली सुबह से ठण्ड पड़नी कम हो जाती है। राजा और प्रजा को प्रसन्नता होती है। कुछ दिनों बाद राज्य में समारोह का आयोजन होता है और राजा सबको सम्बोधित करते हुए उस छोटी लड़की को बुलाते है और सबको उसकी प्रेरणादायक बातें बताते है कि कैसे उस छोटी लड़की ने पूरे राज्य की रक्षा की कडकडाती ठण्ड से। राजा ने उस छोटी लड़की पुरस्कृत किया। इस प्रकार वह लड़की राज्य का गौरव बनी और सबको प्रेम करने और निस्वार्थ रहने की शिक्षा दे गई।

शिक्षा:- हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा निस्वार्थ भावना से मानवता की सेवा करनी चाहिए। ईर्ष्या व असत्य कभी स्थिर नहीं रहता।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है। - ***लोकमान्य तिलक***

आधिकारिक भाषा हिंदी के सफर पर एक नजर

रोहताश, नाराणियां,
कार्यकारी वित्त विभाग,
कॉर्पो. कार्या.

किसी भी राष्ट्र की पहचान विश्व में उसकी भाषा से होती है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जहां अलग-अलग धर्मों, समुदायों के लोग रहते हैं और इसमें भी अलग-अलग प्रान्तों की भाषाएं भी भिन्न हैं। ऐसे में हिंदी ही एक मात्र भाषा है जो सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसे 14 सितंबर, 1949 राजभाषा हिंदी का दर्जा मिला और संविधान के भाग-17 में इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण प्रावधान किए गए। इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण वर्ष 1953 से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस'और 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1975 में आयोजित पहले चार दिवशीय (10-14 जनवरी)विश्व हिंदी दिवस का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने नागपुर में किया।

हिंदी भारतीय गणराज्य की राजकीय और मध्य भारत की आर्य भाषा है। आज हिंदी विश्व में एक अलग पहचान बनाने की दिशा में अग्रसर है। हिंदी की प्रमुख बोलियों में अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, छत्तीसगढ़ी, गढ़वाली, हरियाणवी, कुमांऊनी, मगधी और मारवाड़ी भाषा शामिल है। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिलने तक के सफर पर नजर डालें तो साल 1947 में जब अंग्रेजी हुकूमत से भारत आजाद हुआ तब भाषा को लेकर सबसे बड़ा सवाल था। क्योंकि भारत में सैकड़ों भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। ऐसे में कौन-सी राष्ट्रभाषा चुनी जाए, ये काफी अहम मुद्दा था। काफी सोच विचार के बाद हिंदी और अंग्रेजी को नए राष्ट्र की भाषा चुना गया। संविधान सभा ने देवनागरी लिपी में लिखी हिंदी को अंग्रेजों के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी।

विदित हो कि 26 जनवरी, 1950 को जब हमारा संविधान लागू हुआ तो इसमें देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी सहित 14 भाषाओं को आठवीं सूची में आधिकारिक भाषाओं के रूप में रखा गया था। संविधान के मुताबिक 26 जनवरी, 1965 में हिंदी को अंग्रेजी के स्थान पर देश की आधिकारिक भाषा बनना था और उसके बाद हिंदी में ही विभिन्न राज्यों और केंद्र को परस्पर पर संवाद करना था। ऐसा आसानी से हो सके इसके लिए संविधान में सन् 1955 और 1960 में राजभाषा आयोग को बनाने की भी बात कही गई थी और इसे हिंदी के विकास के संदर्भ में रिपोर्ट देनी थी। इस रिपोर्ट के आधार पर संसद की संयुक्त समिति के द्वारा राष्ट्रपति को इस संबंध में कुछ सिफारिशें करनी

थीं। लेकिन दक्षिण भारत के राज्यों में रहने वालों को डर था कि हिंदी के लागू हो जाने से वे उत्तर भारतीयों के मुकाबले विभिन्न क्षेत्रों में कमजोर स्थिति में हो जाएंगे। हिंदी को लागू करने और न करने के आंदोलनों के बीच वर्ष 1963 में 'राजभाषा कानून' पारित किया गया, जिसने 1965 के बाद अंग्रेजी को राजभाषा के तौर पर इस्तेमाल न करने की पाबंदी को खत्म कर दिया।आंखिरकार वह दिन आ ही गया जब 26 जनवरी, 1965 को हिंदी देश की राजभाषा बनी। इसके बाद दक्षिण भारत के राज्यों-खास तौर पर तमिलनाडु तब मद्रास हुआ करता था में, आंदोलनों और हिंसा का एक जबरदस्त दौर चला और इस हिंसा में कई छात्रों ने आत्मदाह तक कर ली थी। तात्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में सूचना और प्रसारण मंत्री रहीं इंदिरा गांधी के प्रयासों से इस समस्या का समाधान ढूंढा गया जिसकी परिणति 1967 में राजभाषा कानून में संशोधन के रूप में हुई।
उल्लेखनीय है कि इस संशोधन के जरिए अंग्रेजी को देश की राजभाषा के रूप में तब तक आवश्यक मान लिया गया जब तक कि गैर-हिंदी भाषी राज्य ऐसा चाहते हों। दरअसल, उत्तर भारत के लगभग सभी हिस्सों में साधारण लोगों की बोलचाल, पढ़ाई-लिखाई से लेकर संस्थागत स्तर तक हिंदी को जगह मिली हुई है। लेकिन, इसके अलावा भी देश के ज्यादातर इलाकों में हिंदी ने जो जगह बनाई है,उसमें इसके विकास और प्रसार की बड़ी संभावनाएं हैं। पर यह तभी संभव हो पाएगा जब सरकार के स्तर पर इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाएगा और कुछ मामलों में इसे अनिवार्य भी बनाया जाएगा।

कॉर्पोरेट कार्यालय में हिंदी के प्रयोग प्रसार हेतु हस्ताक्षर अभियान में सहभागिता करते कर्मचारी

कॉर्पोरेट कार्यालय में भारतीय भाषाओं में आयोजित काव्य पाठ में सहभागिता करते प्रबंध निदेशक व काव्य पाठ करते अधिकारीगण कर्मचारीगण

प्रदूषण

हरलीन कौर,
स्टेनोग्राफर,
समूह महाप्रबंधक, यांत्रिक

'प्रदूषण' शब्द का अभिप्राय है- दोष से युक्त होना। अर्थात प्राकृतिक पर्यावरण में विकार उत्पन्न होना। आज नगरों में प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण औद्योगिक विकास है। नए-नए कारखाने लगाये जा रहे हैं। इन फैक्ट्रियों की नींव से उड़ता हुआ धुआं पर्यावरण में जहर फैला देता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भवन निर्माण का काम तेजी से चल रहा है। जहां पर दस को रहना चाहिए, वहां पर 100 लोग रहने को मजबूर हैं। बस रेलों व कल-कारखानों के कारण वायु में कार्बन मोनो ऑक्साइड की मात्रा काफी बढ़ती जा रही है। जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हवाई जहाज, तेल शोधन, चीनी मिलें, चमड़ा, कागज के कारखाने ईंधन की सहायता से चलाए जाते हैं। उन से पैदा होने वाला धुआँ प्रदूषण फैलाता है, विशेषकर घनी आबादी वाले क्षेत्र इससे अत्यधिक प्रभावित हो रहे हैं। वायु में ऑक्सीजन की मात्रा घटती जा रही है और प्रदूषण फैलता जा रहा है। जिसे तरह-तरह के रोग उत्पन्न हो रहे हैं। यह सत्य है कि जैसा व्यवहार हम प्रकृति के साथ करेंगे वैसा ही बदले में हमें प्रकृति से मिलेगा। कोरोनाकाल के लॉकडाउन के समय को याद कर सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति की सुंदरता सभी ने देखी थी, जब मानव निर्मित सभी चीज़ें (वाहन, फैक्ट्रियाँ, मशीनें आदि) बंद थीं और भारत में प्रदूषण का स्तर कुछ दिनों के लिए काफी कम हो गया था या कहें तो, लगभग शून्य ही हो गया था। समय-समय पर हो रहीं प्राकृतिक घटनाओं, आपदाओं, महामारियों आदि के माध्यम से प्रकृति हमें सचेत कर रही है।

प्रदूषण के प्रकार- प्रदूषण को मुख्यतः तीन भागों में बांट सकते हैं। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। प्रदूषण इन तीनों में किसी भी रूप में हो वह प्रकृति के साथ-साथ मनुष्य के लिए भी घातक है। प्रदूषण के कारण सूर्य की पराबैगनी किरणों को धरती पर आने से रोकने वाली ओजोन परत में भी छिद्र होने लगे हैं। कहा जाता है कि जापान का 'टोक्यो' शहर सर्वाधिक प्रदूषित नगर है। यहां पुलिस अधिकारी आवश्यकता पड़ने पर ऑक्सीजन सिलेंडर का प्रयोग करते हैं। हमारे वायुमंडल में विभिन्न प्रकार की गैसे होती हैं। इनकी मात्रा में संतुलन होना नितांत आवश्यक है। हानिकारक गैस हमारे लिए घातक होती है। गैस संबंधी पदार्थ अक्सर एलम्युनियम के कारखानों में होते हैं। इन गैसों के प्रभाव से पेड़ पौधों के पत्ते तक झड़ जाते हैं। जल मानव के लिए जीवन है। कई पर्यावरणविद इस बात पर भी चिंता जाहिर कर चुके हैं कि अगला युद्ध कहीं पानी के लिए न हो। वायु प्रदूषण के समान जल प्रदूषण भी हमारे लिए घातक है। महानगरों व औद्योगिक नगरों में भूमि के गर्भ का जल प्रदूषण के कारण दूषित हो गया है यहां शुद्ध पेयजल तक उपलब्ध नहीं है। प्रदूषण का लेवल इस कदर है कि हमारी मां व संस्कृति की धरोहर कही जाने वाली गंगा-जमुना तक दूषित हो गई हैं कहीं-कही इन दोनों नदियों का जल आचमन के योग्य भी नहीं है। महानगरों में चलने वाले लाउडस्पीकर तथा बड़ी-बड़ी मशीनों का शोर ध्वनि प्रदूषण का बढ़ावा देता है। ध्वनि प्रदूषण से मानव की श्रवण शक्ति घटती है और मस्तिष्क भी प्रभावित होता है। इस प्रदूषण के कारण धीरे-धीरे मानव की सोचने की शक्ति नष्ट होने लगती है।

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा

चित्रा सिंह,
स्टेनोग्राफर,
कॉर्पो.कार्या.

ऑनलाइन शिक्षा वर्तमान युग में अत्यंत आवश्यक है, यह बात कोरोना काल में सिद्ध हो चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति को कोरोना वायरस के कारण दुनिया में उत्पन्न संकटों के विषय में जानकारी है। इसी के चलते शिक्षा प्रणाली, औद्योगिक प्रणाली एवं समस्त कार्य प्रणाली का विकास रुक चुका है। संपूर्ण विश्व में समय समय पर लॉकडाउन लगाया गया। ओमीक्रॉन के खतरे के बाद फिर से यह स्थिति निकट भविष्य में नजर आने लगी है। लॉकडाउन की अवधि में छात्रों की पढ़ाई के लिए ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान के रूप में उभर कर सामने आई। आज की वर्तमान स्थिति में बच्चे स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे है लेकिन ऑनलाइन शिक्षा ने रास्ता काफी आसान कर दिया है। बच्चे निश्चिंत होकर घर पर अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे है। कुछ बच्चे दूर शिक्षकों के घर या कोचिंग संगठनों में जाकर पढ़ाई नहीं कर पाते है। वह ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अपनी पढ़ाई पूरी करते है और परीक्षा देकर ऑनलाइन डिग्री हासिल कर लेते है। आजकल ज़्यादातर प्रोफेशनल कोर्सेज ऑनलाइन होती है। विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ते है और ऑनलाइन परीक्षा देकर अपनी निश्चित डिग्री प्राप्त कर लेते है। यूपीएससी की तैयारी कराने वाले कोचिंग सेंटर भी अपने पेनड्राइव कोर्स से प्रतियोगी छात्रों के बीच आए हैं। पेनड्राइव कोर्स के माध्यम से वह घर बैठे ही क्लास जैसे महौल का महसूर कर पढ़ाई कर अपने सपनों को पंख दे सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा की वजह से विद्यार्थियों को कहीं जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा के समय की बचत हो जाती है। अपने सुविधा अनुसार छात्र समय का चुनाव कर ऑनलाइन क्लासेज में शामिल हो जाते है। ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थी शिक्षक द्वारा ली गयी क्लास को रिकॉर्ड कर सकते है। जिससे कक्षा के पश्चात विद्यार्थी रिकॉर्डिंग को पुनः सुन सकते है और कहीं शंका हो तो बेझिझक शिक्षक से दूसरे क्लास में पूछ सकते है। सिविल सेवा परीक्षा और इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसी पढ़ाई शिक्षा संस्थानों में नहीं बल्कि ऑनलाइन हो रही है। ऑनलाइन शिक्षा की तरफ लोग आकर्षित हो रहे है ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन नहीं है। उनके पास कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा इत्यादि नहीं है। हर परिवार इंटरनेट का खर्चा नहीं उठा पाता है इसलिए लॉकडाउन जैसी परिस्थितियों में उन छात्रों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का आरंभ सन् 1993 में हुआ था। इंटरनेट का प्रयोग बढ़ने के साथ साथ ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को भी हवा मिलने लगी। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत निर्भर होने लगी, ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली प्रत्येक छात्र की अहम जरूरत बनना शुरू हो गई है। ऑनलाइन के रास्ते में अभी भी बहुत जगह इंटरनेट की असुविधा व बुनियादी ज्ञान का अभाव रोड़ा बना है। बड़ी संख्या में देश में गांव के गांव ऐसे है जहां की बड़ी आबादी शिक्षित नहीं है उनके पास मोबाइल, लैपटॉप आदि नहीं है। उनके लिए यह बड़ी चुनौती से कम नहीं। वहीं ऑनलाइन शिक्षा पद्धति स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है, अधिक समय से मोबाइल से जुड़े रहने पर इसका आंखों पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

जल है तो कल है

गौरीशंकर शर्मा,
कार्यालय सहायक, पुस्तकालय

जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जल है कल है, इसका अर्थ है कि जहां पानी होगा वहां ही कल होगा यानि की जीवन होगा। ब्रह्मांड में पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जहां पर जल है। जल प्रकृति की अनमोल देन है, तो हमें इसका सम्मान करना चाहिए न ही इसको व्यर्थ में समाप्त करना चाहिए। मनुष्य, जानवरों, पेड़-पौधों सभी के जीवन में जल का उपयोग होता है, जल के बिना जीवन असंभव है। अगर किसी भी कारण से जल खत्म होता है तो कोई भी जीव जीवित नहीं रहेगा। जल संरक्षण के बारे में गंभीरता से विचार की जरुरत अभी है चूंकि आने वाला जीवन जल पर ही टिका है। जिस तेजी से पृथ्वी से भू-गर्व जल की मात्रा कम हो रही है यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भविष्य में पृथ्वी के आंचल में पेयजल शेष ही न बचे।

महात्मागांधी ने कहा था कि प्रकृति सभी की आवश्यकताएं पूरी कर सकती है लेकिन किसी का लालच नहीं लेकिन लालची मनुष्य ने अपनी अनावश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस प्रकार प्रकृति का दोहन किया है और जिस तेजी से यह दोहन बड़ रहा है वह भविष्य में पृथ्वी जैसे ग्रह से मानव अस्तित्व पर ही संकट पैदा कर सकता है। फैक्ट्रियों, सीवर का पानी जल को प्रदूषण कर रहा है, इससे सिर्फ जल ही नहीं भूमि एवं वायु प्रदूषण भी बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी पानी के संरक्षण को लेकर चिंता जाहिर कर चुके हैं। जल संरक्षण हेतु ही उन्होंने जल शक्ति मंत्रालय द्वारा हाल ही में शुरू किए गए अभियान **"कैच द रेन"** की घोषणा की। इसके तहत बारिश के जल को सहेजने व गंदे जल को रिसाइकिल कर अन्य प्रयोग में लाने की बात कही। इस बात पर भी जोर दिया कि मनरेगा के तहत वर्षा

जल संरक्षण पर भी खर्च किया जाए। जल संरक्षण के प्रयासों में महिलाओं को शामिल किए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। चूंकि यह भविष्य में एक बड़ा संकट पैदा कर सकता है, इसलिए सरकार शहरों और गांवों में जल संचयन और प्रंबधन के लिए कई योजनाएं ला रही है। अतः लोगों को उस ओर ध्यान देना चाहिए। अब सवाल है कि हम क्या करे कि जल संरक्षण में हमारा भी योगदान हो। आप छोटे-छोटे उपाय अपनाकर जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हम सभी पानी को बचाने के लिए सर्वप्रथम अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य समझें। प्रयास करें कि न जल को स्वयं खराब करें और न करने दें। सरकार द्वारा चलाए जा रहे जल बचाने से संबंधित उपायों का अध्यन कर अपनी भी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करें। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में व्यापक जनजागरुकता अभियान चलाएं। जल स्त्रोतों की देखभाल करना, पाइपलाइन लीकेज को तत्काल ठीक कराना, जल संरक्षण हेतु गांवो में तालाब बनाए, वृक्षारोपण कार्यक्रम हेतु जागरूकता लाई जाए इन सब प्रयासों से भी हम बड़ी संख्या में जल को सहेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विश्व पटल पर हिंदी

नंदू पांडेय,
कार्यालय सहायक,
वित्त विभाग

आज भारत ही नहीं समूचे विश्व में हिंदी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को लेकर किए गए सतत प्रयासों से विश्व में हिंदी को जो स्थान मिला है वह हिंदी प्रेमियों समेत पूरे भारत को गौरवान्वित करता है। विदेशों में भी हिंदी प्रेमियों की संख्या कम नहीं हैं। हिंदी विश्व की चौथी ऐसी भाषा है जिसके बोलने वाले पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, बांग्लोदश, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार, इंडोनेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, ब्रिटेन आदि देशो में बहुतायात में मिल जाते हैं। फिजी, दक्षिण प्रशांत महासागर के मेलोनेशिया का वह द्वीप देश है जहां कि आधिकारिक भाषा हिंदी है। फरवरी 2019 में अबू धाबी में हिंदी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली है। वैश्विक भाषा का अर्थ ही है जिसका प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है और जिस भाषा को लोग दूसरी या अतिरक्ति भाषा के रूप में सीखते हैं। हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता भी अब वैश्विक हो चुकी है। विश्व के 53 देशों के लगभग 200 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। सूरीनाम में तो मंदिरों तक में हिंदी पढ़ाई जाती है। जापानियों को निज भाषा से जितना लगाव है, उतना ही हिंदी से भी। रेवरेंड फादर कामिल बुल्के के नाम से प्रायः हर हिंदी भाषी परिचित ही हैं। मूल रूप से बेल्जियम के नागरिक फादर बुल्के ने बाद में भारत की नागरिकता ले ली थी। अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश का निर्माण एवं हिंदी में अनेक पुस्तकों की रचना कर वे हिंदी प्रेमियों के परम चहेते बन गए। चेकोस्लोवाकिया के विद्वान प्रो. ओदोलेन स्मेकेल ने हिंदी की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है। बाद में वे भारत में चेकोस्लोवाकिया के राजदूत भी बने। वे हिंदी में कविताएं भी लिखते थे। रूस के विद्वान पीटर वरान्निकोव का भारत के हिंदी जगत में एक जाना-पहचाना नाम है। अमेरिका की मिस एंजेल को हिंदी और भारत इतना अच्छा लगा कि वह भारतीय नागरिक ही बन गईं। भारत में उनका नामकरण हुआ 'कुमारी अंजली'। मॉरीशस के भारतवंशी प्रधानमंत्री सर शिवसागर राम गुलाम, जगन्नाथ अनिरुद्ध आदि हिंदी के प्रति बेहद आस्था रखते थे। पोलैंड के विद्वान प्रो. मारिया ब्रिस्की ने भारत में पोलैंड के राजदूत के रूप में भारत के राष्ट्रपति के सामने अपना परिचय पत्र हिंदी में प्रस्तुत किया था। ब्रिटेनवासी हिंदी विद्वान डॉ. रूपर्ट स्नेल तो इतने हिंदी भक्त हैं कि खड़ी बोली हिंदी के साथ ही ब्रजभाषा पर भी समान अधिकार रखते हैं। उन्होंने ब्रजभाषा में कुछ दोहे भी लिखे हैं। इसका अंदाज गोस्वामी तुलसीदास के लेखन के बहुत ही करीब है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने निज भाषा पर आज से लगभग सवा सौ वर्ष पहले जो कहा था वह आज भी अत्यंत प्रासंगिक और अनुकरणीय है। उन्होंने कहा था-

"निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल," बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल" अर्थात अपनी भाषा की उन्नति से ही राष्ट्र का उत्कर्ष होगा।

विश्व के अनेक देशों से हिंदी में पत्र-पत्रिकाएं एवं पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। इंटरनेट पर नए-नए पोर्टल, वेबसाइट और ब्लॉग हिंदी में बन रहे हैं। बॉलीवुड यानि हिंदी फिल्म उद्योग की वजह से हिंदी की विश्वव्यापकता तो छलांगें मार रही है। हिंदी के नए-नए शब्दों को प्रतिवर्ष 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' में सम्मलित किया जा रहा है।

पुस्तकालय का महत्व

अंशुल,
कार्यालय सहायक, कॉर्पोरेट कार्यालय

किताबें इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं जैसे व्यक्ति अपने दोस्त का हर पल हर घड़ी हर मुश्किल में साथ देते हैं वैसे ही किताबें भी हर मुश्किल परिस्थिति में मनुष्य की सहायक होती हैं किताबों में हर मुश्किल सवाल परिस्थिति का हल छिपा होता है। इंसान किसी भी दुविधा में रहे किताबों को पढ़ने से समझने से उसकी सोच का विस्तार होता है। कुछ लोग किताबें पढ़ने के शौकीन होते हैं। उन्हें तरह तरह की किताबों को संग्रह करना अच्छा लगता है। सामान्यतः पुस्तकालय में दो भाग होते हैं। लाइब्रेरी में एक भाग किताबें पढ़ने के लिए और दूसरा भाग किताबों को जारी करने के लिए होता है। यहाँ लाइब्रेरियन होता है जो लाइब्रेरी में आने वालों की सूची की जानकारी रखता है। विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकालय छात्रों की आय का जरिया भी बन गए हैं। बहुत शिक्षित बेरोजगारों ने शिक्षा का सही उपयोग किया है उन्होंने अपने शहर में पुस्तकालय की स्थापना की है इसकी मदद से वह अपनी आय बढ़ाने में भी सफल हुए है आज पुस्तकालय पढ़ाई करने का एक अच्छा स्थान बना हुआ है आज अनेक शहरों में आपको एक से अनेक पुस्तकालय देखने को मिल जाएंगे। अगर आप भी बेरोजगार है तो आप पुस्तकालय को अपना रोजगार बना सकते हैं। इन पुस्तकालयों के अलावा भी प्रत्येक शहर में कई जगह छोटे या बड़े पुस्तकालय अवश्य होते हैं जहां जाकर व्यक्ति अपने किताब पढ़ने के शौक को पूरा कर सकते हैं। इनके अलावा कुछ पुस्तक प्रेमी तथा समाजसेवकों लाइब्रेरी की भी शुरुआत की है। यह बहुत ही रोचक तथा उपयोगी तरीका है चलती फिरती वेन या ट्रॉली ट्रक में कई किताबें एकत्र कर रखी जाती है। जिसे गली-गली गाँव-कस्बों शहरों में घुमाया जाता है तथा वहाँ के लोगों कों किताबें मुहैया कराई जाती है इसका उद्देश्य उन लोगों तक किताबें तथा ज्ञान पहुंचाना है जो शहर आ कर महंगी पुस्तकें नहीं खरीद सकते।

ज्ञान का खजाना है डीएफसीसीआईएल का पुस्तकालय: डिजीटल के जमाने में आज भी पुस्तकालय का महत्व व प्रासंगिकता बनी है यह डीएफसीसीआईएल में मौजूद पुस्तकालय से सिद्ध होता है। प्रशासनिक सहयोग से संचालित इस पुस्तकालय में सिविल, एस एंड टी आदि तकनीकी किताबों समेत रामायण के अनुवादित संस्करण, मुंशी प्रेमचंद्र, महादेवी वर्मा समेत हिंदी के प्रख्यात उपन्यासकार व कहानीकारों के उपन्यास व कहानियां भरी हुई हैं। यह ज्ञान बढ़ाने के साथ तनाव को दूर करने में भी सहायक है। सभी को डीएफसीसीआईएल के पुस्तकालय में अपने समय से कुछ समय निकालकर अपना ज्ञानबर्द्धन अवश्य करना चाहिए। यहां से पुस्तकें घर में लेजाकर पढ़ने की भी सुविधा है यह सुविधा भी बहुत लाभकारी है। जो महंगी किताबें हम बाजार से नहीं खरीद सकते वह आसानी से मिल जाती है।

दूषित पर्यावरण

ईशांत,
कार्यकारी, प्रशासन

प्रदूषण का शाब्दिक अर्थ होता है दूषित होना या अशुद्ध होना, पर्यावरण यानी हमारे आसपास के क्षेत्र में दूषित पदार्थों के मिश्रण को ही प्रदूषण कहते हैं तकनीक के इस युग में सभी चीजें पानी, हवा, भोजन दूषित होते जा रहे हैं जिससे मनुष्य के जीवन को एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो रहा है मनुष्य इस बात को भली-भांति जानता है परंतु अपने स्वार्थ सुख-सुविधा और धन के लालच में वह ईश्वर रूपी प्रकृति को निरंतर नुकसान पहुंचा रहा है जो बेहद चिंताजनक है। हम सभी को जीवित रहने के लिए प्रकृति में संतुलन बनाए रखना अत्यधिक आवश्यक है परंतु आज के समय में विभिन्न प्रकार का बढ़ता प्रदूषण प्रकृति में असंतुलन पैदा कर रहा है जिससे मानव प्रजाति व जीव-जंतुओं के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो रहा है हम जानते हैं कि हमें जीवित रहने के लिए शुद्ध हवा, स्वच्छ जल तथा पोषक तत्व युक्त भोजन चाहिए परंतु आज के इस बदलते दौर में जल,वायु, भूमि या वातावरण की शुद्धता के स्तर में तेजी से गिरावट आती जा रहे हैं | आपवित्र, अशुद्ध तथा दूषित आदि प्रदूषण के शाब्दिक अर्थ है यदि प्रदूषण शब्द को परिभाषित किया जाए तो इसका अर्थ है प्राकृतिक तत्व जल, वायु, मृदा आदि या पर्यावरण में दूषित पदार्थों के मिश्रण को ही प्रदूषण कहते हैं हम कह सकते हैं कि पर्यावरण में किसी भी प्रकार का परिवर्तन (भौतिक, रासायनिक या जैविक) जो पर्यावरण के प्राकृतिक गुणवत्ता तथा उपयोगिता को प्रभावित करें, प्रदूषण कहलाता है| जिसका प्रभाव मनुष्य जीवन व अन्य जीव-जंतुओं पर पड़ता है। तकनीक के इस युग में प्रदूषण के अनेक प्रकारों का जन्म हुआ है जिसमें मुख्य जल, वायु, मृदा, ध्वनि तथा रेडियोधर्मी प्रदूषण है

जल प्रदूषण: जल की गुणवत्ता तथा उपयोगिता में कमी आना ही जल प्रदूषण है जिसके कारण इस्तेमाल योग्य व पीने योग्य पानी में निरंतर कमी आ रही है जल प्रदूषण के कारण जलीय जीव, पौधे एवं मानवीय जीवन पर अत्यधिक हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है।

वायु प्रदूषण: हवा (वायु) का दूषित होना या अपवित्र होना ही वायु प्रदूषण है वायु प्रदूषण का मुख्य कारण कार्बनडाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, सल्फर डाइऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसों का वायु में मिश्रण होना है इन गैसों के उत्सर्जन का मुख्य कारण बड़े-बड़े उद्योग, मोटर वाहन तथा दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुएं जैसे फ्रिज कंप्यूटर आदि अनेक कारणों के कारण वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है |

मृदा प्रदूषण: – मिट्टी के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों में कोई ऐसा परिवर्तन जिसका असर मिट्टी की गुणवत्ता तथा उपयोगिता को नष्ट करें मृदा प्रदूषण कहलाता है इसका प्रभाव मनुष्य तथा अन्य जीवो पर पड़ता है मृदा प्रदूषण औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि अपशिष्ट, घरेलू अपशिष्ट आदि अनेक कारणों से होता है जिसका असर मुख्य रूप से मिट्टी की उत्पादन क्षमता तथा धरातलीय जल पर पड़ता है।

ध्वनि प्रदूषण: पर्यावरण में अशांति या उच्च स्तरीय ध्वनि जो हमारी दिनचर्या को बाधित करें, ध्वनि प्रदूषण कहलाता है जिसका असर हमारी मानसिक स्थिति तथा दिनचर्या को प्रभावित करता है |

रेडियोधर्मी प्रदूषण: वह प्रदूषण होता है जब ठोस, द्रव तथा गैसीय पदार्थों में रेडियोधर्मी विकिरण उपस्थिति या प्रकट हो जाती हैं जिससे जीवो व मानव जीवन पर अविश्वसनीय घातक प्रभाव पड़ता है यह प्रदूषण परमाणु ऊर्जा उत्पादन, परमाणु विस्फोट, परमाणु परीक्षण तथा एक्स-रे मशीन आदि अनेक कारणों से होता है। दूषित व जहरीले पदार्थों की बढ़ती मात्रा तथा इनके निपटान में जागरूकता की कमी प्रदूषण के स्तर में वृद्धि का मुख्य कारण है। जल की गुणवत्ता व उपयोगिता को प्रभावित करने वाले मुख्य

कारण मनुष्य द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थ का नदी व पानी के अन्य स्त्रोतों में विसर्जन, औद्योगिक द्वारा जहरीले रसायनों व गंदे पानी का नदियों व नेहरों में विसर्जन, गंदे नालों व सीवरों का नदियों में प्रभाव आदि अनेक कारण हैं जिसके द्वारा जल प्रदूषण में वृद्धि होती है।वायु की शुद्धता हमारे जीवन के लिए अत्यधिक महत्व रखती है। वायु को प्रदूषित करने के मुख्य कारण वाहनों का धुआं, उद्योगों द्वारा उत्पन्न धुआं तथा गैस, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई आदि अनेक कारण है जो वायु प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। अशांत वातावरण व शोर हमारे मानसिक स्थिति व कार्य क्षमता को प्रभावित करता है। ध्वनि प्रदूषण के मुख्य कारण गांवों व शहरों में विभिन्न कार्यक्रमों के उपलक्ष में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल और वाहनों, कारखानों, उद्योगों आदि द्वारा उत्पन्न ध्वनि, बिजली उपकरण, ऑडियो मनोरंजन सिस्टम आदि अनेक कारण है जो वायु प्रदूषण में वृद्धि करते हैं। मृदा प्रदूषण के कारण मिट्टी की उर्वरक क्षमता व गुणवत्ता में कमी आती जा रही है। इसका मुख्य कारण कृषि में रसायनों व कीटनाशकों का अधिक प्रयोग, उद्योगों द्वारा अपशिष्ट पदार्थों का विसर्जन, प्लास्टिक तथा कांच का अधिक प्रयोग आदि हैं। रेडियोधर्मी प्रदूषण के मुख्य कारण परमाणु ऊर्जा उत्पादन, परमाणु परीक्षण, परमाणु विस्फोट आदि अनेक कारण है। निरंतर बढ़ते प्रदूषण के कारण प्रकृति व मानवीय जीवन पर अत्यधिक घातक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। मनुष्य को सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु की आवश्यकता होती है परंतु वायु में जहरीले गैसों के मिश्रण के कारण मनुष्य का सांस लेना दूभर हो रहा है तथा श्वसन संबंधित अनेक बीमारियां उत्पन्न हो रही है। पीने योग्य पानी में निरंतर कमी होती जा रही है पानी की शुद्धता में कमी के कारण पशु-पक्षियों तथा मनुष्य को स्वास्थ्य संबंधित बीमारियां टाइफाइड, हैजा आदि अनेक प्रकार की घातक बीमारियां उत्पन्न हो रही है। अशांत वातावरण के कारण मनुष्य की कार्य क्षमता, दिनचर्या तथा मानसिक असंतुलन प्रभावित हो रहा है जिससे मनुष्य चिड़चिड़ा व हिंसक स्वभाव का होता जा रहा है। प्रदूषण एक बड़ी पर्यावरणीय समस्या बनती जा रही है जो ईश्वर रूपी प्रकृति वह मानवीय जीवन को विनाश की खाई में ढकेल रही है यदि इसके निवारण व नियंत्रण को नजरअंदाज किया तो यह समस्या मानव जीवन व अन्य प्राणियों के लिए एक बड़ा खतरा बन कर उभरेगी जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी शुद्ध भोजन, हवा, पानी आदि अनेक चीजों के लिए तरसेगी इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण की तरफ कदम बढ़ाने होंगे तथा हमें जन-जन में प्रदूषण नियंत्रण संबंधित जानकारी के प्रति जागरूकता फैलानी होगी। वृक्षों की कटाई पर रोक लगाकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे। इसके द्वारा हम प्रदूषण जैसे दानव के नियंत्रण व निवारण में सफल होंगे।

- प्रदूषण नियंत्रण के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि हमें लोगों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक बनाना चाहिए तथा जन-जन तक प्रदूषण के कारण व निवारण संबंधित जानकारी पहुचानी चाहिए।
- अधिक से अधिक पेड़ लगाकर भी हम वायु प्रदूषण तथा इससे संबंधित प्रदूषण पर नियंत्रण कर सकते हैं।
- कृषि के लिए रसायनिक खाद (पोटाश उर्वरक, फॉस्फेट उर्वरक आदि) के स्थान पर जैविक खाद (हरी खाद, खली की खाद, गोबर खाद आदि) का इस्तेमाल करना चाहिए।
- प्लास्टिक, कांच जैसी अन्य वस्तु के स्थान पर बायोडिग्रेडेबल वस्तुओं जैसे जूट, कागज आदि से निर्मित वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि यह प्रकृति के अनुकूल होते हैं |
- प्लास्टिक व कांच की वस्तुओं का इस्तेमाल कम से कम करें तथा इस्तेमाल करने के बाद इधर-उधर ना फेंके यदि संभव हो पुनः उपयोग करें |
- कागज के अधिक इस्तेमाल से बचें क्योंकि इसके अधिक इस्तेमाल के कारण पेड़ों की कटाई में वृद्धि होती है ।

मायके से ससुराल तक

अंजलि,
कार्यालय सहायक, कॉर्पोरेट कार्यालय

इस लेख के माध्यम से आज की सामाजिक स्थिति में कुछ बदलाव आए तो मैं बहुत खुशी महसूस करूंगी क्योंकि इसमें जो लिखा है वो मेरी सहेली की आप बिती कहूं या आजकल की स्थिति कहु ऐ सब आप खुद देखना। इसमें सास-बहू के रिश्तों को दर्शाया गया है कि आज की सास-बहू के रिश्ते में क्या बदलाव आया है, इसमें मेरा उददेश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है बस आज के रिश्तों में मधुरता आए यही मेरा उद्देश्य है। एक बेटी अपनी माँ के आँगन में अपना बचपन से लेकर पढ़ाई तक बिना किसी दबाव में अपना जीवन खुशी से व्यतीत कर देती है, उसको तो कुछ पता भी नहीं लगता की वो कब बड़ी हो गई। दुःख-सुख क्या होते है कुछ पता नहीं होता है। बस उसे क्या चाहिए, ये खुशियां तो चाहती है। लेकिन उसकी शादी जब होती है तो एक बेटी सुनहरे भविष्य के सपने संजोए ये बात सोचती है कि वहाँ उसको वही सब प्यार मिले माँ-बाप का, वो अपने माँ के आँगन से जब विदाई के गम और आंखों में आँसू लिए बेटी से बहू बनकर जब एक अनजान परिवार में जाती है तो वह बहुत सी उम्मीद के साथ अपना नया जीवन शुरु करती है। उसे वो परिवार कैसा मिलता है वो उसके भाग्य पर निर्भर करता है साथ में उसके कर्म। अब यहां दोनों तरह के परिवार देखने को मिलेंगे, एक वो जहां उसको बहू बनाकर घर के अंदर सिर पर पल्लू लिए मर्यादा में रहने का ज्ञान देते है, उसे इज्जत, शर्म का हवाला देकर उसे दबाया जाता है। घर के चार दिवारी के अंदर रखते है। और दूसरा वो जहां बहू और बेटी में कोई अंतर नहीं देखा जाता। बल्कि उसे वह सब खुशियां देते हैं जो बेटी को दी जाती हैं, ताकि उसे न लगे कि वो अपने माँ के आँगन में नहीं है। यहां हम दोनों परिवार की बात करते है एक वो परिवार जिस घर से बेटी जाती है वहां उसे ज्यादा से ज्यादा सभी अपनी बेटी को समझाती है कि ससुराल को भी अपना ही परिवार समझके सबका मान-सम्मान करना, सास और ससुर की अपने माँ-बाप की तरह सेवा करना, पति के साथ इज्जत के साथ बात करना, क्योंकि यही तुम्हारे धर्म व कर्तव्य है और वो बेटी भी वहां वैसे ही व्यवहार करती है जो उसके माँ-बाप ने बताया था। लेकिन जब उसे गलत परिवार मिल जाता है जो न जाने उस बेचारी पर क्या-क्या अत्याचार होते है। वो तो जिस पर बीतती है उसे ही मालूम है यही कहानी मैं लिख रही हूँ जो उसको क्या-क्या सुनने को मिलते हैं- तुम बहू हो बहू की तरह रहों, कभी खाना भी ठीक से बना लिया करो, माँ ने तुम्हें कुछ सिखाया नहीं किया आदि-आदि बातों का सामना करना पड़ता है। जो आम बातें है जो सब जानते है इन सब छोटी-छोटी बातों से पूरे परिवार में तनाव का माहौल बना रहता है जो बेटी और बहू में फर्क करते है वहीं पर ये सब बातें होती है। परिस्थितियों को समझने की बात होती है एक बहू के लिए ससुराल का वातावरण कैसा हो, परिवार के लोगों के स्वभाव से, पसंद नापसंद सबसे अनजान होती है ये जिम्मेदारी ससुराल की भी बनती है कि उस नई बहू का साथ और सहयोग कैसे करें। क्योंकि जो बात प्रेम से समझाई जाती है वो दबाव से नहीं। बस वही तो वह चाहती है लेकिन वो उसे मिल नहीं पाता है। जमाना बदल गया है लेकिन गांवों में अभी भी वही सब चल रहा है। बहू और बेटी में भेदभाव रखते है। ये क्यों नहीं सोचते कि बेटी भी तो बहू बनेगी कहा जाता है कि अच्छा हो या बुरा सब लौटकर आता है जिस जगह आज हम है कल वहां कोई ओर भी होगा क्योंकि स्थिति बदलती रहती है। कहने का तात्पर्य यह है बहू को ससुराल में अपना परिवार की तरह ही समझना चाहिए और ससुराल वाले बहू को बेटी समझना चाहिए।

एक कदम प्रोत्साहन की ओर

राकेश कुमार,
कार्यालय सहायक
(वित्त)

महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण भगवान केवल अर्जुन के सारथी थे, मगर उन्होंने अर्जुन को युद्ध के लिए प्रोत्साहन दिया और पांडव युद्ध जीत इसलिए प्रोत्साहन की शक्ति को कभी भी कम नहीं आंकना चाहिए। जिस प्रकार दूसरों को अपना समय, धन या सलाह देकर हम भला कर सकते हैं । उसी प्रकार प्रोत्साहन देकर भी दूसरों की भलाई कर सकते है। प्रोत्साहन किसी भी कार्य को करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में जोश एवं उत्साह भरने का कार्य करता है। यदि देखा जाए तो हर व्यक्ति को प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जैसे कि शुरू में बच्चे को पैरों पर चलने विद्यार्थी को पढ़ाई - लिखाई करने, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति में, कलाकार को अपनी कला निखारने किसी बीमार व्यक्ति को बीमारी से मुक्ति, आदि प्रोत्साहन वेतन एक मौद्रिक प्रलोभन है जो कर्मचारियों को निर्धारित मानक से परे प्रदर्शन दिखाने के लिए दिया जाता है। उच्च दक्षता और अधिक उत्पादन के लिए श्रमिकों को प्रेरित करने और प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहन महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। चाहे परीक्षाओं का समय हो या खेल की प्रतियोगिता का समय हो या नौकरी के लिए कोई बड़ा दिन हो प्रोत्साहन एक ऐसी चीज है जो मनुष्य को विश्वास दिलाती है उसकी विजय का प्रोत्साहित रहना व प्रोत्साहित करना दोनों ही मुश्किलों से लड़ने के लिए एक दो धारी तलवार बन सकते हैं। एक दोस्त द्वारा दूसरे दोस्त को प्रोत्साहित करना आदि सफलता के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर आगे बढ़ने में बहुत सहायक सिद्ध होता है। इसी तरह के प्रोत्साहनों के कारण अनेक व्यक्तियों ने विद्वान, वैज्ञानिक और महापुरूषों की श्रैणी को सुशोभित किया है। प्रोत्साहन देना सफलता हेतु एक सराहनीय कार्य है, जो हर किसी को करना चाहिए भावनात्मक रूप से सच्चे हितैषी के रूप में दिया गया

प्रोत्साहन एक ऐसा उपहार है, जिसे देने में अपनी जेब से कुछ खर्च नहीं करना पड़ता, बल्कि बदले में प्रशंसा ही मिलती है, परंतु प्रोत्साहन को प्रार्थना या चापलूसी की श्रेणी में रखना गलत है। किसी व्यक्ति को प्रोत्साहन देने के बाद उसके चेहरे की चमक देखिए और निरुउत्साहित करने के बाद उसी चेहरे की उदासी देख लीजिए। प्रोत्साहन का चमत्कार आप स्वयं समझ जाऐंगे। प्रोत्साहन जहां व्यक्ति को कर्म के लिए प्रेरित करता है, वहीं उसके गुण और व्यक्तित्व में भी निखार लाता है। इसके विपरीत हतोत्साहित किए जाने पर व्यक्ति में निहित गुणों का भी लोप होने लगता है। प्रोत्साहन हमेशा ही आगे बढ़ने के लिए दिशा देते हैं और इनसे व्यक्ति का मनोबल भी बढ़ता हैं। इसके अलावा अन्य व्यक्ति भी इससे प्रभावित होते है। यद्यपि मानव जाति के सतत विकास के लिए कर्म की भी प्रधानता एवं महत्ता अधिक होती है, लेकिन कर्म करने की उचित प्रेरणा भी प्रोत्साहन के द्वारा ही प्राप्त होती है। कर्म तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही करना पड़ता है, लेकिन दूसरों की प्रोत्साहन रूपी सहायता प्राप्त होने पर ही उसके कर्मों को मूर्त स्वरूप मिलता है। इसलिए किसी की आलोचना करने या निरूत्साहित करने के बजाए यदि उसे प्रोत्साहित किया जाए तो वह ज्यादा हितकारी होता है। आपके द्वारा दिये गये प्रोत्साहन से किसी के जीवन में अतुल्य परिवर्तन तो आ ही सकता है, साथ ही प्रोत्साहन से व्यक्ति में आत्मविश्वास भी बढ़ता है। आपकी प्रेरणा से दूसरों को प्रोत्साहन मिले एवं उनके व्यक्तित्व का विकास हो तो इससे अपको भी खुशी होगी। फिर ऐसा निःशुल्क उपहार देने के लिए हर समय एवं हर परिस्थिति में तैयार रहिए और दुसरों को प्रोत्साहित कर स्वयं भी प्रशंसा और सम्मान के पात्र बनिए।

आत्मविश्वास

पूनम बिरला
कार्यालय सहायक
जन शिकायत प्रकोष्ठ
डीएफसीसीआईएल

आत्मविश्वास का मतलब है खुद पर विश्वास या विश्वास रखना। जब कोई व्यक्ति खुद पर विश्वास करता है, तो उसके लिए लक्ष्य और खुशी हासिल करना आसान हो जाता है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है और अपने लक्ष्यों के लिए काम करने के लिए उत्सुक रहता है।

आत्मविश्वास एक व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जो व्यक्ति अपनी क्षमताओं में विश्वास करता है वह हमेशा सफलता प्राप्त करता है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है। आत्म-विश्वास रखने वाला व्यक्ति बिना किसी नकारात्मकता के अपने लक्ष्यों के बारे में सोचने के लिए हमेशा स्वतंत्र रहता है; वे बिना किसी संदेह के हमेशा अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। खेल खेलते समय, यदि आप आश्वस्त हैं कि आप लक्ष्य बनाएंगे और लक्ष्य बनाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, बजाय इसके कि आपका प्रतिद्वंद्वी कितना मजबूत है, तो आप खेल जीत जाएंगे। यह आपकी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है जो आपको अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है।

आत्मविश्वास बढ़ाने के सूत्र :आप अपना आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए कई चीजें कर सकते हैं। उनमें से कुछ आपके मन के ढांचे में बस छोटे बदलाव हैं; दूसरों को परिचित आदतें बनाने के लिए आपको कुछ और समय तक काम करना होगा।

देखें कि आपने पहले ही क्या हासिल कर लिया है: अपने जीवन में उन सभी चीजों की एक सूची बनाएं जिन पर आपको गर्व है, चाहे वह परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करना हो। सूची को पास में रखें और जब भी आप कुछ ऐसा करें जिस पर आपको गर्व हो तो उसमें जोड़ें। जब आपका आत्मविश्वास कम हो, तो सूची को बाहर निकालें और इसका उपयोग अपने आप को अपने द्वारा किए गए सभी शानदार कामों को याद दिलाने के लिए करें।

उन चीजों के बारे में सोचें जिनमें आप अच्छे हैं: हर किसी के पास ताकत और प्रतिभा होती है। तुम्हारे पास क्या हैं? यह पहचानना कि आप किसमें अच्छे हैं, और उन चीजों पर निर्माण करने की कोशिश करने से आपको अपनी क्षमताओं में विश्वास पैदा करने में मदद मिलेगी।

कुछ लक्ष्य निर्धारित करें: कुछ लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम निर्धारित करें। जरूरी नहीं कि वे बड़े लक्ष्य हों; बस कुछ छोटी-छोटी उपलब्धियों का लक्ष्य रखें जिन्हें पूरा करने की अपनी क्षमता पर विश्वास हासिल करने में आपकी मदद करने के लिए आप एक सूची पर टिक कर सकते हैं।

अपने आप से बात करें: अपनी आत्म-चर्चा के बारे में सोचें और यह आपके आत्मविश्वास को कैसे प्रभावित कर सकता है। अपने आप से वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप अपने सबसे अच्छे दोस्त के रूप में करेंगे और अपने आप को खुश करेंगे।

एक शौक प्राप्त करें: आप इन अल्पकालिक रणनीतियों को भविष्य में आत्मविश्वास बनाने और बनाए रखने के तरीकों में विकसित कर सकते हैं। अच्छी आदतें विकसित करना, पिछली उपलब्धियों की समीक्षा करना, और अपने आप को लक्षित लक्ष्य निर्धारित करना आपके आत्म-सम्मान में सुधार करेगा, और लंबे समय तक आपके आत्मविश्वास का निर्माण करेगा।

कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है

हरीश प्रसाद,
कार्यालय सहायक, निदे.
पीपी, कॉर्पो.

हिंदी फिल्म का एक गाना है कि वक्त से कल और आज, वक्त से दिन और रात, वक़्त की हर शै गुलाम, वक्त का हर शै पर राज, आदमी को चाहिए वक्त से डरकर रहे न जाने किस घड़ी, वक्त का बदले मिज़ाज। सच मानो तो समय ही है जिस पर दुनिया (पृथ्वी) टिकी है जन्म से मरण तक इसके अनुसार चलते हैं, यही रात दिन का फर्क समझता है, न्यू बोर्न बेबी से बुढ़ापा तक का सफर तय करवाता है। समय के साथ जो चल सका वही विजेता बना और जो नहीं चल पाया वो समय को कोसता है ***"मैं समय हूं किसी का इंतजार करना मेरी फितरत नहीं"*** — समय बड़ा बलवान होता है, भगवान राम को भी इसी समय ने वनवास दिया और कृष्ण जी को कारावास में जन्म। इस संदर्भ में एक छोटी सी घटना का जिक्र करना प्रासंगिक प्रतीत होता है दो नौजवान मित्रों की कहानी है जिसमें एक गरीब परिवार में जन्मा परन्तु चतुर और बुद्धिमान, वहीँ दूसरा अच्छे घर के रहन-सहन से परिपूर्ण था लेकिन आलसी और आराम-परस्त था, समय बीतता गया और दोनों अपने-अपने लक्ष्य की ओर निकल पड़े, समय आया नौकरीपेशा करने का तो पहले उसकी नौकरी लग गयी जो अच्छे घर से ताल्लुकात रखता था, दूसरी ओर गरीब घर में जन्म लेने के कारण पहला नौजवान घर की जिम्मेदारियों से लदा हुआ लेकिन फिर भी समय के साथ चलता रहा, अब घर परिवार की जिम्मेदारी बढ़ने के कारण मजबूरन उसे उसी कार्यालय में चौकीदार की नौकरी करनी पड़ गयी जिसमें उसका मित्र क्लर्क के पद पर तैनात था। जिससे दोनों मित्र एक ही कार्यालय में कार्यरत होने पर अत्यंत ख़ुश थे परन्तु कुछ समय उपरान्त क्लर्क मित्र उससे दूरी बनाने लगा और फिर मित्रता शेष मात्र ही रह गयी। गरीब मित्र को इसका बहुत दुःख था लेकिन वह निरंतर कार्य के साथ अपने उज्ज्वल भविष्य की चिंता कर पढ़ाई को भी महत्व व समय देता रहा और कुछ वर्ष उपरांत क्लर्क मित्र का भी स्थान्तरण हो गया। अब समय आ गया भाग्य उजागर होने का, कार्यालय में एक विज्ञप्ति प्रसारित की गयी जिसमें अंकित अनिवार्य शैक्षणिक योग्यताएं उस गरीब मित्र के पास पर्याप्त थी और उसको अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल गया, परीक्षा परिणाम स्वरूप उसको सफलता मिल गयी और अब वह एक अधिकारी के रूप में उस कार्यालय में आसीन हुआ जिसमें उसका क्लर्क मित्र स्थान्तरित हुआ था। अब क्लर्क मित्र को अपनी गलती का अहसास हुआ कि अगर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और अच्छे व्यवहार के साथ-साथ समय से मेहनत करे तो वह अच्छे मुकाम को पा सकता है। ऐसे कितने उदाहरण हैं इतिहास में, जहाँ समय ने करवट लेते हुए बड़े-बड़े शंहशाहों को खाक में मिला दिया और कितने खाक में मिले लोगों को फर्श से अर्श की ऊंचाई दी। समय से परे कोई नहीं, अपितु भगवान् भी इस समय के वश में हैं, तो हम इंसानों की क्या बिसात, इसीलिए कभी व्यवहार में अहंकार का समावेश नहीं होना चाहिए। हर चीज जो ऊपर जाती है वो नीचे भी जरूर आती है, जबतक गुरुत्वाकर्षण बल उसे खींचता है। इसलिए स्वभाव से जीने की कला सीखनी चाहिए, कोशिश करें कि दूसरों के साथ वह व्यवहार या आचरण न करें जिसे हम स्वयं के लिए पसंद नहीं करते। समय कभी भी बदल सकता है।

साहित्य समाज का दर्पण

प्रेमवती शर्मा,
कार्यालय सहायक

साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। साहित्य का जन्म मनुष्य के भाव जगत के साथ हुआ है। अपनी अदम्य मनोभावनाओं को मनुष्य ने विविध विधाओं के माध्यम से व्यक्त किया हैं। साहित्य भी उनमें से एक हैं। साहित्य मानव समाज का प्रतिबिम्ब होता हैं। साहित्य के बिना समाज और समाज के बिना साहित्य निरर्थक और अधूरा हैं। दोनों अपने अस्तित्व और विकास के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। यह अभिव्यक्ति साहित्यकार के हृदय के माध्यम से होती है। कवि और साहित्यकार अपने युग–वृक्ष को अपने आँसुओं से सींचते हैं, जिससे आनेवाली पीढ़ियाँ उसके मधुर फल का आस्वादन कर सकें। साहित्य वह है, जिसमें प्राणी के हित की भावना निहित है। साहित्य मानव के सामाजिक संबंधों को दृढ़ बनाता है; क्योंकि उसमें सम्पूर्ण मानव–जाति का हित निहित रहता है।

साहित्यकार का महत्त्व: कवि और लेखक अपने समाज के मस्तिष्क भी हैं और मुख भी। साहित्यकार की पुकार समाज की पुकार है। साहित्यकार समाज के भावों को व्यक्त कर सजीव और शक्तिशाली बना देता है। वह समाज का शुभचिन्तक होता है। उसकी रचना में समाज के भावों की झलक मिलती है। उसके द्वारा हम समाज के हृदय तक पहुँच जाते हैं। साहित्य का सृजन जन–जीवन के धरातल पर ही होता है। समाज की समस्त शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता और मान–मर्यादा साहित्य पर ही अवलम्बित है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशान्ति या निर्जीवता एवं सामाजिक सभ्यता या असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य ही है। कवि एवं समाज एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, **"प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।"** साहित्य और समाज के इस अटूट सम्बन्ध को हम विश्व–इतिहास के पृष्ठों में भी पाते हैं। हमारे देश में प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की आँसुओं–भरी व्यथा–कथा को मार्मिक रूप में व्यक्त किया। उन्होंने किसानों पर जमींदारों द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों का चित्रण कर जमींदारी–प्रथा के उन्मूलन का जोरदार समर्थन किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् जमींदारी उन्मूलन और भूमि–सुधार की दृष्टि से जो प्रयत्न किए गए हैं; वे प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों की रचनाओं में निहित प्रेरणाओं के ही परिणाम हैं। बिहारी ने तो मात्र एक दोहे के माध्यम से ही अपनी नव विवाहिता रानी के प्रेमपाश में बँधे हुए तथा अपनी प्रजा एवं राज्य के प्रति उदासीन राजा जयसिंह को राजकार्य की ओर प्रेरित कर दिया था। साहित्य असम्भव को संभव बना देता है।

साहित्य का लक्ष्य: वास्तव में साहित्य का उद्देश्य, केवल स्त्री-पुरुष का जीवन नहीं है। साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों की तीव्रता को बढ़ाने के अलावा वर्तमान समाज और भविष्य के पथ प्रदर्शक का खोज करना होना चाहिए। इसलिए जिस समय साहित्य की रचना की जाती है, उस समय की परिस्थितियों का समावेश अवश्य ही होना चाहिए। वर्तमान भारतवर्ष में दिखाई देनेवाला परिवर्तन अधिकांशतः विदेशी साहित्य के प्रभाव का ही परिणाम है। साहित्य की विजय शाश्वत होती है और शस्त्रों की विजय क्षणिक। अंग्रेज तलवार द्वारा भारत को दासता की श्रृंखला में इतनी दृढ़तापूर्वक नहीं बाँध सके, जितना अपने साहित्य के प्रचार और हमारे साहित्य का ध्वंस करके सफल हो सके।

डीएफसीसीआईएल- भारत के परिवहन का भविष्य

नवीन कुमार,
कार्यालय सहायक,
कॉर्पोरेट कार्यालय

भारतीय रेलवे दुनिया में चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क संचालित करता है, जो पूरे देश में 68000 किलोमीटर से अधिक फैला हुआ है। आज, 12 लाख से अधिक कर्मचारियों के साथ, भारतीय रेलवे अमेरिका के रक्षा विभाग, चीनी सेना, वॉलमार्ट, चाइना नेशनल पेट्रोलियम, स्टेट ग्रिड ऑफ चाइना और ब्रिटिश स्वास्थ्य सेवा के बाद दुनिया का सातवां सबसे बड़ा नियोक्ता है। भारतीय रेलवे जनता को तीन प्रकार की सेवाएं प्रदान करता है जो एक्सप्रेस ट्रेनें, मेल एक्सप्रेस ट्रेनें और यात्री ट्रेनें हैं। पैसेंजर ट्रेनों का किराया सबसे कम है और मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का किराया सबसे ज्यादा है, जबकि एक्सप्रेस ट्रेनें बीच में हैं। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ने वाली रेल 'स्वर्ण चतुर्भुज' का मार्ग का भारतीय रेल की लंबाई का 16% हैं लेकिन यात्री और माल ढुलाई का 55 प्रतिशत से अधिक वहन करता है। इसलिए अनुभागों को उन्नत करने और अधिक रेल यातायात ले जाने के लिए लाइन क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की गई। कोलकाता और झारखण्ड से माल की ढुलाई के लिए और

मुंबई और गुजरात के पश्चिमी बंदरगाहों से दिल्ली क्षेत्र तक कंटेनर यातायात को ध्यान में रखते हुए, पूर्वी और पश्चिमी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर की परिकल्पना 2005 में की गई थी। इस सपने को पूरा करने के लिए, एक डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड नामक एजेंसी की स्थापना गलियारों के निर्माण, संचालन और रखरखाव के लिए की गई थी।भारत सरकार के रेल मंत्रालय द्वारा संचालित एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम निगम है। डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर, जैसा कि नाम से पता चलता है, देश में एक सुरक्षित और कुशल माल परिवहन प्रणाली बनाने के लिए है। वर्तमान में, हरियाणा और महाराष्ट्र को जोड़ने वाली पश्चिमी डीएफसी और पंजाब और पश्चिम बंगाल को जोड़ने वाली पूर्वी डीएफसी निर्माणाधीन हैं। पश्चिमी और पूर्वी डीएफसी की संयुक्त लंबाई लगभग 2,843 किमी है। उत्तर-दक्षिण (दिल्ली-तमिलनाडु), पूर्व-पश्चिम (पश्चिम बंगाल-महाराष्ट्र), पूर्व-दक्षिण (पश्चिम बंगाल-आंध्र प्रदेश) और दक्षिण-दक्षिण (तमिलनाडु-गोवा) डीएफसी की योजना बनाई जा रही है। अभी केवल पश्चिमी और पूर्वी डीएफसी निर्माणाधीन हैं। 29 दिसंबर, 2020 को, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 351 किमी.के

न्यू भाऊपुर-न्यू खुर्जा खंड का उद्घाटन किया। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी 7 जनवरी, 2021 को हरियाणा के रेवाड़ी और राजस्थान के मदार के बीच वाणिज्यिक संचालन के लिए डीएफसी के एक नए खंड का उद्घाटन करेंगे। पश्चिमी और पूर्वी डीएफसी के मार्च 2022 तक पूरा होने की उम्मीद है। वर्तमान में मालगाड़ियों को यात्री ट्रेनों की तुलना में प्राथमिकता नहीं मिलती है। एक बार निर्माण कार्य पूरा हो जाने पर कम से कम 70% मालगाड़ियों को डीएफसीसीआईएल नेटवर्क पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा जो कार्गो की समय पर आवाजाही में मदद करेगा। साथ ही, इससे भविष्य में और अधिक यात्री ट्रेनों की शुरुआत हो सकती है। डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद अमेज़न और फ्लिपकार्ट जैसी ई-कॉमर्स कंपनियां रेलवे के जरिए फ्रेट ट्रांसफर कर सकेंगी। ई-कॉमर्स के अलावा फ्रेट कॉरिडोर प्रोजेक्ट से ऑटोमोबाइल सेक्टर के लिए भी दरवाजे खुलेंगे निजी कंटेनरों को भी फ्रेट कॉरिडोर का उपयोग करने की अनुमति होगी, लेकिन उन्हें ट्रैक उपयोग शुल्क का भुगतान करना होगा। इस परियोजना की क्षमता को देखते हुए स्वर्णिम चतुर्भुज के अन्य हिस्सों के साथ चार और गलियारों की योजना बनाई जा रही है। डीएफसी का विजन लंबी और भारी ट्रेनों को चलाने का है। क्योंकि अधिकांश ट्रैफिक भारतीय रेलवे नेटवर्क पर शुरू और समाप्त होगा और डीएफसी से होकर गुजरेगा। भारतीय रेल के रूटों को भी 25 टन के एक्सल लोड में अपग्रेड किया जा रहा है ताकि पहले और अंत तक निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित की जा सके। डीएफसी के अधिकतम गतिमान आयाम भारतीय रेलवे की तुलना में अधिक हैं जिससे भारतीय रेलवे को अधिक यातायात ले जाने में मदद मिलेगी। डीएफसी का रेल उद्योग, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। डीएफसी प्रभाव वाले क्षेत्रों में रेल यातायात अनुमानों से संकेत मिलता है कि आज वृद्धिशील यातायात 163 मीट्रिक टन होने की उम्मीद है, और यह 2030-31 में बढ़कर 500 से अधिक मीट्रिक टन हो जाएगा। कोरीडोर दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कोरीडोर (DMIC) और अन्य औद्योगिक केंद्रों के साथ होंगे, और परिवहन की सस्ती लागत उद्योगों को अधिक व्यवहार्य बनाएगी। जैसे-जैसे हम एमएमएलपी और पीएफटी विकसित करेंगे, वैसे-वैसे अवसर भी आएंगे, और साथ ही, बंदरगाह के बुनियादी ढांचे का निर्माण भी होगा। डीएफसी के चारों ओर संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र विकसित होगा, और ये क्षेत्र में विकास और विकास के इंजन होंगे। नियोजित कुछ सेवाओं में शामिल हैं: अनुसूचित पार्सल ट्रेनें, टुकड़ा-टुकड़ा कंटेनरीकृत सड़क यातायात, सफेद माल के लिए रोड-रेलर्स, एनसीआर में ऑटो हब का विकासडेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का मुख्य मिशन अपने व्यवसाय के लिए गतिशीलता के लिए एक विश्वसनीय, सुरक्षित कुशल और सस्ता विकल्प सुनिश्चित करना है। रेलवे को परिवहन आवश्यकताओं के सबसे कुशल और पर्यावरण के अनुकूल और व्यवसाय को प्रोत्साहित की दिशा में सरकारी परियोजनाओं को सहायता प्रदान करना है।

प्रकृति

विक्रम बर्धन,
पर्यवेक्षक, हाउसकीपिंग

सर्वप्रथम हम सब ईश्वर का अंश है, इसलिए हम सबों का दायित्व बनता है कि अपने चारों ओर के वातावरण को उपयुक्त बनावें ताकि सब सुखी रहें, निरोग रहें एवं अनुशासनशीलता रहे, जीवन प्रगति करे एवं ओरो के लिए भी सफलता के द्वारा खोले। इस कालखंड में सबको यह भ्रांति है कि भौतिक सुविधाओं की प्रगति से हर व्यक्ति सुखी बन सकेगा इसका उसे तनिक भी ज्ञान नहीं है कि भौतिक या बहिरंगी प्रकृति अत्यंत प्रबल है। क्योंकि हर प्राणी प्रकृति के कठोर नियमों द्वारा बुरी तरह से जकड़ा हुआ है और मनुष्य प्रकृति के विपरीत कार्य करने पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिस तरह हरे भरे पेड़ काटे जा रहे हैं और विशाल पहाड़ पिघल रहे हैं, जीवनदायिनी नदियां सूख रहीं हैं। मनुष्य अपने सुख सुविधानुसार जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों एवं वन्यजीवों के प्रति असहिष्णुता दिखा रहा है वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी रहने लायक न रहे। सच्ची प्रगति तो वास्तव में वह है जब स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी एवं स्वास्थ्य के अनुकूल वातावरण रहे, जिससे समान रूप से हर प्राणी लाभान्वित हो अपने-अपने कार्यक्षेत्र में। आज जिस प्रकार विकास के नाम पर हरे-भरे जंगलों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है उसका प्रकृति पर बुरा असर पड़ता है। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है। आज हमारे देश की जीवनदायनी

नदियां गंगा, यमुना नर्मदा आदि अपने आंचल में देशभर की गंदगी ढोने को विवश हैं, फिर भी वह अपनी कृपा मनुष्य पर बरसा रही हैं लेकिन मनुष्य अपने लालच में इन नदियों का न सिर्फ भरपूर दोहन कर रहा बल्कि इन्हें नुकसान भी पहुंचा रहा है वह दिन दूर नहीं जब यह नदियां अतीत बन जाएंगी। सरकारें जनता को दोषी मानती हैं और जनता सरकार को लेकिन अपने-अपने कर्तव्यों का अगर ईमानदारी पूर्वक निर्वहन किया जाए तब भी हमारी ये जीवनदायनी नदियां जब तक धरती है तब तक मनुष्य का कल्याण ही करेंगी। हमें अपने आसपास स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना होगा, वनों का बचाना होगा, नदियों के प्रदूषण को रोकना होगा तब ही हम भविष्य में मानव जीवन की कल्पना को साकार रख सकते हैं नहीं तो अंतरिक्ष के इस सबसे खूबसूरत ग्रह पृथ्वी पर मानव का जीवन भी सिर्फ इतिहास बन जाएगा। प्रकृति ईश्वर प्रदत्त अनमोल उपहार है। इस प्रकार जहां प्रकृति हमें शुद्ध वायु, शुद्ध पानी स्वास्थ्य भरण-पोषण के लायक अवयवों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराती है तो मनुष्य को भी प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी होनी चाहिए कि प्रकृति के संरक्षण हेतु जो भी आवश्यक उपाय हो वे किए जाएं ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी एक स्वस्थ्य वातावरण में सांस ले।

अमित कुमार,
एमटीएस, कॉर्पो. कार्या.

शिष्टाचार

शिष्ट +आचार = शिष्टाचार अर्थात विनम्रतापूर्ण एवं शालीनतापूर्ण आचरण ! शिष्टाचार की परिभाषा यह है - शिष्टता पूर्ण आचरण और व्यवहार, ऐसे आचरण जो साधारणतया एक सामाजिक प्राणी से अपेक्षित हो! शिष्टाचार वो आभूषण है जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है अन्यथा अशिष्ट मनुष्य तो पशु की श्रेणी में गिना जाता है ! मानव होने के नाते मनुष्य को शिष्टाचार का आभूषण अवश्य ही धारण करना चाहिए ! शिष्टाचार ही सदाचार की कसौटी है।

यह कहाँ आ गये हम समय के साथ चलते: आजकल के समय परिवर्तन में अक्सर देखा जाता है कि शिष्टाचार नयी पीढ़ी में कम देखने को मिलता है क्योंकि गाँव में छोटे-छोटे बच्चों तक को यह सिखाया जाता था कि यह बाबा दादी हैं,यह ताऊ ताई हैं,यह चाचा चाची हैं अतः जैसा भी रिश्तेनुसार लग रहा है वैसा ही बोलना उनसे हालचाल पूँछना लेकिन!आज न समय है न वह रिश्ते रह गये हैं। एक भाई अमीर है तो दूसरा गरीब है। अमीर भाई गरीब भाई को बड़ी हीन भावना से देखता है वही असर बच्चों पर पड़ता है लेकिन!यह समस्या सभी रिश्तों में देखने को मिलती है। अब सोचनीय विषय यह है कि यह समस्यायें समाज में पनपी क्यों?? पहले संगठित परिवार थे तब शिष्टाचार था अब विघटित परिवार हो गये हैं और एक दूसरे को पचा नहीं पा रहे हैं वही असर नयी पीढ़ी के बच्चों पर पड़ रहा है बच्चे उसी परिवेश में पलते हैं जिसमें शुरू से उनको ढाल दिया जाता है।

सलोनी
पुत्री प्रवीन
एमटीएस,
कॉर्पो. कार्या.

बातें दशानन की

रामलीला देखकर रात घर लौट रही थी। सामने सड़क पर देखा तो एक विशालकाय आदमी मेरी ओर चला आ रहा था। मैं पहचान गई कि यह और काई नहीं दशानन रावण ही है। मैं बोली आप रावण हैं ? कैसे आज रोड पर धूम रहे हो, रावण बोला 'सर्वत्र मेरा राज है, सर। मै रामलीला देखकर आ रही हूँ । आज वहां रावण बध का दृश्यांकन था। रावण दहाड़ा बच्चू ऐसा मत बोलों मैं बोली मेरी तो आपको लेकर एक ही जिज्ञासा है और वह यह कि आपको दस सिरों की आवश्यकता क्यो है? आओ हम उस रेस्त्रा में चाय पीते हुए बात करते हैं रेस्त्रा क्या था, खड़ी थी मैं और रावण अलग-अलग मुडियो पर टिक गए। दो कड़क चाय का आर्डर देकर रावण बोला, सुनो, मेरा चरित्र आज के नेताओं जैसा है। वे कभी एक बात पर टिकते हैं ? वे मेरे ही प्रतिरूप हैं। झूठ फरेब, गबन, घोटाले, धोखा, छल, कपट, बलात्कार, ठगी, हत्या आश्वासन ये दसों बातें इन्हीं हाथों और सिरों से करता हूँ। अब समझ जाओ मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। मुझे आगे जाना है। एक बात और सदाचरितरा का रूप त्याग दो सुख पाओगे। यह कहकर वह अन्तर्ध्यान हो गया। मैं दशानन की दस विरोधाभासी बातों पर बहुत देर तक सोचती रही। चाय वाले ने पैसे मांगे तो मैने चुपचाप दे दिए और खिसकी, क्योंकि रावण चाय के पैसे भी नहीं देकर गया था।

सरल भाषा

जगत सिंह नगरकोटी,
वरिष्ठ कार्यकारी,
राजभाषा

सरलता के सभी पक्षधर होते हैं। चाहे वह जीवन की सरलता हो या भाषा की। आम जीवन में सरल स्वभाव की चर्चा होती है और उसकी तारीफ भी होती है। दरसल, गोल-गोल, घुमावदार व्यक्ति भी सरलता का समर्थन करता है। भाषा के संबंध में देखा जाए तो बोलचाल में भाषा की सरलता या असरलता की कोई बात नहीं सुनी जाती। आम लिखने पढ़ने में भी इस विषय की चर्चा होती है, इसकी जानकारी मुझे तो कतई नहीं है परंतु सरकारी कार्यालयों में सरल भाषा के प्रयोग की जरूरत की अक्सर बात कही जाती है, खासतौर पर हिंदी की। बड़े कमरे में, बड़ी कुर्सी में अकेले बैठे गंभीर सा दिखने वाला व्यक्ति हो या बड़े हॉल में, बहुत बड़े समाज में बैठा कोई सामाजिक सा प्राणी, लगभग सभी इस पर सहमत होते है कि सरकारी कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी कठिन होती है। चुनाव में वोटिंग के पैमाने पर देखें तो इस विचारधारा की न केवल Thumping Majority के साथ सरकार बनने की स्थिति होती है बल्कि सदा-सदा के लिए सत्तारूढ़ता भी पक्की है।

जब मैंने पहली बार हिंदी कठिन होने के बारे में सुना तो बात समझ ही नहीं आई। मेरी कल्पना में भी हिंदी की कठिनाई की समझ नहीं थी। हां A B C D वाली अंग्रेजी मुझे शुरू से ही कठिन लगी। उसमें इतना याद करना सोच-सोच कर मैं कई बार घबरा जाता था। केवल A B C D ही अंग्रेजी में तीन चार प्रकार की होती है। हिंदी में अ, आ के बारे में सोचो कि वह तीन चार प्रकार के होते तो...। हिंदी में मुझे कभी कुछ याद नहीं करना पड़ा। हिंदी स्वत: ही अंदर घुस गई। अंग्रेजी में तो सबकुछ याद करना पड़ता था। आदमी पागल हो जाए। अपना तो बचपन से ही एक मात्र लक्ष्य रहा कि 33 प्रतिशत आ जाए बस।

"हिंदी कठिन होती है, हिंदी समझ में नहीं आती" सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने वालों को अक्सर सुनना पड़ता है। ऐसे किसी व्यक्ति जिसने 15-20 वर्ष हिंदी विभाग में कार्य करने का अनुभव हो उसके पास इन बातों का निश्चित तौर पर "भारी" अनुभव होता है। चूंकि मैंने दो बीस वर्ष बिताए हैं इसलिए अनुभव मानो न मानो 'कुछ तो देखा होगा' मानना ही पड़ेगा। परंतु जब सभी लोग किसी बात पर एक मत होकर कुछ कह रहे हों तो उसकी सच्चाई पर ज्यादा शंका नहीं की जा सकती। हम स्वयं भी देखें दिल्ली से गोरखपुर के किसी कार्यालय में जाकर फाइल को पढ़ें तो वहां अलग ढंग की हिंदी मिलेगी। दिल्ली में एक अलग ही ढंग, कपूरथला में अलग। समझने के लिए दो मिनट रूक दोबारा पढ़ना पड़ता है। समझ नहीं आता कि ये सब हिन्दी ही है क्या ?

समस्या तब ज्यादा हो जाती है जब लिखने वाला अपनी जगह अटल सत्य की तरह खड़ा रहता है और हिलकर पढ़ने वाले की जगह जाना उसे सत्ताच्युत होना सा लगने लगता है। मुझे तो यही समस्या लगी। यही कारण समझ में आया। हम लिखते समय यह नहीं सोचते कि इसे किसी ने पढ़ना भी है। कहीं हमारे लिखे विषय को समझने के लिए सामने वाले को रुकना तो नहीं पड़ेगा। दुबारा पढ़ना तो नहीं पढ़ेगा। एक बार अपने को पढ़ने वाले की जगह पर रख कर देंखे और फिर अपने लिखे को दोबारा पढ़े तो काफी समस्या हल हो जाती हैं। कई बार कुछ लोग अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना बिल्कुल त्याज्य मानते हैं। वे हिंदी के 'जबरदस्त' पक्षधर होते हैं। हिंदी पाठ में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना उन्हें अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन की याद दिलाता है। उन्हें लगता है कि गोरा अंग्रेज फिर आ जाएगा और उनके अंदर का क्रांतिकारी पुरुष बाहर आकर स्वतंत्रता संग्राम के पथ पर अग्रसर हो जाता है। ऐसा भी नहीं कि सभी लोग यही सोच रखते हों,

मेरे ख्याल से काफी लोग, शायद ज्यादातर लोगों की राय इसके विपरीत होती है। वे ये चाहते हैं कि आम प्रयोग में होने वाले अंग्रेजी के शब्दों का परहेज नहीं करना चाहिए। उनका प्रयोग कर भाषा को 'सिंपल' रखा जाना चाहिए। अंग्रेजी शब्द का प्रयोग करने या न करने पर जब विरोधाभासी विचार मार्केट में हो तो कौन सी बात मानी जाए, यह निर्णय कठिन हो जाता है। चूंकि दोनों विचारधाराओं के पक्षधर के पास अपने-अपने तर्क हैं और ज्यादातर मामलों में दोनों विचारधाराओं में तर्क का मूलाधार दूसरे की बात न मानने की जिद होती है।

प्रारंभ में मुझे यह बहस निरर्थक लगती थी। यह मुझे अपनी-अपनी क्षमता और पसंद का मामला ज्यादा लगता था। कठिनाई तब होती है जब कोई अपनी पसंद को सार्वभौमिक सत्य के रूप में लेने लगता है। मेरे ख्याल से आप अपनी पसंद की शैली को ही अपनाएं। सामने वाला उससे असहमत हो रहा है तो वह जो चाह रहा है वही कर दें। आखिकार वह पत्र या जो भी कागज हो, है तो तो उसी का, उसी के लिए है, इसे आप अपने ज्ञान पर हमला न समझें। मेरा अंग्रेजी का ज्ञान जितना भी हो, मेरा जो भी इतिहास रहा हो पर व्यक्तिगत तौर पर मैं आवश्यकतानुसार अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग का हिमायती हूं। कई बार उनके इस्तेमाल से भाषा सहज भी लगती है।

हमारे गांव में एक सड़क थी। उसे पर पूरे दिन में केवल दो बसें आती थीं और दो ही बसें जाती थी। परंतु देश का सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण कई बार 100-200 फौज की गाड़ियों का काफिला वहां से गुजरता था। मेरी माताजी पढ़ी लिखी न थीं। पर वे कहती थीं आज रोड पर बहुत ट्रैफिक है। शायद हिंदी का कोई विद्वान उन्हें कहता कि आप यह कहो आज सड़क पर बहुत यातायात है, तो वे यह 'अंग्रेजी' बिल्कुल भी समझ नहीं पातीं। खैर यह पंसदगी और क्षमता का मामला है। हिंदी में काम करते हुए आप अपने आप को फैसलिलेटर मात्र मानें। कुछ लोग भाषा की कठिनता के बारे में कहते हैं कि बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया है। मेरे ख्याल से कोई एक शब्द या कुछ शब्द कठिन या सरल नहीं होते। उनसे भाषा कतई कठिन या सरल नहीं होती। हो सकता कि आपको कुछ शब्द समझ न आ रहे हों और यदि उन तथाकथित कठिन शब्दों को आप समझ जाओ तो क्या मात्र एक या दो शब्द बदलने से भाषा के स्वरूप में परिवर्तन आ सकता है और भाषा सरल बन सकती है।

हिंदी में एक और बात कही जाती है कि भाषा का मानकीकरण होना चाहिए अर्थात इसमें अंग्रेजी के एक शब्द के बदले में हिंदी का एक शब्द तय किया जाता है और सभी से कहा जाता है कि उसी का इस्तेमाल करें। मानकीकरण का दायित्व विद्वानों को सौंपा गया है, इस पर बहुत चर्चा होती है। मुझे इस पर अभी तक कोई विशेष समझ नहीं बनी। बात तो अच्छी है पर इतने बड़े देश में जहां इतनी बड़ी जनसंख्या है। जहां लोगों में हिंदी का ज्ञान भी अलग-अलग स्तर का है। स्थानीय परिस्थितियां भी प्रभाव डालती हैं। कैसे यह संभव है मुझे तो यह पता नहीं। खैर हो जाए तो अच्छा है। पर सिद्वांत बना देना एक बात है और पूरे देश के परिप्रेक्ष्य में उसे लागू कराना अलग। यह कैसे संभव होगा भाषा के विद्वान ही इसे जानते है। पर यह ख्याल रखना चाहिए कि एसी कमरे में जिसे पैदा किया जाता है वह 46 डिग्री तापमान में पिघल जाता है, न रूप रहता है न स्वाद। आप अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करें या न करें, तथाकथित कठिन शब्दों का प्रयोग करें या सरल, इससे भाषा के स्वरूप में ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है। परंतु जब आप बेतरतीब ढंग से लिखेंगे, एक इधर की, एक उधर की करेंगे, यहां से लिखना शुरू किया और कौमा के बाद कौमा 25-30 कौमा के बाद या बिना कौमा के ही पेज के अंत में पूर्ण विराम लगा दें तो आपका लिखा हुआ हमेशा कठिन होगा। वह भाषा निश्चित ही सरल होगी जिसमें वाक्य छोटे-छोटे लिखे हों। तीन-चार शब्द का वाक्य हो। ज्यादा कौमा लगाकर या बिना कौमा लगाए पैराग्राफनुमा वाक्य न बनाए गए हों। लेख में तारतम्य हो, Cohesiveness हो। एक बात शुरू की जाए उसे पूरा किया जाए फिर दूसरी बात शुरू की जाए।

नववर्ष का जश्न मनाएं,
आओ जीवन को खूबसूरत बनाएं,

आकाशदीप, भारद्वाज
कार्यालय सहायक,
राजभाषा

2021 को अलविदा कह हम 2022 में प्रवेश कर चुके हैं। हमने इसका हिसाब-किताब भी लगा लिया होगा कि बीते वर्ष में हमको जाना कहां था और पहुंचे कहां तक हैं। यह सभी के साथ जरूरी नहीं रहा होगा कि सभी को वह सब कुछ हासिल हुआ हो जिसका लक्ष्य उन्होंने बीते साल के लिए बनाया होगा। तो क्या जो प्राप्त नहीं हुआ उसका शोक मनाकर हम नाकामियों के गर्त में डूब जाएं ? नहीं ! वर्ष के आंकलन में हम भले ही अपने लक्ष्यों से भटक गए हों लेकिन यह भी सत्य है कि हर बीता वर्ष हमें कुछ न कुछ सिखा कर जरूर जाता है और परिपक्व बनाता है।

यह सच है प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं कि हम निराशा के गर्त में गिरते चले जाते हैं, अवसाद हमको घेर लेता है। सबकुछ होते भी हम निराशा और न उम्मीदी में जीने लगते हैं। लेकिन क्या यह जीवन जीने का सही ढंग है? क्यों हम इस खूबसूरत सी जिदंगी को बजन की तरह समझने लगते हैं जबकि जिदंगी तो हर हाल में जीने लायक होती है। मदर इंडिया फिल्म का गाना "दुनिया में अगर आए हैं तो जीना ही पड़ेगा, जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा" जीवन में ऐसा कौन है? जिसको कोई दुख नहीं? संसार में आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी पीड़ा में व्यथित है। किसी को मनचाहा प्रेम नहीं मिला तो किसी को मनचाही नौकरी व घर नहीं मिला इसके अलावा भी जीवन में न जाने कितनी शिकायतों का पिटारा हम लेकर चलते हैं लेकिन जीवन के किन क्षणों में हमनें आनंद की अनुभूति की और यह आनंद की अनुभूति किन कारणों से हुई यह हम पता लगाना भूल जाते हैं जबकि इस खूबसूरत जीवन के हर उस क्षण व उन कारणों का हमें धन्यवाद देना चाहिए जो हमारी खुशी की वजह बने हैं। कितनी भी कठिनाइयों से भरा जीवन क्यों न हो। प्रकृति से मिला हमारा जीवन हमें मुस्कराने की कई वजहें देता है। कुदरत ने हमें कितने भावों से युक्त कर भेजा है प्रेम, दया, ममता, करुणा, वात्सल्य, आनंद क्या हम वास्तविक रूप में इन सभी भावों को अनुभव कर पा रहे हैं ? हमारे जीवन में इन भावों की सार्थकता है, यह सवाल सभी को स्वयं से करना ही चाहिए?

हमारी कामयाबी की सीढ़ी भले ही किसी लक्ष्य पर निर्भर हो, मगर हमारी जिदंगी अंतिम तौर पर लक्ष्य नहीं हो सकती। जिदंगी हंसने, हंसाने, मुस्कराने प्यार बांटने व थोड़ी सी समाजिकता बनाए रखने का नाम है। हमारी जानकारी में एक लड़का है जो अपने लक्ष्य के लिए एक बंद कमरे में रहकर तैयारी करता है यहां तक कि उसकी मां उसके लिए नाश्ते की प्लेट लेकर जाएं तो वह सिर्फ नाश्ते की प्लेट लेने तक के लिए ही दरवाजा खोलता है, उसे प्रकृति समाजिक वातावरण से कोई मतलब नहीं। यह सत्य है कि ऐसा कर वह अपना लक्ष्य जरूर हासिल कर लेगा लेकिन क्या वह खूबसूरत जिदंगी हासिल कर सकेगा? बहुत सारे माता-पिता चाहते हैं कि उनका बेटा मोटी सेलरी पाए लेकिन क्या इस खूबसूरत जिदंगी को पैसो से तोला जा सकता है? मोटी तनख्वाह

इंसान को इंसान बनाने से न रोक दें ! इंसान है तो उसमें न्यूनतम इंसानी आचरण और व्यवहार को मोटी तनख्वाह व आर्थिक आय के हवाले नहीं किया जा सकता। चूंकि मनुष्य सदैव से एक समाजिक प्राणी रहा है और जब वह अपने इस रूप को बदलता है यानि जब वह समाज के बीच से कटता है तब वह अवसाद में घिरता है और यह अवसाद धीरे-धीरे निराशा के गर्त में ले जाता है। इसलिए हमसे जो छूट गया हमें उसका मलाल नहीं करना है ना ही हमें निराश होना है। हमारे पास दोस्त, परिवार, पड़ोसी सभी तो हैं फिर निराश होने की आवश्यकता क्यों ? बस हमको सतर्क रहते हुए सभी के साथ रहने का समय ढूंढना है। छोटी-छोटी खुशियों का जश्न मनाना है। फिर हम देखेंगे कि निराशा किस प्रकार उड़न-छू हो जाती है। खुश रहने के लिए हम बड़ी-बड़ी बजहें तलाशतें हैं और छोटी-छोटी खुशियों को दरकिनार कर देते हैं। हम हैं कि खुशियों को खरीदने निकल पड़ते हैं मगर अफसोस कि खुशियां का कोई ब्रांड नहीं और यह कहीं बाजार या फुटपाथ पर मिलतीं हैं। हम सोचते हैं कि ब्रांडेड कपड़े, महल, ब्रांडेड गा़डियां होने पर खुश होंगे लेकिन क्या जिनके पास यह सबकुछ है वह वाकई खुश हैं? दिसबंर के अंतिम सप्ताह की ही बात है मेरी पत्नी ने एक गुब्बारा खरीदा और हम बाजार में खाने लगे मुमोज, थोड़ी ही देर में वहां एक छोटी बच्ची आई और गुब्बारे को मांगने लगी पत्नी ने कुछ देर सोचा फिर मेरी सहमति पर वह गुब्बारा बच्ची को दे दिया। यह गुब्बारा खरीदा भी इसी परिस्थिति में गया था कि कि इसको बेचने वाला भी एक बच्चा हमारे पास आया जिसको कुछ पैसे देकर हमने यह गुब्बारा खरीदा। लेकिन गुब्बारा खरीदने व खरीदने के बाद उसको अपने पास तक रखने में हमने तीन लोगों को खुशियां बांटीं। एक श्रीमती जी, दूसरा वह बच्चा जिससे गुब्बारा खरीदा गया- दूसरी वह बच्ची जिसने गुब्बारा प्राप्त किया। कल्पना करना कि वह दोनों बच्चे कितने खुश थे। जितने वह बच्चे खुश थे उससे ज्यादा खुश मैं व मेरी श्रीमती जी थीं। मैं आप से भी निवेदन करता हूँ कि छोटी-छोटी खुशियों को पक्ड़िए फिर देखिए कि कैसे आपकी सारी निराशा भाग जाएगी और जीवन कितना सुंदर लगने लगेगा।

ओमिक्रान-डरें नहीं बचाव करें।

साल के अंत पर जिसका डर था वही हुआ। कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रान ने भारत में दस्तक दे दी है और यह भारत में आने के साथ तेजी से अपने पैर पसार रहा है। ओमिक्रान के आते ही फिर से डर का महौल बन रहा है लेकिन हमें डरने की नहीं बल्कि सतर्क रहने की जरुरत हैं। वैज्ञानिक रिपोर्टों के मुताबिक ओमिक्रान से संक्रमण जरूर है लेकिन राहत इतनी है कि इससे संक्रमितों की मौत का आंकड़ा अभी कम है। इसलिए हमें पहले की अपेक्षा अब और अधिक सतर्क रहने की जरूरत है।

सामान्य कोरोना की तरह इसके बहुत लक्षण पूर्व की तरह ही हैं। बुखार, सूखी खांसी, गले में खराश, थकान, मांसपेसियों में दर्द आदि। यदि हम इससे प्रभावित होते हैं तो डरने व पैनिक फैलाने की आवश्यकता नहीं बल्कि सतर्क रहकर सुरक्षा उपाय करना जरुरी है। चेहरे को सुरक्षित तरीके से मास्क से ढकें। हाथ धोते रहें और लक्षण दिखने पर चिकित्सक से सलाह लें।

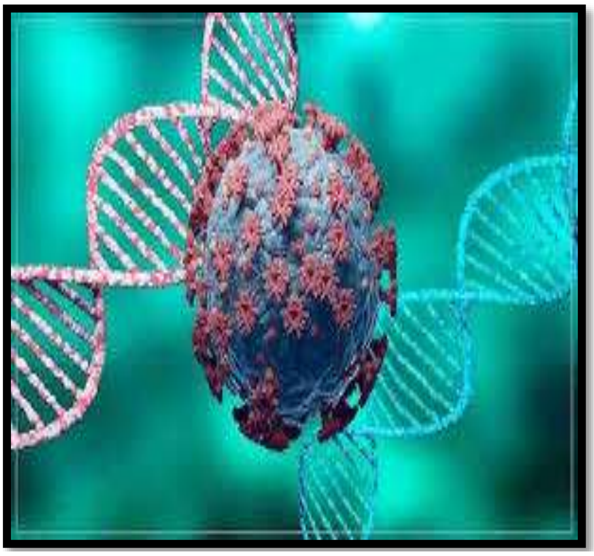

स्वयं पर आत्मविश्वास की जीत

अमित सक्सेना,
कार्यालय सहायक,
राजभाषा

मिस यूनिवर्स-2021 का खिताब अपने नाम करने वाली हरनाज कौर संधू सिर्फ सुंदर चेहरा भर ही नहीं है बल्कि आत्मविश्वास से लबरेज वह देश की बेटी है जिस पर आज सभी गौरान्वित हैं। संधू ने हाल ही में इजरायल के इलियट में संपन्न हुई मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में 79 देशों के प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतिभागितयों में स्थान बनाया। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका की ललेला मसवाने और पराग्वे की नादिया फरेरा को पीछे छोड़ते हुए यह खिताब जीता है।

70 वीं मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में 21 साल बाद देश को यह उपलब्धि उन्होंने दिलाई है। हरनाज से पूर्व वर्ष 1994 में अभिनेत्री सुष्मिता सेन और वर्ष 2000 में लारा दत्ता ने यह ताज पहनकर देश का मान बढ़ाया था। यहां गौर करने वाली बात यह है कि ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सहभागिता करने वाले चेहरे एक संपूर्ण व्यक्तित्व की तरह देखे जाते हैं। जिस कारण उनसे जुड़े हर एक पहलू चर्चा का विषय बन जाता है। खासकर युवाओं का इनसे प्रभावित होना लाजमी है। मिस यूनिवर्स, 2021 हरनाज के सवाल की भी इन दिनों खूब चर्चा है। प्रतियोगिता के आखिरी चरण में जब सभी प्रतिभागियों से एक-एक कर पूछा गया कि आज के समय में दवाब का सामना कर रही उन युवा महिलाओं का वह क्या सलाह देना चाहेंगी ? जिससे वे वह आज के समय का सामना कर सकें।

यकीन मानिए कि इस प्रश्न के सदे हुए उत्तर ने ही उनकी जीत पक्की की। हरनाज ने अपने उत्तर में पूरे आत्मविश्वास से कहा कि आज के युवाओं के सामने सबसे बड़ा दबाव खुद पर यकीन करने को लेकर है। यह जानना कि आप सबसे अलग है आपको खूबसूरत बनाता है। खुद की तुलना लोगों से करना बंद करें। उन चीजों के बारे में बात करें जो दुनिया में चल रही हैं और ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। स्वयं के लिए आवाज उठाइए क्योंकि आप ही अपने जीवन के नेतृत्वकर्ता हैं। आप ही आपकी आवाज हैं। मैंने खुद पर यकीन किया और आज में यहां खड़ी हूँ। हरनाज के उत्तर ने उन्हें औरों से अलग कर दिया और उनकी प्रतियोगिता में साक्षात्कार का यह अंश सभी जगह प्रमुखता से प्रकाशित हुआ एवं युवाओं खासकर महिलाओं में अधिक चर्चा का विषय रहा। यह सिर्फ एक आत्मविश्वास से भरी हरनाज की प्रतियोगिता के साक्षात्कार का अंश मात्र है लेकिन कल्पना कीजिए कि इतने उलझे प्रश्न का इतना सधा उत्तर देने वालीं हरनाज किस प्रकार आत्मवश्विास से भरी हैं। आज का दौर बदल चुका है महिलाएं चार दिवारी से निकलकर अपने लिए देश के लिए कुछ करना चाहती हैं। इसका परिणाम है कि आज की महिलाएं देश में प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। हर मोर्चे पर आत्मविश्वास से भरी आज की महिलाएं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। मुझे उम्मीद है कि आत्मविशवास से लवरेज देश की इस बेटी के विचार उम्मीद व आत्मविश्वास लेकर मेरे इस लेख के माध्यम से हर किसी युवा के मध्य पहुंचेगे।

देश की अर्थव्यवस्था में डेडिकेटेड फ्रेट कोरीडोर की भूमिका

विनय कुमार नामा,
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (प्रथम पुरस्कार)

ये तो शास्वत सत्य है कि किसी भी देश की चहुमुंखी उन्नति के लिए उसकी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है।

अर्थव्यवस्था के मेक्रो इकोनोमिक पेरामीटर में सबसे मुख्य है सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) जिसका मूल आधार है "व्यापार" अर्थव्यवस्था के शास्त्र अर्थशास्त्र के बारे में किसी ने सत्य ही कहा है-

अर्थव्यस्था व शास्त्र हैं, जो मानव भाग
लेले उच्चतम प्राप्तियां, करें न्यूनतम त्याग।।

अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र से संचालित होती है और उपरोक्त पंक्तियां व्यापार का मूल मंत्र है – न्यूनतम लागत पर अधिकतम मुनाफा (लाभ)

व्यापार की बिना आधुनिक यातायात के कल्पना भी नहीं की जा सकती है अत: एक ऐसा माल ढुलाई का साधन हो तो सस्ता, विश्वसनीय, सुरक्षित, कार्य दक्ष एवं व्यवस्थित हो, भारी मात्रा में माल कम से कम समय में पहुंचाऐ। उपरोक्त धारणा के आधार पर भारत सरकार ने विशेष प्रयोजन संस्था का सृजन किया और नामकरण किया "डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड" जिसे संक्षिप्त में हम डीएफसीसीआईएल कहते है। कार्यदक्षता की दृष्टि से इसे दो भागों में (i) पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर (डब्ल्यू डी सी) एवं (ii) पूर्वी डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर (ई डी सी)। संपूर्ण डी एफ सी मुंबई से कोलकाता तक हैं।

पश्चिमी डीएफसी 1504 किमी. एवं पूर्वी (ईडीएफसी) 1861 किमी की दूरी तय करेगी एवं केवल वस्तु व्यापार अर्थात माल ढुलाई के लिए ही समर्पित होगी।

डीएफसीसी अर्थव्यवस्था को बहुदिशा से प्रमाणित करेगी उनमें से कुछ निम्न है: -

1. बदलते समय के आयाम के साथ आधुनिक युग कंटेनरीकरण का युग हैं, यदि भविष्यकर्ताओं का विश्वास करें तो 2030 तक 88 % व्यापार कंटेनरों से ही होगा। पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर को दोहरा स्टेट कंटेनरों के लिए तैयार किया गया हैं जिससे ज्यादा मात्रा में कंटेनर एक साथ परिवहन किए जा सकेंगे। डीएफसी के व्यापार प्लान के अनुसार डीएफसी लगभग 167 मीट्रिक टन डब्ल्यू डीएफसी से एवं 219 मीट्रिक टन पूर्वी डीएफसी (ईडीएफसी) से 2022 में माल ढुलाई करेगी एवं इतनी ही बाजार मांग रहेगी। राष्ट्रीय याताया डेवलमेंट प्लान की बंदरगाह एवं जहाज रपट के अनुसार कंटेनर व्यापार की वृद्धि आशा से भी अधिक हैं, इसका सी.ए.जी.आर (CAGR) (कम्पाउण्ड एन्युल ग्रोथ रेट) 8.1% से बढ़कर 8.3% (2019-23) होगी, इस परिप्रेक्ष्य में डीएफसी एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

2. सस्ती, विश्वसनीय, कार्यदक्ष एंव सुरक्षित माल ढुलाई – डीएफसी की मालगाड़ी की औसत स्पीड 93 किमी./घंटा है जबकि भारतीय रेल की मालगाड़ी की औसत स्पीड 20-25 किमी./घंटा। यदि सड़क परिवहन से किराये की तुलना करें तो ये सड़क के माल ढुलाई किराया (जोकि रु. 1.33/किमी./टन हैं) से बहुत की कम रु. 0.12/किमी/टन आने की उम्मीद हैं। डीएफसी

रोल इन रोल आउट (RORO) प्रोग्राम के तहत माल को ग्राहक के दरवाजे तक पहुंचाने की योजना क्रियान्वित कर चुकी है जोकि एक मील का पत्थर साबित होगा।

3. स्वर्णिम चतुर्भुज का कार्य भार कम करना: याताया के स्वर्णिम चतुर्भुज (मुंबई-दिल्ली-कोलकाता-चेन्नई) से ही 58% मालढुलाई की जाती है इसक विकर्णों (दिल्ली-चेन्नई तथा मुंबई-कोलकाता) जिसकी लंबाई 10112 किमी. है से ही 38% माल ढुलाई होती हैं। इस चतुर्भुज में 11 खंड क्षमता से 150% ऊपर एवं 48 खंड 120-150% ऊपर (क्षमता से) भारित है जिससे उनके रख-रखाव पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। डीएफसी स्वर्णिम चतुर्भुज का न केवल 80% भार कम करेगी बल्कि कम समय में, कम लागत पर ज्यादा मात्रा में माल ढुलाई कर देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देगी एवं संरक्षा को बढायेगी।

4. नए बाजार का सृजन: डीएफसी 9 राज्यों एवं 61 जिलों से गुजर कर वहां की अर्थव्यवस्था को सुधारने में अपना प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष योगदान दे रही है। उदाहरण के लिए राजस्थान में किशनगढ़ एक छोटा सा कस्बा है, डीएफसी के आने से वहां लोजिस्टिक पार्क, कंटेनर डिपो, टेक्सटाइल पार्क जैसे व्यापारिक केंद्र बनकर किशनगढ़ वासियों की आर्थिक स्थिति को सुप्रभावित कर रहे हैं। इसी तरह से रेवाड़ी के निवासी भी समृद्ध होंगे क्योंकि वहां भी डीएफसी अपना बड़ा यार्ड स्थापित कर रही हैं।

5. अर्थव्यवस्था के प्राइमरी एवं सेकेण्डरी सेक्टर में योगदान: डीएफसी की मालगाड़ी पूर्वी क्षेत्र से कोयला, लोहा एवं इस्पात ले कर आएगी एवं लौटते वक्त पश्चिम से अनाज, खाद्य, चूना पत्थर ले कर जाएगी एवं अर्थव्यवस्था के प्राइमरी एवं सेकेण्डरी सेक्टर में अपना अभूतपूर्व योगदान देगी वो भी बहुत कम लागत पर। इसके अतिरिक्त पेट्रोलियम उत्पाद, रीटेल उत्पाद की ढुलाई भी कंटेनरों के माध्यम से समयोचित तरीके से कर व्यापार के बढ़ावे में अपना योगदान देगी।

6. कार्बन उत्सर्जन – डीएफसी संपूर्णतया विद्युतीकृत है जिससे न केवल विदेश से आयातित डीजल की बचत होगी बल्कि प्रदूषण (कार्बन उत्सर्जन) भी कम होगा जोकि वर्तमान समय की मांग है क्योंकि पेरिस समझौते के अनुसार 2030 तक विश्व को कार्बन उत्सर्जन मुक्त किया जाना है डीएफसी अपने खाते में आए कार्बन क्रेडिट को बाजार में भी बेच सकेगी एवं प्रदूषण को कम करने में एवं कमाई बढाने में उचित योगदान देगी।

अंत में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि डीएफसी देश की अर्थव्यवस्था को आंतरिक एवं आयात-निर्यात (बाहरी रूप से) सुप्रभावित करेगी एवं कम लागत पर समय पर माल ढुलाई कर अपनी उत्पत्ति को भारत के लिए वरदान साबित करेगी।

जय हिंद

डीडीयू-एसईबी सेक्शन में एलसी -37 पर बो स्ट्रिंग गर्डर लॉन्च

नर्मदा पुल का कार्य प्रगति पर

वायडक्ट 92 पर गर्डर लॉन्चिंग

ट्विन आरओबी पर असेंबली और वेल्डिंग का काम

दादरी आरएफओ में ओपन वेब गर्डर की लांचिंग

टोनस ब्रिज का काम जारी है

यमुना ब्रिज पर गर्डर
लॉन्चिंग